मदनलाल धींगडा

भारत के अमर क्रांतिकारी सेनानी

भगत सिंह	राणा भवान सिंह
चंद्रशेखर आजाद	राणा, भवान सिंह
लाला लाजपतराय	राणा भवान सिंह
रामप्रसाद बिस्मिल	राणा, भवान सिंह
वीर सावरकर	राणा, भवान सिंह
छत्रपति शिवाजी	राणा, भवान सिंह
महाराणा प्रताप	राणा, भवान सिंह
बादशाह खान	राणा, भवान सिंह
नाना साहब पेशवा	राणा, भवान सिंह

मुंशी प्रेमचन्द का साहित्य

उपन्यास	कहानी संग्रह
कर्मभूमि	मानसरोवर—आठ भाग
कायाकल्प	प्रेम तीर्थ
गबन	प्रेम पचीसी
गोदान	प्रेम प्रसून
निर्मला	कफन
प्रतिज्ञा	ग्राम्य जीवन की कहानियां
प्रेमाश्रम	नारी जीवन की कहानियां
मनोरमा	प्रेमचंद की ऐतिहासिक कहानियां
रंगभूमि	प्रेमचंद की हास्य कहानियां
रूठी रानी और प्रेमा (दो उपन्यास)	प्रेमचंद की मनोवैज्ञानिक कहानियां
वरदान	प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानियां
सेवासदन	प्रेमचंद की आदर्शवादी कहानियां
नाटक	प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां
कर्बला	
संग्राम	

मदनलाल धींगड़ा

अवधेश कुमार चतुर्वेदी

भारतीय ग्रथ निकेतन
2713 कूचा चेलान, दरिया गज
नई दिल्ली-110002

प्रकाशक भारतीय ग्रन्थ निकेतन
2713 कूचा चेलान, दरियागंज
नई दिल्ली 110002
प्रकाशन वर्ष 1990
मूल्य 35 00
मुद्रक गोयल प्रिंटर्स
शाहदरा दिल्ली 110032

MADANLAL DHINGRA
Avdhesh Kumar Chaturvedi

विषय-सूची

प्रारम्भ

हमारे प्यारे भारत देश की आजादी के लिए ना जाने कितने वीर भारतवासियो न अपन प्राणा की बाजी लगा दी थी। उनमे से कितने नाजवान विद्यार्थी थे उनका विवाह भी नही हुआ था। मच कहा जाये तो उनके जीवन के इन उत्सग के पीछे अपना कोई व्यक्तिगत लाभ नही था। सिफ भारत आजाद हो, गुलामो से मुक्ति मिले और अग्रेज सरकार का खात्मा हो यही उनका उद्देश्य था।

हमारी सरकार ने आजादी के इन दीवानो के लिए स्मारक वनवाये हैं। सडका नगरा मोहल्ला का नाम इन क्रातिकारिया के नाम पर रखे गए। गाह बगाहे लाग इस वहाने आजादी के इन दीवाना का नाम याद कर लेत ह।

इसके बावजूद वहुत स क्रातिकारी ऐसे ह जिनके बारे म इतिहास मौन है। ना उनकी कभी जयती मनाई जाती है, ना उनके नाम पर कोई ग्राम, सडक, शहर व मोहल्ले का कोई नाम रखा गया था। ऐसे क्राति कारियो के बारे मे गोरखपुर मे एक स्मारक बनाया गया है जिस पर शिलालेख लगा है उन शहीदा के नाम जिनका इतिहास मे कभी कोई जिक्र नही होगा।

इन्ही अनजान क्रातिकारियो मे अमर शहीद मदनलाल धीगडा भी एक ह।

मदनलाल धीगडा के कायकाल के दौरान भारत का उच्चकुलीन वर्ग अग्रेज अधिकारियो की ठकुर सुहाती मे अपना सर्वस्व लगा रहा था, अग्रेज सरकार के एक इशारे पर देशी रजवाडे गोरी सरकार के इशारे पर हर तरह का अत्याचार करने से नही चूक रहे थे। भारतीय जनता इस स्थिति मे बडी उदास थी। उनका कोई भी ऐसा अगुआ नही था

जो कोई ठोस रास्ता उनके लिए सुझाता या किसी राजनीतिक संघर्ष की शुरूआत करता ।

जो थोडी बहुत राजनीतिक हलचल थी भी वह सरकारी सुविधाए पाने के लिए थी । इन लोगो से किसी बडे कार्य की आशा करना भी व्यर्थ ही था । बहुत से नौजवान कुछ कर गुजरने को उत्सुक थे भी तो उनके पास बहुत अल्प साधन थे । उनको कोई सही राह दिखलाने वाला नही था । ये नौजवान देशवासियो को राहत देना चाहते थे । देश के लिए कुछ करने की और अपने प्राणो की बाजी लगाने वाले इन नौजवानो के लिए कोई सही रास्ता भी सस्ता नही था और कोई सही प्रणेता भी नही था ।

मदनलाल धीगडा उन नौजवानो मे से एक थे जिन्होने क्राति का मार्ग तलाशने का प्रयास किया । उन्होने किसी मार्ग की तलाश मे स्वय एक रास्ता न केवल खोजा बल्कि जनता के लिए नया मार्ग भी प्रशस्त किया ।

ऐसे ही उत्साही वीर मदनलाल धीगडा की यह जीवन गाथा प्रस्तुत है ।

बचपन

अमर शहीद मदनलाल धींगडा का जन्म कब और कहां हुआ था, यह आज भी खोज का विषय है। पर कुछ इतिहास लेखक यह मानते हैं कि सम्भवत सन् १८८७ के आस-पास पंजाब के किसी स्थान पर मदनलाल धींगडा का जन्म हुआ होगा। वैसे सम्भावना तो यही है कि मदनलाल धींगडा का जन्म अमृतसर शहर में ही हुआ हो क्योंकि सन् १८५५ या १८५६ तक मदनलाल धींगडा का परिवार अमृतसर में आकर बस चुका था।

पंजाब यानी पांच पवित्र नदियों वाला प्रदेश, जहां प्राचीन काल से ही महान संत शूरवीर योद्धाओं ने जन्म लिया है। लगभग ४५० वर्ष पूर्व इस्लाम के कारण जब हिन्दुत्व संकट में पड़ गया, उस समय हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिए और हिन्दुओं में जन जागृति के लिए सिख पंथ की स्थापना हुई थी।

ऐसी महान धरती और रणबांकुरी कौम में अमर शहीद मदनलाल धींगडा का जन्म हुआ था।

उस समय भारत में अंग्रेजों का राज्य था। अंग्रेजी हुकूमत ने इस तरह भारत के उच्च कुलीन परिवारों और राजे रजवाड़ों को इस कदर प्रभावित किया था कि वह अंग्रेजों को बिलकुल अपना आका समझने लगे थे।

मदनलाल धींगडा का परिवार भी इसी विचारधारा से प्रभावित था। यह परिवार पंजाब के सम्पन्न परिवारों में से एक था। उनके पिता राय साहब डा० दित्तामल पंजाब सिविल सर्विस के सदस्य थे और पंजाब के सिविल अस्पतालों में सिविल सर्जन के उच्च पद पर पहुंचे थे। डा० दित्तामल का उठना बैठना अंग्रेज उच्च अधिकारियों के साथ था।

सच कहा जाए तो डा० दित्तामल ज म से ही नही तथा कर्मों से तथा रहन-सहन से पूरे अंग्रेज थे। साहबी सूट बूट, सिगार और अंग्रेजी भाषा से अगाध प्रेम। पर डा० दित्तामल की पत्नी मतो बड़े ही धार्मिक संस्कारो को मानने वाली और विशुद्ध आचार वाली महिला थी। हमेशा पूजा भजन म लीन रहती। घर म नौकर और खानसामा की मौजूदगी म वह अपना सादा व शुद्ध शाकाहारी भोजन खुद अपने हाथो से बनाती और रसोई के अन्दर बैठकर खाती।

ऐसे धार्मिक संस्कार वाली महिला के पति डा० दित्तामल अंग्रेज-भक्त होने के साथ साथ बहुत ही धन लोलुप थे। उन्होंने बहुत से मकान अमृतसर म खरीद लिए थे जो उन्होने किराए पर उठा रखे थ। इसके अलावा खेत-खलिहान, दुकानें, गोदाम आदि जमीन जायदाद उन्होंने अपनी कमाई से खरीद डाली थीं।

ऐसे पिता के पुत्र थे मदनलाल धींगडा जिनके संस्कार अपने पिता के विचारो से बिलकुल प्रतिकूल थे। मदनलाल धींगडा बचपन से ही स्वतन्त्रता संग्राम के शहीदो से बहुत ज्यादा प्रभावित थे। मंगल पांडेय उनके जन नायक थे।

अपने बचपन म ही मदनलाल धींगडा ने अपने पिता डा० साहब दित्तामल को अंग्रेज अफसरो, जैसे डिप्टी कमिश्नरो के साथ बहुत घुल-मिलकर रहते देखा था।

एक अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर के पास एक बहुत सुन्दर अलसेसियन कुत्ता था। अंग्रेज साहब के सारे आदेश कुत्ते के लिए भी अंग्रेजी भाषा म ही होते थे, जिसे कुत्ता अच्छी तरह समझ लेता था।

एक बार वह डिप्टी कमिश्नर अपने साथ उस कुत्ते को लेकर सैर करने आया। डा० साहब दित्तामल ने उस अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर को अपने घर एक कप चाय पीने बुला लिया। चाय के दौरान ही मदनलाल धींगडा जो उस समय बहुत कम उम्र के ही थे, खेलते खेलते उस कमरे मे आ गए।

कमरे म ही कुत्ता भी बैठा हुआ था। अपने बचपने और जिज्ञासा-वश मदनलाल उस कुत्ते से हिन्दी म बोलते हुए प्यार करने लगे। कुत्ता

गु-ता रहा। उसने मदनलाल धींगडा के इस स्नेह का कोई जवाब भी नहीं दिया, जिससे मदनलाल धींगडा का बाल मन थोडा-सा क्षुब्ध हो गया।

अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने हंसते हुए मदनलाल से कहा—"यह कुत्ता ऊंची अंग्रेज जाति का है इसलिए सिर्फ अंग्रेजी भाषा ही समझता है।"

क्षुब्ध मदनलाल धींगडा के मुंह से बसाख्ता निकल पडा—"अंग्रेजी भाषा ही कुत्तों की भाषा है।

अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर के हाथ से चाय का प्याला कांप गया, उसके चेहरे का रौब और रंग उतर गया, उसने इस बात को यह सोचकर हंसी में उडा दिया कि यह नासमझ बच्चा है। कुत्ते के दुर्व्यवहार से नाराज होकर इस तरह की भाषा का इस्तेमाल कर रहा है।

वह अंग्रेज अफसर राय साहब डा० दित्तामल को व उनके परिवार को काफी अच्छी तरह जानता था। इसके अलावा डा० दित्तामल की अंग्रेज भक्ति और प्रेम को भी अच्छी तरह जानता था इसलिए उसने इस बात को एक भोले भाले बालक की बाल-बुद्धि में कही गयी बात के रूप में लिया।

पर डा० साहब दित्तामल की नजरों में मदनलाल धींगडा ने उनका बहुत बडा अपमान किया था। उसने उनके घर आए एक अंग्रेज उच्चाधिकारी को कुत्ता कहा था। उसकी भाषा को कुत्ते की भाषा कही थी।

उन्होंने उसी समय बालक मदनलाल धींगडा की बहुत बुरी तरह पिटाई की। उस अंग्रेज अफसर ने उन्हें रोका भी पर डाक्टर साहब दित्तामल पर तो क्रोध का भूत सवार था। उन्हें अपने पुत्र पर हर तरह क्रोध आ रहा था। एक तरफ तो उनके बेटे ने घर आये अतिथि का अपमान किया, अंग्रेजी भाषा को अपमानित किया, अंग्रेजी जाति के कुत्ते का अपमान किया। वह उच्च कुलीन अंग्रेज अफसर मन में क्या सोचेगा कि ऊपर से अंग्रेज भक्त दिखने वाला यह अफसर क्या दिल से सरकार विरोधी था। यही सब सोच सोचकर डा० दित्तामल, बालक मदनलाल को पीटते रहे थे।

अग्रज अफसर के जाने के बाद पिता डा० दित्तामल ने मा मना को आदेश दिया कि आज दिन भर व रात को मदनलाल को भोजन ना दिया जाए। मा मता न उस समय कहा तो कुछ नहीं पर वह मन ही मन अपन विधर्मी पति से चिढती थीं। उस समय अपने पुत्र का एक सडे स कुत्ते के लिए पीटा जाना उन्ह जरा भी अच्छा नहीं लगा।

अपा बचपन की इस छोटी सी घटना ने मदनलाल धीगडा क मन मे अंग्रेजो के प्रति नफरत की आग भर दी थी। उनके पिता डा० दित्तामल भी उनको सारी जिदगी एक स्नेही पिता के रूप म नहीं दखते रहे।

मदनलाल धीगडा के परिवार म उनसे पाच बडे और एक छाटा भाई व बहन भी थे। धीगडा जाति पजाब की प्रतिष्ठित जाति क्षत्रियो की प्रमुख और प्रतिष्ठित जाति थी।

अपने बचपन मे हा अमर शहीद मदनलाल धीगडा जिज्ञासु स्वभाव, सवदनशील मन और अत्यन्त परिष्कृत रुचिया के थे। उनका सोचने का ढग पूरे परिवार, यार दास्ता से बिलकुल अलग था।

इस तरह क सदगुणो रुचि और प्रवृतिया ने उन्ह अमर शहीद बनने का प्रेरणा दी।

स्कूल में

मदनलाल धींगडा का पढाई लिखाई के लिए अमृतसर के एक मिशन स्कूल म भरती कराया गया, जहा उनके कई भाई पहले पढ चुके थे और वाकी पढ रहे थे।

इस मिशन स्कूल का वातावरण भी पूरी तरह ईसाई धम पर आधारित था। मदनलाल धींगडा वडी कुशाग्र बुद्धि के थ। वह अपने अध्यापक से तरह-तरह के सवाल पूछते थे। उनकी रुचि अपने स्कूल जीवन मे ही विज्ञान विषय की ओर थी। इस कारण लगभग सारे सवाल वह विज्ञान को लेकर ही करते। कई वार ऐसी स्थिति भी आ जाती कि उनके प्रश्नो का जवाब उनके अध्यापक के पास भी नही होता था। अध्यापक के पास सिफ एक ही रास्ता होता कि मदनलाल का डाट-कर चुप करा दें।

अमर शहीद मदनलाल धींगडा के स्कूल म अक्सर अंग्रेज अफसर स्कूल का निरीक्षण करने आ जात। जिस पर तरह-तरह की तयारिया हाती। यह अंग्रेज अफसर सूट बूट से लस हाकर आते। सारे बच्चा का पक्तिबद्ध खडे होकर इन तथाकथित साहवा के सामने तरह-तरह की कवायदे करनी पडती तथा तरह-तरह के गीत सुनाने पडते, जिनम ईसा मसीह की प्राथनाए होती या ईसाई धर्म की विशेषताओ का वणन करना पडता।

इसके वावजूद मदनलाल धींगडा देखते कि साहव चुरूट सुलगाए धुयें के वादल बनाते रहते। बच्चे थककर चूर हो जाते तब भी इन साहवा का मुह जरा भी सीधा नही हाता, भृकुटि चढी रहती।

मिशन स्कूल के अध्यापक, अध्यापिकायें इन स्कूल निरीक्षका के

मदनलाल धीगडा का मन यह सब देखकर खट्टा होने लगता। उनका मन होता इन साहबों का चुरट छीनकर बुझा दे।

जबकि मदनलाल धीगडा के बडे भाई, साहबों के सामने कवायद कर या गाने सुनाकर बहुत प्रसन्न होते।

उनसे ज्यादा प्रसन्न डा० साहब दित्तामल होते। उनके बच्चे इतने चुस्त दुरुस्त लगते है जिनकी कारगुजारियो से उनके अंग्रेज अध्यापक व अध्यापिकायें तो प्रसन्न होते ही होते, स्कूल के अंग्रेज उच्चाधिकारी भी प्रसन्न होते।

एसे ही किसी स्कूल इंस्पेक्टर ने एक दिन दालान मदनलाल धीगडा को एक फाईल बोर्ड पकडाते हुए उसे अपनी मोटर कार में रख आने का आदेश दिया। मदनलाल धीगडा ने उस फाईल बोर्ड को, उस इंस्पेक्टर को ही सौपते हुए कहा 'श्रीमान मैं इस स्कूल का विद्यार्थी हू आपका अर्दली नही।' मदनलाल धीगडा के इस स्पष्ट जवाब से उस इंस्पेक्टर आफ स्कूल का मुह उतर गया। जहा सारे बच्चे इस तरह के इंस्पेक्टरो की सेवा का दौडकर करना अपना सौभाग्य मानते वहा मदन लाल का यह मुहफट जवाब उनके अध्यापको के लिए एक खुली चेतावनी थी।

इसके बाद वही हुआ जिसका डर था। स्कूल के मुख्य अध्यापक ने डा० दित्तामल से मदनलाल धीगडा की यह शिकायत कर दी।

डा० साहब दित्तामल, अपने पुत्र मदनलाल की इस हरकत से बिलकुल ही आपे से बाहर हो गए। वह मदनलाल की कसकर पिटाई करना चाहते थे पर हमेशा की तरह मनो देवी ने अपने पुत्र का बचाव कर लिया।

डा० दित्तामल मन ही मन खून के घूट पीते रहे। मदनलाल की पहली हरकत से ही उन्हे बहुत नाराजगी हुई थी। पर बाद मे उन्होने भी सोचा जो हुआ वह मदनलाल का बचपना था। पर अबकी बार की हरकत से उनकी समझ मे यह बात अच्छी तरह आ गयी कि उनके घर मे एक अंग्रेज सरकार का दुश्मन जन्म ले चुका है।

वह अब मदनलाल धीगडा पर कडी दृष्टि रखने लगे। तब तक

नलाल धींगडा के बडे भाई डाक्टर और वकील बन गए थे और वह
ना सारा समय अग्रेज अफसरो की चापलूसी मे गुजारने लगे।
ो भाई सारे समय अग्रेजी सरकार को किसी तरह खुश करने की
ना बनाने मे निकालते रहते।

इन दोनो बडे भाइयो ने सरकार को खुश करने के लिए एक स्वास्थ्य
बधी पत्रिका निकाली। जिसका नाम 'मिंटो हेल्थ पेम्पफलेट' था।
ो इनके एक रिश्तेदार पटियाला रियासत मे मन्त्री बन गये। पटियाला
ासत तब अग्रेज परस्त रियासत थी। इस कारण इस रियासत मे
ोपद पाना बहुत ही इज्जत की बात समझी जाती थी। दोनो बडे
ई अपने इन दूर के रिश्तेदार के आगे पीछे डोलते रहते।

डा० दित्तामल ने कुछ दिनो के लिए मदनलाल धींगडा को अपने
रिश्तेदार के पास उनके ठाट बाट देखने भेज दिया ताकि मदनलाल
गडा शायद उनके ठाट-बाट व रौब दाब देखकर अग्रेज रियासत के
त बन जायें।

पर मदनलाल धींगडा तो किसी अन्य मिट्टी के बने हुए थे। उन्हें
तो पटियाला रियासत के अग्रेज परस्त राजा भूपेन्द्र सिंह पसद आए
र ना ही उनके अपने वह रिश्तेदार जो उस रियासत के मत्री थे।

राजा भूपेन्द्र सिंह अग्रेजी ठाट-बाट से लस और अग्रेजी मदिरा
र महिला के रस मे डूबे रहते। दिन भर क्रिकेट खेलते, शाम को
नेस, पोलो और गोल्फ मे समय गुजारते।

रियासत का कामकाज भ्रष्ट मत्रियो के हाथ मे था जो अपना घर
रने की दिशा मे सोचते थे। ऐसे राज्य मे गरीब प्रजा की हालत क्या
सकती थी, इसकी कल्पना करना कोई कठिन काय नही है।

प्रजा के ऊपर गरीब मार पड रही थी। उसे राजा की लतसनिया
सहनी ही पड रही थी। अग्रेज हुक्मरान और रियासत के अफसर
स मौके का फायदा उठाकर प्रजा पर तरह-तरह के अन्याय कर रहे थे।

प्रजा की इस तरह की दशा देख मदनलाल धींगडा का सवेदनशील
न और अधिक दुःखी हो गया। अग्रेज जाति, अग्रेज सरकार के प्रति
नका मन घृणा व आक्रोश से भर गया था।

वह अपन रिश्तेदार के ठाट बाट दखने आए थे। पर यह ठाट-बाट कितने खोखले थे। इन ठाट बाट के पीछे कितने गरीबो की आह कितने मासूमो की चीत्कारें और कितनी विधवाओ और अनाथो के आसू भर होते हैं इस बात का एहसास होने लगा था। उन्हें अपने इस प्रतिष्ठित रिश्तदार स रिश्ता जाडकर भी शम महसूस होने लगी।

उनका मन पटियाला रियासत म ज्यादा न लगा और वह अपने घर अमृतसर लौट आए जहा जाकर उन्हे असीम शाति मिली सुख मिला।

पवित्र सरोवर का स्नान और स्वण मदिर से आता गुरुवाणी का पाठ, कभी जप जी साहब के अमृत बोल उन्हे इस कच्ची उम्र मे असीम शाति देत।

कालेज मे शिक्षा

स्कूल की शिक्षा के बाद मदनलाल धीगडा, अमृतसर क गवनमेंट कालेज मे आगे की शिक्षा के लिए भरती हुये। उनके सभी बड भाई और पिता दित्तामल कुछ उनसे ज्यादा प्रसन्न नही थे।

मदनलाल धीगडा बाल्य अवस्था से ही उन्ह अग्रेजा के सख्त खिलाफ दिखलाई देने लग। उनके पास मगल पाडेय का एक चित्र था, जिसे वह हमेशा पूजते रहते। रानी लक्ष्मीबाई-की तो वह दुर्गा की भाति पूजा करते, एकटक दोना चित्रो को देखते रहते।

पिता डा० दित्तामल उनके मन म इन स्वतत्रता सेनानिया की तस्वीर निकालना चाहते थे। वह यह भी चाहते थे कि उनका पुत्र मदनलाल धीगडा उनकी ही तरह दुनियादार बने, अपने बड भाईया की तरह पढ लिखकर बडा डाक्टर, वकील या इजीनियर बने ताकि अच्छे सरकारी पद पर पहुचे।

इसी कारण उन्होंने मदनलाल धीगडा को पटियाला रियासत मे रहने को भेजा था ताकि वहा की रियासत के अपने रिश्तदार मत्री क शानदार ठाठ बाट देखकर मदनलाल धीगडा प्रभावित हागे और अग्रेजा के कृपा पात्र बनने की कोशिश करेंगे।

पर मदनलाल धीगडा तो किसी और ही मिट्टी के बने हुय थे। वह तो आजादी के दीवाना के भक्त थे और खुद ब खुद उनके मन मे अग्रेजा के प्रति सख्त नफरत हो गई थी।

अतमृसर राजकीय कालेज मे शिक्षा के दौरान उनका साथ ऐसे छात्रो व अध्यापका से हुआ जो मन ही मन क्रातिकारी आदालन के समथक थे। गवनमेंट कालेज का वातावरण, मिशन स्कूल जसा सकीण नही था। वहा हर तरह के छात्र पढते थे। मदनलाल खेलने और पढने

दाना म ही तेज थे । वसे वे फुर्तीले, निडर और खुशमिजाज । हमेशा खुद हसते रहते और दूसरो को भी खूब हसात रहत । जितना दूसरा का मजाक उडात उतने ही खुले मन से अपनी हसी उडात ।

अपनी इस प्रवति के कारण अपने पूरे परिवार और कभी-कभी मित्रो की नजरो मे उपेक्षा के पात्र बन जात थे । उन्हे गरजिम्मेदार समझा जाता था । अपनी इस आदत के कारण एक बार सावरकर के हाथो उन्हे बहुत ज्यादा अपमानित होना पडा । बाद मे सावरकर को इस गल्ती का अहसास हुआ और उन्होने मदनलाल धींगडा से अपने इस दुर्व्यवहार की क्षमा मागी ।

घर म उनका स्नेहपूर्ण सबध मात्र अपनी मा से ही था । जो उन्हे बहुत स्नेह करती थी । जिसके कारण डा० दितामल अप्रसन्न रहते थे ।

कुछ समय बाद मदनलाल के सबसे बडे भाई जो कि अग्रेज जाति को बिलकुल भगवान की तरह समझते थे और पूजत थे, डाक्टरी पढने इग्लैंड चले गये। जहा पढाई समाप्त कर बडे भाई को इग्लैड का जावन इतना भाया कि उन्होने वहीं एक काउटी मे प्रेक्टिस खरीद ली और अपना विवाह कर लिया । विवाह भी अग्रेज महिला से ही किया था ।

पिता को पुत्र के इग्लड मे बस जाने का मन ही मन दु ख भी था पर उपरी तौर पर गव भी था कि उनका एक पुत्र अग्रेज लडकी का ब्याह इग्लैड में ही बस गया था । बाकि के भी सभी भाई अच्छ अच्छे पदो की ओर बढ रहे थे । सिवाय मदनलाल के जो पढने म तज होते हुए भी अग्रेज जाति व सरकार से ज्यादा प्रभावित नही थ ।

अमृतसर गवनमेंट कालेज म पढने के दौरान ही मदनलाल को सावरकर के सबध म पता चला । वह उनसे मिलने को बहुत उत्सुक थे । पर सावरकर अपने सगठन अभिनव भारत के साथ सुदूर नासिक म सक्रिय थे इसलिए असभव ही था । बाद म इग्लैंड जाकर ही मदनलाल धींगडा सावरकर स मिलने म सक्षम हो पाये । अपने अमत-सर गवनमेंट कालेज की शिक्षा के दौरान मदनलाल धींगडा का सपर्क भले ही सावरकर जसे क्रातिकारियो स न हो सका हो पर अग्रेजी

सल्तनत की ओर उनका रुख उनके पिता की इच्छानुसार भक्ति की ओर ना बढ सका।

लिहाजा पिता ने चिढकर उनकी पढाई गवनमेंट कालेज अमृतसर से छुडा दी। डा० साहब दित्तामल ने अबकी बार उन्हें अमृतसर से दूर लाहौर के गवनमेंट कालेज मे भेजा ताकि मदनलाल का शक्षिक वातावरण बदल जाये। उनके अग्रेज सरकार विरोधी मित्र उनसे दूर हो जायें। पर क्या कभी वातावरण बदलते ही चिडिया चहचहाना छोड देती है। चातक ने क्या बरसात की बूद के सिवाय किसी प्रकार का जल ग्रहण किया है या हस ने मानी चुगना छोडकर बिस्कुट खाकर अपना पेट भरा है।

सच्चाई यह है कि इसान कभी वातावरण के अनुकूल नही होता बल्कि इसान वातावरण का अपने अनुकूल बनाने की क्षमता रखता है। जो खुद जमा होता है वह अपने लिए वैसे ही साथी ढूढ लेता है। शराबी को शराबी मिल जाता है और जुआरी को बिना ढूढे जुआरी मिल जाता है। साधू को हमेशा बिना ढूढे साधू मिल जाता है।

इसी प्रकार डा० दित्तामल के लाख प्रयत्न करने पर भी मदनलाल अग्रेज भक्त नही बन सके। उनको अमृतसर से भेजे जाने के बावजूद भी उन्हे वहाँ मित्र मिल गये जो अग्रेजो को अपना दुश्मन समझते थे। लाहौर के खुशनुमा वातावरण म मदनलाल का मन ना वेश्याओ की तरफ बदला ना आमोद प्रमोदो की ओर गया।

लाहौर मे कई उदारवादी विचारधारा के अग्रेज भी थे जो हिन्दुस्तानियो को किसी तरह का गुलाम नही समझते थे। बल्कि पढे लिखे हिन्दुस्तानियो को अपने बराबर के स्तर का ही समझते थे।

इस तरह के एक उदार सज्जन ओ ब्राउन नामक एक रिटायर फौजी अफसर थे, जिनके यहा कई विद्यार्थी आते-जाते थे। मदनलाल भी ओ ब्राउन के यहा आने-जाने लगे। एक दिन बातो ही बातो म आ ब्राउन ने न जाने मदनलाल म क्या देखा उन्होने सब विद्यार्थियो को तो विदा कर दिया पर मदनलाल धीगडा को भोजन करने के लिए रोक लिया।

भाजनापरात कॉफी पीते समय ओ ब्राउन ने मदनलाल को कूटनीति की लडाई लडने की शिक्षा दी। उसने कहा, पढ लिख कर अंग्रेज के बराबर पहले ज्ञान और बुद्धि-बल हासिल करो। फिर आक्रमण करो। बिना शिक्षा के सिद्धांतो की लडाई वसी ही है जस बिना हथियारो के युद्ध-भूमि में जाना। मदनलाल धींगडा की समझ म यह बात आ गयी। बजाय इधर-उधर समय नष्ट करने के मन लगाकर पढाई करने लगे।

जिसकी खबर उनके पिता तक जा पहुंची और पिता मन ही मन सतुष्ट हुए। उन्होंने अपने आप अपनी पीठ ठोकी जो उन्होंने इतना दूरदर्शी निणय लिया। पुत्र का मन पढाई-लिखाई की ओर लग गया। अब कालेज की पढाई समाप्त होते ही उच्च शिक्षा के लिए पुत्र को इंग्लड भेजेंगे यही सुखद सपना डा० साहब दित्तामल देख रहे थे।

विवाह

ओ ब्राउन का लाहौर के अंग्रेजी समाज में कोई सम्मानजनक स्थान नहीं था। इसका कारण उनके यहा हमेशा लगा नौजवान हिंदुस्तानी छात्रो का मेला था। ओ ब्राउन की पत्नी उनसे उम्र मे काफी कम थी। वह बड़ हसमुख स्वभाव की, गीत, सगीत, नृत्य की रसिया थी। कालेज मे उनका काफी आना जाना था जिस कारण नौजवान लडके लडकिया उनके घर मे घुसे रहते थे। मिसेज ओ ब्राउन के यहा हिंदुस्तानी छात्रो का यह जमावडा, अंग्रेज अफसरो को फूटी आख नही सुहाता था।

दूसरे ओ ब्राउन कुछ उदारवादी विचारधारा का समर्थक था। वह इस कारण अंग्रेज समाज से बहिष्कृत-सा था। कुछ अपने उदारवादी विचारो के कारण भी वह हिंदुस्तानी नौजवानो मे सर्वप्रिय था।

मदनलाल धींगडा का ओ ब्राउन के यहा आना-जाना उनके माता-पिता से भी छिपा नही रहा। डा० साहब दित्तामल पहले तो अपनी इस सफलता पर बहुत खुश हुए जो कि उन्होने मदनलाल धींगडा को अमृतसर से लाहौर भेजकर पाई थी। जबकि अमृतसर म मदनलाल धींगडा अंग्रेजो के सख्त दुश्मन थे। वह किसी अंग्रेज को मुह लगाना भी पसद नही करते थे। उनके आराध्य देव तो मगल पाडेय व लक्ष्मीबाई जसे आजादी के दीवाने थे।

पर डा० साहब दित्तामल की प्रसन्नता ज्यादा दिन चल नही सकी। कुछ दिन बाद ही उन्ह मदनलाल धींगडा के इस अंग्रेज मित्र ओ ब्राउन व उसकी पत्नी के बारे मे पता लगा, तब उनके सारे उत्साह पर पानी फिर गया।

अब पछताने से क्या फायदा, अपनी पत्नी मता की सलाह पर डा० साहब दित्तामल ने तुरन्त ही मदनलाल धींगडा को वापिस अमृतसर

बुलाने का फैसला किया। पर संदेश पहुंचने के बावजूद मदनलाल धींगडा वापिस अमृतसर नही पहुचे। उन्होंने अपनी पढाई लाहौर मे ही जारी रखी जिससे क्रुद्ध होकर डाक्टर दित्तामल न उनका रुपये पैसे भेजना बन्द कर दिया, जिससे मदनलाल धींगडा अपनी पढाई लिखाई छोड़कर वापिस अमृतसर आ जायें।

ओ ब्राउन और उनके मित्रों न उनकी भरसक सहायता की, पर मदनलाल धींगडा ज्यादा दिन अपनी पढ़ाई जारी नही रख पाए।

कुछ समय तक मदनलाल धींगडा अपने सगे चाचा के अधीन परिवहन सेवा विभाग मे काम करते रहे। इस तथाकथित नौकरी का उद्देश्य भी किसी तरह अपनी पढाई लिखाई जारी रखना ही था।

जसा कि प्राय रिश्तदारी म होता है उनके चाचा ने भी शुरू के दिनो म मदनलाल धींगडा का पुत्रवत सम्मान दिया। नौकरी भी चलती रही और आगे की पढाई लिखाई भी चलती रही। पर धीरे-धीरे चाचा व चाची के व्यवहार म रूखापन आता गया। आपसी सबधो की मधुरता मे भी बुरी तरह कीडे पड गए। आपस म राज राज खिच-खिच होन लगी। स्वाभिमानी अमर शहीद धींगडा को यह महसूस हुआ कि उनके चाचा चाची म तनाव का कारण उनका वहा रहना है। वह लोग भी अब सोचने लग थे कि जिसके मा-बाप उसे नही चाहते उसके चाचा व चाची किस कारण ऐसी सतान को अपने पुत्रवत् पाले।

अपने आप ही मदनलाल धींगडा न चाचा व चाची के घर को छोड दिया। वह अपन कई परिचितो के पास नौकरी के लिए गए पर किसी न उन्हे सहयोग नही दिया। हर व्यक्ति का एसा महसूस होना है कि कही उनके पिता उनसे नाराज ना हो जायें। कुछ उनकी बात का मजाक उडाते कि इतने बड आदमी का पुत्र नौकरी करेगा ।

तब ही किसी दोस्त न मदनलाल को सूचित किया कि वह पजाब सरकार के किसी भी विभाग म नौकरी क्यो नही कर लेत। आखिर सरकारी सेवा म बुराई क्या है। लिहाजा यही सब सोचकर मदनलाल ने पजाब सरकार के अधीन कश्मीर सेटिलमेंट विभाग मे नौकरी कर ली। विभाग अभी नया-नया खुला था। वहा पढ़े लिखे आदमियो की

बहुत आवश्यकता थी। मदनलाल को वहा का काम अच्छा लगा। सरकारी नौकरी थी, किसी प्रकार का अनावश्यक दबाव नहीं था। किसी भी प्रकार की मानसिक घुटन नही थी। मदनलाल मन लगाकर अपना काय करते व घर मे आराम करते। उनकी इच्छा थी कि जल्दी-से-जल्दो ज्यादा से ज्यादा पसे बचाकर इग्लैंड जा सकें, जहा आगे की पढाई कर वह अपने भाईयो व पिता की बराबरी कर सके। इसके अलावा वह अपने पिता डाक्टर दित्तामल को यह भी बताना चाहत थे कि उनकी आर्थिक सहायता के बिना भी कुछ करके दिखला सकते है। वह इतने कमजोर नही ह जितना उनके पिता व भाई उन्हे समझत ह।

पर कुछ दिन वाद ही मदनलाल ने देखा सरकारी विभाग मे वडो पाल है। कोई भी काम मानवीयता या सही तथ्यो के आधार पर नही होता है। बल्कि सभी सरकारी काम सरकारी कारिंदो की दस्तूरी के आधार पर होत हैं।

मदनलाल ने यह सोचा शायद यह सारे गलत काम उनके वरिष्ठ अधिकारियो के अनजाने सम्पन्न हो रहे है, लिहाजा उन्होन अपने उच्च अधिकारियो के पास सारा हाल पहुचाया। पर उनके अधिकारी न उन्ह अपने काम से काम रखने की सलाह दी।

मदनलाल के मन मे यह बात खटक गयी। वह समझत थे कि भ्रष्टाचार नीचे ही फला है। उनके वरिष्ठ अधिकारी बहुत ईमानदार है। उन्ह इस सम्बन्ध म कोई जानकारी नही है पर अब उनके सामने सारी असलियत आ गयी थी।

कुछ दिन वाद ही मदनलाल धींगडा ने यह नौकरी भी छोड दी। महीना घूमते फिरते रास्ते-दर-रास्ते भटकते मदनलाल बम्बई पहुचे, जहा एक पानी के जहाज पर मल्लाह हो गए।

काफी समय उन्होने पानी के जहाज पर मल्लाह का काय किया। अपने इस मल्लाही काम मे उन्हें बहुत मजा आने लगा। आस-पास के बदरगाहो की सस्कृति सभ्यता का देखने का मदनलाल धींगडा का बहुत अच्छा मौका लगा। हर स्थान पर अग्रेज सरकार के खिलाफ विद्रोह की भावना फैल रही थी। किसी किसी हिस्से मे तो बगावत की

आग इस बुरी तरह फैली थी कि सरकार ने इन इलाकों को विद्रोही करार दे दिया था। वहां सभी जन सुविधायें बन्द कर दी गयी थी।

मदनलाल धींगडा को सरकार की यह हरकत बहुत नागवार गुजरी। पर इस विषय में वह क्या कर सकते थे। कुछ दिन बाद अचानक ही उनके पास अमृतसर से यह खबर आई कि उनकी मां मता बहुत बीमार है।

काफी समय से मदनलाल धींगडा का अपने घर परिवार से कोई सपर्क ही नही था। मां से मदनलाल का बहुत प्रेम था। उनके स्वास्थ्य की चिन्ता उन्हे बराबर लगी रहती थी। यह समाचार सुनकर उनका दिल बैठ गया। पैरों तले से जमीन खिसक गयी।

उन्होंने उसी रात अपना थोडा बहुत सामान इकट्ठा किया। जहाज के मालिक को अपनी मां की बीमारी की खबर देकर उन्होंने छुट्टी माग ली। वह पहली ही गाडी से अमृतसर रवाना हो गए। रास्ते भर अपनी मां की दुश्चिंता में वह हडबडाये से रहे। अमृतसर ज्यों-ज्यों नजदीक आता जा रहा था उनका मन हवा की तरह उडने लगता। कहीं मां इस दुनिया से ही ना चला गयी हो। मदनलाल धींगडा प्रार्थना कर रहे थे कि हे भगवान मां को स्वस्थ रखें।

कांपते हुए मन के साथ मदनलाल अपने घर पहुंचे तो उनकी मां मता घर के दरवाजे पर खडीहुई थी। मदन मां को स्वस्थ देखकर बहुत खुश हुए। मां भी अपने पुत्र मदन को इतने दिन बाद देखकर इतनी खुश हुई कि उसका वर्णन ही नही किया जा सकता था।

पिता व भाई भी इतने दिन बाद पुत्र को आया देखकर बहुत खुश नही थे तो बहुत दुखी भी नही थे। चंद दिन बाद ही मदनलाल को यह समाचार मिला कि माता पिता ने उनका विवाह तय कर दिया है। शायद हर माता पिता की तरह उनके माता पिता भी यही सोचने थे कि शादी के बाद मदनलाल धींगडा के जीवन में कुछ परिवर्तन आए। वह अपनी पत्नी के प्रभाव में शायद, सीधी सादी पारिवारिक जिंदगी जीने लगे। वह भी अपने घर के अन्य सदस्यों की तरह दुनियादार बन जाए।

माता पिता की इच्छा के अनुरूप चलते हुए आखिर मदनलाल थोडी बहुत ना नुकुर के बाद विवाह के लिए तयार हो गए।

मदनलाल धींगडा का विवाह बडी शान के साथ अमृतसर म सपन्न हो गया। उनकी पत्नी बडी ही सुदर व शालीन विनम्र और सेवाभावी थी। विवाह के बाद घर के लोग मदनलाल धींगडा की पत्नी से बहुत सतुष्ट हो गए थे।

उन दिनों अमृतसर जो कि बहुत शातिप्रिय स्थान माना जाता था, राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बनने लगा था। क्रान्तिकारियों की गतिविधियाँ अमृतसर में भी घर करने लगी थीं।

पजाब उस समय घोर अशाति के दौर से गुजर रहा था। किसानो के बीच भी विद्रोह फैल रहा था। सरकार ने किसानो के ऊपर अतिरिक्त टेक्स लगा दिए थे। जमीन, पानी पर टेक्स बढा दिए थे। अमृतसर और सारे पजाब के किसान इस तरह के टेक्सों के खिलाफ हडताल की तैयारी कर रहे थे। अमृतसर जो शाति का केन्द्र बना हुआ था इस समय विद्रोह की आग मे बुरी तरह सुलग रहा था।

एक देश प्रेमी और मानवतावादी के रूप में मदनलाल धींगडा को यह स्थिति बहुत खराब महसूस हो रही थी।

इग्लैंड यात्रा

विवाह के बाद मदनलाल धींगडा की पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ गयी। अपने खुद के खर्चे बढ गये, साथ ही पत्नि के व्यक्तिगत खर्चे भी बढ गय। मदनलाल के लिए यह आवश्यक था कि अब कुछ काम करें।

बचपन से ही उनका अपना सपना था कि वह पढने के लिए इग्लड जायें। उनके पिता भी उन्हे इग्लैंड भेजना चाहते थे पर उनकी अपनी कुछ अलग किस्म की शर्तें थी। सबसे बडी शर्त यही थी कि मदनलाल अपना मन पढने लिखने म लगायें और अग्रेज शासको से बना कर रखें।

इन सब बातो से मदनलाल अपने पिता के सख्त खिलाफ थे। वह इग्लैंड जाकर देश की उन्नति के लिए काम करना चाहते थे। अग्रेज जाति के अत्याचारी कदमो से उन्हे सख्त नफरत थी। उनसे कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नही थी।

फिर भी पिता के विचारो से क्रुद्ध होकर उन्होने अपने पिता की कोई आर्थिक सहायता लेना पसद नहीं किया था। काश्मीर की नौकरी वह पहले करके छोड चुके थे। शिमला और कालका टागा मार्ग मे उन्होने जा कर काम करना शुरु कर दिया जिससे वह अपना तथा अपनी पत्नि का खर्चा पूरा कर सकें।

उन दिनो पजाब प्रात म जो कश्मीर तक फैला हुआ था राजनीतिक आदोलन बडी ही तेजी स फैल रहा था। वस तो सारे भारतवर्ष म काग्रेस असहयोग आदोलन चला रही थी। उधर हमारे देश के तीन शेर, बाल गगाधर तिलक, विपिन चन्द्रपाल और लाला लाजपतराय सारे देश म स्वतत्रता आदोलन चला रहे थे।

लाला लाजपत राय जिन्हे आदरपूर्वक पजाब केसरी की उपाधि मे विभूषित किया गया। मदनलाल, लाला लाजपत राय से बहुत ज्यादा प्रभावित थे। वह अमृतसर मे कई बार लालाजी से मिले व उनसे मार्ग-दर्शन चाहा। लालाजी ने जो मदनलाल धींगडा से २५ वर्ष बडे थे और पुत्रवत स्नेह रखते थे। वे पहले हमेशा अपनी पढाई पूरी करने का आदेश देते थे।

मदनलाल धींगडा ने लालाजी की सलाह पर अपनी पढाई जारी रखी। लालाजी ने मदनलाल को यह भी बतलाया की स्वतत्रता कोई भीख या मागने से मिलने वाली वस्तु नहीं है। इसके लिए कडा सघर्ष करना पडता है। इस स्वतत्रता प्राप्ति के लिए देश-विदेश से सपर्क भी आवश्यक है। लालाजी ने मदनलाल धींगडा से विदेश मे सपर्क बनाये रखने की सलाह दी।

उन्होंने स्वय भी विदेशो मे चल रहे स्वाधीनता आदोलन व मजदूर आदोलन मे सपर्क बनाये रखा व उनके साथ पूरा तालमेल बनाये रखा, जिससे सारे विश्व का जनमत भारत के स्वतत्रता आदोलन के साथ हो गया। सारे विश्व की सदभावनाए भारत की स्वतत्रता के साथ जुड गयी।

मदनलाल धींगडा का पत्र व्यवहार विनायक सावरकर से भी चलता रहता था। विनायक सावरकर उन दिनो नासिक मे रहते थे। उनकी किशोर अवस्था मे सन १८८३ मे प्लेग की बीमारी फैली थी। उस साल ही रानी विक्टोरिया के राज्यारोहण की तैयारी चल रही थी। यह राज्यारोहण एक स्वर्णोत्सव के रूप मे मनाया जा रहा था। सारे भारतवर्ष मे बडी खुशिया मनाई जा रही थी व बडे ही वैभव के साथ मनाई जा रही थी। एक ओर सारे महाराष्ट्र मे प्लेग की बीमारी बडे ही भयकर रूप मे फैली हुई थी। लोग मक्खी, मच्छरो की तरह मर रहे थे। जहा देखो वहीं मृत्यु का ताडव नृत्य दिखलाई पड रहा था। ऐसी विकट स्थिति मे महाराष्ट्र की उपेक्षा कर खुशिया मनाना जले मे नमक छिडकना था।

सत्ताधिकारियो यानि अग्रेजो की जबरदस्ती उकसाने वाली इन

हरकत के कारण, पूना के दो नौजवान चाफेकर बंधुओं ने एक अंग्रेज उच्चाधिकारी को मौत के घाट उतार दिया। अंग्रेज सरकार ने इन दोनों भाइयों को फांसी की सजा दी। चाफेकर बंधुओं के इस अद्भुत साहस ने सारे देश के युवा समाज को बहुत ज्यादा प्रभावित किया।

विनायक सावरकर ने चाफेकर बंधुओं के बलिदान से प्रभावित हो कर एक लम्बी कविता लिखी जिसका अंतिम अंश इस प्रकार है—

'अपने प्रारंभ किया कार्य बीच में ही बंद होगा ऐसी शंका मत रखो।

उसे आगे चलाने के लिए हम हैं आप निश्चिंत रहें।'

केवल कविता लिख कर ही विनायक सावरकर खामोश नहीं बैठे। उन्होंने अपनी कुल देवी अष्ट भुजा दुर्गामाता के समक्ष प्रतिज्ञा की कि वह हमेशा देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सशस्त्र क्रांति का ध्वज फहरा कर और प्राणों की बाजी लगाकर संघर्ष करेंगे।

अपनी स्कूल की शिक्षा के दौरान विनायक सावरकर ने मित्र मेला नामक संस्था को जन्म दिया। इस संस्था के अंतर्गत व्यायाम-शाला चलाना सार्वजनिक गणेशोत्सव व शिवाजी जयंती का आयोजन करते। इन आयोजनों में देशभक्ति के गीत गाये जाते। शिवाजी, तात्या जी, वासुदेव बलवंत फड़के आदि के जीवन चरित्र विनायक बड़े मार्मिक स्वर में बतलाते। उस समय किशोर विद्यार्थियों में स्वाभिमान जगाने का स्फूर्ति केंद्र सावरकर की संस्था मित्र मेला थी।

सन् १८९९ का साल सावरकर के लिए दुर्भाग्य का साल रहा। उनके पिता का अचानक स्वर्गवास हो गया। परिवार का सारा दायित्व उनके बड़े भाई गणेश पर आ गया। चंद दिन बाद गणेश व विनायक अपनी बहन के साथ पतक गांव लगूर को छोड़कर नासिक आ गये।

कुछ समय बाद गणेश का विवाह यशोदा नामक कन्या से हो गया। गणेश तथा यशोदा ने विनायक, नारायण व मैना का लालन-पालन पुत्र वत किया। विनायक ने भी यशोदा को सदा मां के रूप में ही देखा।

गांव की पढाई समाप्त कर, विनायक पूना के फर्गुसन कालेज में शिक्षा प्राप्त करने आये। उसी दौरान भाईसाहब चिपलूणकर की पुत्री

यमुना के साथ विनायक का विवाह संपन्न हो गया। विनायक ने फर्गुसन महाविद्यालय मे भी अपनी संस्था मित्र मेला को आगे बढाने का निश्चय किया। सबसे पहले उन्होंने महाविद्यालय के वसति गृह के भोजन कक्ष मे वीर शिवाजी का बडा-सा चित्र टांगा। जहां प्रतिदिन शिवाजी का स्तवन, विजय गढ, सिंह गढ की यात्रा, शिवाजी स्मरण होता।

गरमियो की छुट्टी मे नासिक में सावरकर के मित्रो का सम्मिलन हुआ। गणेश तथा विनायक ने अपने मित्रों के साथ मिलकर देश की स्वतंत्रता के लिए कई योजनायें बनाई, कई तरह का हिसाब लगाकर खुद के रक्त से आपस में एक दूसरे के माथे पर तिलक किये। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सशस्त्र क्रांति का कवच बांधा। उन्होंने उस संगठन का 'अभिनव भारत' नाम दिया था।

'अभिनव भारत' का काम तीव्र गति से आगे बढ रहा था। इसी समय बंग भंग का विरोध सारे देश मे किया जाने लगा। विरोध प्रदर्शन के लिए सभाओं का आयोजन हुआ, जलूस निकाले गये। सार्वजनिक स्थानों मे विदेशी कपडों को जलाया जाने लगा। जगह-जगह विदेशी वस्त्रों की होली जलती देखकर, एक दिन लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा हिन्दुस्तान मे उठी यह अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम चिंगारी है। इसकी दाहकता थोडे ही दिनो मे इंग्लैंड जा पहुंचेगी।

विदेशी वस्त्रों की होली जलाये जाने के कारण सावरकर को फर्गुसन महाविद्यालय के वसति गृह से निकाल दिया गया। पर उन्होंने अपने मित्रों के घर रहकर अपनी शिक्षा पूरी की। अपनी शिक्षा उन्होंने उच्चतम अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की। इसके बाद सावरकर ने बम्बई मे वकालत प्रारंभ कर दी। इसके अलावा वह समाचार पत्रों में पत्र लिखते रहे।

इस सारे दौर में मदनलाल धींगडा और सावरकर के बीच में पत्र व्यवहार चलता रहा। लंदन में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इंडिया हाउस की स्थापना की।

लंदन के इंडिया हाउस ने भारत के स्वतंत्रता-संग्राम को खुले रूप मे प्रोत्साहित करने का निश्चय किया। इसका प्रचार राष्ट्रीय और अंतर-

राष्ट्रीय समाचार पत्रों में हुआ। सावरकर इस समाचार से अभिभूत थे ही, तभी इंडिया हाऊस ने इंग्लैंड में उच्च शिक्षा के लिए शोध छात्रवृत्ति की घोषणा की। सावरकर ने तुरत अपना प्रार्थना पत्र भेज दिया जो तुरत स्वीकृत हो गया। विनायक सावरकर सन १९०६ में इंग्लैंड रवाना हो गये।

इंडिया हाउस के कृत्यों की सारी सूचनायें मदनलाल धींगडा तक जा पहुची। सावरकर के इंग्लैंड रवाना होते ही उन्ह भी इंग्लैंड जाने की धुन सवार हो गयी। तब तक वह एक पुत्र के पिता भी बन चुके थे। पत्नि और पुत्र की जिम्मेदारी उनके सिर पर थी। पर इस सबसे बडी जिम्मेदारी देश की स्वतन्त्रता की थी इसलिए अपना सारी पूंजी समेट कर मदनलाल धींगडा भी १९०६ के आस-पास पानी के जहाज में खलासी की नौकरी करते हुये सीधे इंग्लैंड जा पहुचे। इंग्लैंड पहुचने में उन्ह तीन चार माह का समय लग गया। जहा उनके इंतजार में उनका भविष्य अपनी पखुडिया खोलने को आतुर था।

सावरकर से मुलाकात

सन १९०६ के अक्तूबर माह मे, मदनलाल धींगडा तीन माह की यात्रा के बाद इंग्लैंड जा पहुंचे। इतनी लम्बी समुद्री यात्रा, वह भी मालवाही व्यापारिक जहाज से जिसमे जगह जगह के लोगो, सस्कृतियो को देखने का अवसर मदनलाल धींगडा को मिला था। इससे वह अच्छे-खास प्रसन्न थे।

इंग्लैंड के मौसम मे अक्तूबर का महीना सबसे अच्छा माना जाता है। उस समय बहुत हल्की सर्दी पडती है व खूब खुलकर चमकीली धूप निकलती है, जो कि इंग्लैंड मे एक अपवाद ही मानी जाती है। चारो ओर वृक्ष तरह-तरह के फूलो और फलो से लदे हुए होते है। इन दिनो ही सारे इंग्लैंड और खास कर लदन म बडे जोर शोर से ईस्टर का त्योहार मनाये जाने की तयारी हो रही होती है। ऐसे सुखद अवसर पर अपनी लम्बी समुद्री यात्रा से थके-हारे मदनलाल धीगडा लदन जा पहुंचे।

इंग्लैंड पहुच कर मदनलाल धीगडा बहुत प्रसन्न हुए। लम्बी यात्रा के बाद जसे पछी अपने पख फडफडाकर मुक्त महसूस करता ह वसी ही प्रसन्नता इस समय मदनलाल धींगडा को महसूस हो रही थी। वे अब गुलाम भारत से मुक्ति पाकर इंग्लैंड की स्वतत्र धरती पर आ गये। अपने बचपन से ही मदनलाल धीगडा इंग्लैंड मे शिक्षा प्राप्त करने का सुदर सपना देख रह थे।

अब बरसो की मेहनत रग लाई थी। इंग्लैंड आ पहुचे थे। इंग्लंड की राजधानी लदन के इजीनियरिंग कालेज म मदनलाल धीगडा ने प्रवेश ले लिया। रास्ते मे आते-जाते वह बहुत-सा धन कमा लाये थे। कोल्का टागा और शिमला की सरकारी-नौकरी मे भी बहुत-सा धन

कमाया था, जिसे अब जाकर खर्च करने का अवसर आया था। लंदन में आकर उन्होंने बढ़िया सूट सिलाये, टाईयां खरीदीं।

नई फैशन के बाल कटवाए। इत्र तेल फुलल और क्रीम पाउडर खरीदे। रोज घंटा ड्रेसिंग टेबिल के सामने बैठकर अपना मेकअप करते और बनाव सिंगार के बाद सज धज कर, शाम के समय लंदन की सड़कों पर दूर-दूर तक काफी देर रात गए तक घूमते रहते।

लंदन के आमोद प्रमोद के स्थलों पिकेडली सर्कल साहो आदि का मदनलाल धींगड़ा ने भरपूर आनन्द उठाया। लंदन के संक्षिप्त प्रवास में ही मदनलाल धींगड़ा ने बहुत से लड़के लड़कियों से मित्रता कायम कर ली थी, जिनके साथ घूमना फिरना मदनलाल धींगड़ा को बहुत पसन्द था।

श्री विनायक दामोदर सावरकर भी सन १९०६ में ही इंग्लैंड उच्च शिक्षा प्राप्त करने पहुंचे थे। विनायक सावरकर को इंडिया हाउस से छात्रवृति मिली थी। इसलिए सावरकर ने अपना ठिकाना लंदन में बनाया था।

सावरकर ने भारत से शिक्षा प्राप्त करने आये विद्यार्थियों को इकट्ठा करना प्रारम्भ कर दिया। भारत के विद्यार्थी इंडिया हाउस में एकत्र होने लगे थे, जिन्हें सावरकर स्वदेश प्रेम का उपदेश देते। भारत की गुलामी की दयनीय अवस्था का कच्चा हाल सुनाते। सावरकर कहते अपनी माता यानी भारत माता को अंग्रेज पैरों तले रौंद रहे हैं। वह इस समय भयंकर कष्ट में है। कराह रही है। उस भारत मां के हम पुत्रों का यह धर्म है कि हम उसे अमानवीय पिशाचों के शिकंजे से मुक्त करें। हम सब एक हो जायें और काम करें तो हमारा यह विश्वास है कि मातृभूमि को स्वतन्त्रता प्राप्त करने में अवश्य ही सफलता मिलेगी। परन्तु इसके लिए यह भी जरूरी है कि हम किसी भी आघात का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा, अपने प्राण न्योछावर करने की भी सिद्धता रखनी होगी। इस प्रकार के विचारों से उन्होंने लंदन के शानोशौकत में पले भारतीय नौजवानों को वह अपने देश की दुखद स्थिति के बारे में बतलाने और उन्हें शूरवीर व राष्ट्र-

भक्त होने का सदश दते ।

इस तरह इडिया हाउस धीरे धीर दश भक्त आजादी के दीवाना का अड्डा बन गया । आने वालो मे ज्यादातर नौजवान युवक-युवतिया होते ।

मदनलाल धींगडा लदन मे रहत हुए सावरकर के नाम स अपरिचित ना रहे । सावरकर के विषय मे वह भारत मे काफी सुन चुके थे । उनसे थोडा बहुत पत्र व्यवहार भी हुआ था । पर उस समय सावरकर का काम क्षेत्र पूना का फर्ग्युसन कालेज या नासिक शहर ही था । जबकि मदनलाल धींगडा अमृतसर, कश्मीर या शिमला तक सामित थे । मदनलाल धींगडा सावरकर की तरह गम्भीर चितक भी नही थे । बल्कि वह तो बडे खुशमिजाज, हसी-मजाक म मस्त रहने वाले व्यक्ति थे । अग्रेज सरकार का हिदुस्तान को गुलाम बनाना उन्ह रास नही आया था । पर इसके लिए उन्हान कोई ठोस याजना नही बनाई थी । ना ऐसे किसी व्यक्ति विशेष से उनका कोई विशेष परिचय था । उन्हाने तो पजाब केसरी लाला लाजपतराय के ऊचे विचार सुने भर थे ।

सावरकर और मदनलाल धींगडा हर तरह से एक दूसरे से विप रीत थे । स्वभाव मे, रहन-सहन मे, विचारो मे दोना ही एक दूसरे से उत्तर-दक्षिण थे । एक गम्भीर स्वभाव का सादे जीवन उच्च विचारा का उदाहरण था तो दूसरा बनाव श्रृगार का शौकीन, फशनेबिल और इत्र फुलैल से रचा मचा । जिसके जीवन मे ना काई सिद्धात थे ना ही काई परिपक्व विचारधारा ।

इस तरह के विपरीत ध्रुवा के स्वामी एक दूसरे से एक दिन टकरा ही गये ।

मदनलाल धींगडा के कानो तक भी इडिया हाउस के क्रिया-कलापो की सूचना पहुच गयी । मदनलाल धींगडा उसी समय घूमते फिरते सीधे इडिया हाउस जा पहुचे । वहा उस समय भी श्री विनायक दामादर सावरकर का ओजस्वी भाषण हो रहा था । वहा ना जाने कितने लाग इस भाषण का बडी ही तन्मयता से सुन रहे थे । मदनलाल धींगडा

भी चुपचाप पीछे की पक्ति मे वठ गये ।

सावरकर न वडी ही मार्मिक भाषा मे भारत की दयनीयता व दुदशा का वणन किया जिसे सुनकर सारे लोग स्त ध रह गए। मदन लाल धीगडा ने यह भाषण सुना ता जहा दु ख से उनकी आखें भीग गयी वही उनका खून अग्रेजो के अत्याचारो के काले कारनामा के वणन को सुनकर खौल पडा । उनके लिए अब चुप बैठना असभव हो गया । वह उठकर खडे हो गए और उसी समय अग्रेजा को इट का जवाव पत्थर से देने का नारा लगाने लगे।

सावरकर का भाषण वीच में ही रुक गया। वाकी के श्रोता भी जैसे सोते से जाग गये । वह सब स्त ध से मदनलाल धीगडा के जाश से भरे नारा से जसे जाग गये।

मदनलाल धीगडा के जोशो-खरोश से, इडिया हाउस म उपस्थित भारतीय विद्यार्थियो मे उत्साह भर दिया। मदनलाल उन सबकी नजरा मे हीरा का स्थान पा गए। वह सब तो मूक श्राता थे पर मदनलाल धीगडा ता जसे प्रतिहिंसा की आग म उद्विग्न सच्चे भारतीय थ । सच्चे सपूत थे जो अपनी भारत माता की दुदशा की परिकल्पना म कुछ भी कर सकते थे। कही तक जा सकते थे। वह मूक साधक नही, वल्कि क त य की चरम परणीति थे।

मदनलाल धीगडा दौडकर सावरकर के चरणा म गिर पडे। सावरकर उस समय से ही उनके हृदय के सम्राट वन गए थे। मदन लाल धीगडा उनके पुजारी थे। अब तो उ होन सावरकर क विषय मे वस सुना भर ही था। उनसे एकाध वार पत्र व्यवहार हुआ था। आज वहा सावरकर उनके सामने थे। उन्हाने तो सावरकर को सच्चे मन से अपना नेता अपना गुरु मान लिया था।

पर सावरकर, मदनलाल धीगडा स मिलकर उतने प्रस न नही थे। सावरकर गम्भीर प्रकृति के, सिद्धातवादी राष्ट्रीय विचारधारा से प्रभावित व्यक्ति थे। वह जानते थे, आजादी का रास्ता लम्बा भी है, कठिन भी है। वहा जाश क साथ होश की भी आवश्यकता पडता है। इसलिए आजादी की लडाई के लिए धीर गम्भीर व्यक्ति हाना

चाहिए। मदनलाल धींगडा जैसा एक क्षण मे ही उबल जाने वाला नवयुवक नहीं। इस उतावलेपन के कारण सावरकर मदनलाल धींगडा से मिलकर जरा भी प्रसन्न नहीं हुए। ऊपरी मन से तो उन्होने मदनलाल धींगडा को सराहा पर मन मे मदनलाल की उच्छृंखलता उन्हे खल गयी।

मदनलाल धींगडा से भी यह बात छिपी नहीं रह सकी। वह अपना स्वभाव एक क्षण मे कैसे बदल सकते थे। वह जानते थे उनकी सच्चाई सावरकर को एक ना एक दिन अवश्य ही प्रभावित कर देगी।

पजाब केसरी लाला लाजपतराय से मुलाकात

सावरकर से पहली ही मुलाकात म, मदनलाल धीगडा उनस बहुत ज्यादा प्रभावित हुए थे। लगभग राज ही मदनलाल धीगडा इडिया हाऊम जान लग, जहा इण्डिया हाऊस के सस्थापक श्यामजी कृष्ण वमा जो कि प्रसिद्ध क्रातिकारी थे व श्री विनायक सावरकर स प्रतिदिन मुलाकात होने लगी।

इडिया हाऊस म प्रतिदिन आजस्वी भाषण होत। देश विदश की राजनीति की चर्चा होती। क्रातिकारी नेताओ की स्थिति पर चर्चा होती।

इन्ही दिना पजाब केसरी लाला लाजपतराय इग्लड की यात्रा पर आए जहा उन्हान लदन के भारतीय छात्रा को इडिया हाऊस मे सम्बाधित किया। इसके अलावा लाला लाजपतराय स, मदनलाल धीगडा की लदन म ही व्यक्तिगत मुलाकात हुई। मदन, पजाब केसरी लाला लाजपतराय के राष्ट्रीय विचारो स बहुत ज्यादा प्रभावित हुए थे।

अब धीर धीरे मदनलाल धीगडा राजनातिक आदोलना की आर मुड रहे थ। इजीनियरिंग पढन के साथ साथ मदन राजनातिक विषया का अध्ययन भी करने लग।

पजाब केसरी लाला लाजपतराय न कहा हमार दश के नाजवाना का भारतीय स्वतन्त्रता के वक्ष को सीचन क लिए अपना खून दना हागा।

लाला जी का लदन याना के बाद सावरकर न अपनी गतिविधिया का केन्द्र परिम बना लिया। सावरकर की विचारधारा स प्रभावित हाकर मदनलाल धीगडा, धीर धार उनका आर मुड रह थ।

इधर हिन्दुस्तान म मदन के माता पिता का उनके इस तरह अचा-

नक गायब होन से बहुत चिंता हो रही थी । उन्होने आस पास के जान-कारो से मदनलाल के सम्बन्ध मे पूछताछ की ।

मदनलाल धीगडा के पिता डा० साहब दित्तामल को यह सूचना मिली कि मदनलाल धीगडा तो लदन जा पहुचे है, जहा वह इजीनियरिंग की पढाई कर रहे ह । डा० साहब को जहा इस सूचना से मन को शाति मिली वहा मा मतो को और चिता होने लगी । घर मे इतना रुपया पसा होन हुए, उनका लाडला बेटा मदनलाल घर से बिना एक पैसा लिए, कपड लत्ते साजो सामान लिए इस तरह सात समुद्र पार लदन भाग गया । यह मा के दिल को किसी भी तरह गवारा नही दे रहा था ।

मदन क एक भाई इग्लैड मे ही, डाक्टर थे । मा ने उन तक सूचना भिजवाई ताकि मदन की खर खबर उन तक आ पहुचे । पर उन भाई की पत्नी भी अग्रज थी । भाई लदन मे रहते हुए खुद भी पूरी तरह सवेदनशीलता से दूर हो चुके थे । वह अपने माता पिता को ही जरा भी घास न डालते थे, तब उनके लिए भाई क्या चीज थी ।

उनके तथाकथित उन बड भाई ने ना तो मदनलाल की कोई खोज-बीन की और ना ही माता पिता को कोई सूचना ही भेजी । मदनलाल के एक अन्य छोटे भाई कुन्दनलाल जो बहुत प्रसिद्ध व्यवसायी और उद्योगपति थे, उनके मित्रो से यह सूचना मिल गयी कि उनके भाई मदनलाल धीगडा इस समय लदन के इजीनियरिंग कालेज मे पढ रहे हैं ।

पूरा घर यह सूचना प्राप्त कर बहुत ज्यादा प्रसन्न हुआ । पर उनकी यह प्रसन्नता बहुत क्षणिक थी । मदनलाल धीगडा के इण्डिया हाउस आने-जाने की सूचना भी उनके शुभचितको ने उनके माता पिता तक पहुचा दी ।

सन १९०८ के आस पास ही सावरकर ने पूरे लदन मे १८५७ के स्वतत्रता आदोलन की ५०वी सालगिरह मनाने का निश्चय किया ।

इस सम्बन्ध म सारे लदन के भारतीय छात्र पूरे तन-मन से इडिया हाउस म होने वाले समारोह मे सम्मिलित हुए, जहा राष्ट्र भक्ति की कविता म ओजस्वी भाषण दिए गए । मदनलाल धीगडा इस सारे समारोह म तन मन स जुटे हुए थे ।

इस समारोह मे ही श्री विनायक सावरकर की मराठी पुस्तक 'स्वातन्त्र्य समर' का हिन्दी अनुवाद, जा लदन मे ही प्रकाशित हुआ था, का विमोचन किया गया। मदनलाल धींगडा न इस पुस्तक का वही बठे आद्योपान्त पढ डाला। उस दिन से 'स्वातन्त्र्य समर' उनकी जान से भी ज्यादा प्रिय पुस्तक बन गई जिसे वह सदा अपने सीने स लगाकर रखते।

इस समारोह की याद का बनाए रखन के लिए '१८५७ स्मारक' बिल्ले बनाए गए थे। सारे विद्यार्थिया ने यह बिल्ले अपन सीने पर लगाए हुए थे। मदनलाल धींगडा ने भी यह बिल्ला बडे गव से अपन सीने पर लगा लिया।

अग्रेज विद्यार्थी, इस समारोह स बुरी तरह चिढ़ गए थे। इन अग्रज विद्यार्थिया म कुछ विद्यार्थी ऐस भी थे जा यह समझते थे कि अग्रेज जाति बहुत ही उच्च जाति है। इनका जन्म ही सारे ससार म राज्य करने के लिए हुआ है। भारतीय लाग अपन दश म भी शासन करन के काबिल नही ह। यह लाग जरा भी याग्यता नही रखत है।

इन अग्रेजो म कुछ ऐसे भी समझदार और उदार अग्रेज भी थे जो भारतीयो की विद्वत्ता की बहुत कदर करत थ। इन अग्रेजा म ऐसे भी कुछ अग्रेज थे जो भारत की आजादी के समथक थे। फिर भी अधिकाश सख्या उन अग्रेजो की थी जा यह मानते थ कि भारत का नेतृत्व वही कर सकते है।

जब भारतीय विद्यार्थी अपना कक्षाआ म '१८५७ स्मारक' बिल्ले लगाकर गए तब वहा के अग्रेज विद्यार्थी भारतीय छात्रा की इस हरकत से सख्त नाराज हो गए। वह उन्हे बुरा भला कहने लग।

अपने बढिया सूट मे सजे धजे और सीन पर '१८५७ स्मारक' का बिल्ला लगाए मदनलाल धींगडा अपने महाविद्यालय म पहुचे। उनका एक अग्रेज सहपाठी उनको बिल्ला लगाए दखकर आग-बबूला हा गया। इन भारतीय विद्यार्थिया की यह हिम्मत कि इग्लैंड की राजधानी लदन मे यह बाय, जो कि अग्रेज जाति की सरकार की बइज्जती ह।

उस अग्रेज विद्यार्थी ने आग बढ़कर मदनलाल धींगडा के कोट पर

लगा बिल्ला खीचन का प्रयाम किया। पर बिल्ला खीचने से पूव ही मदनलाल धीगडा न उस अग्रेज विद्यार्थी के मुह पर एक तमाचा जड दिया।

इतने पर भी मदनलाल धीगडा रुके नही । उ होने उस अग्रेज युवक को धरती पर पटक दिया। उसके सीने पर चढ गए तथा जेब से चाकू निकालकर बाले, "तुम्हारी यह हिम्मत है कि मेरे देश के सम्मान के प्रतीक का इस तरह नोचने का साहस करने की हिम्मत की। अगर हिम्मत है तो अब मेरा बिल्ला नाचकर देखो।"

वह अग्रेज साक्षात मौत को सामने पाकर, कापकर रह गया। वह गिडगिडाकर दया की भीख मागते हुए बोला, "भगवान के लिए मुझे छोड दो मुझे जाने दो । मैं अब फिर कभी ऐसी गुस्ताखी नही करुगा।" उसे इस तरह रोते और गिडगिडाते हुए दखकर, मदनलाल धीगडा का दया आ गयी। उ होने इस थर-थर कापते हुए अग्रेज का छोड दिया।

मदनलाल धीगडा के इस दु साहस की धाक उनके सारे महाविद्यालय मे जम गयी। फिर किसी अग्रेज छात्र ने मदनलाल से तो दूर किसी अ य भारतीय छात्र स भी छेडखानी करने का साहस नही किया।

मदनलाल धीगडा की यह हरकत उनके भाई कुदनलाल तक जा पहुची जा उन दिनो लदन मे ही थे। इससे वह मन-ही मन बहुत क्रुद्ध हा गए। वह अच्छी तरह जानते थे कि आज तक मदनलाल ने अपने मन की की है। वह जब पिता की नही सुनते तो उनकी क्या सुनेंगे।

मदनलाल धीगडा का यह दु साहस सावरकर के काना तक पहुचा जिसे सुनकर उ ह भी मदनलाल धीगडा के इस तरीके से सख्त असहमति थी। वह अग्रेजो से लडने के सख्त खिलाफ नही थे। बल्कि सारा काम वह याजनाबद्ध तरीके से करना चाहते थे। वह बडी लडाई इस तरीके से नही लडना चाहते थे। हर लडाई का एक योजनाबद्ध तरीका होता है।

मदनलाल धीगडा की निर्भीकता

अपने सहपाठी अग्रेज की अच्छी खासी पिटाई करने के बाद मदन लाल धीगडा जहा अपने सहपाठी भारतीय छात्रो मे हीरो बन गए। वही अग्रेज छात्र उनके दुश्मन बन गए।

मदनलाल धीगडा उस समय कुमारी मरी हैरिस नामक अग्रेज महिला के यहा पेइग गेस्ट के रूप म रह रहे थे। जो १०८ लेदीवेरी रोड पर रहती थी। मदनलाल धीगडा उस समय अभिनव भारत सासायटी और इडियन होम रूल सोसायटी के सक्रिय सदस्य थे।

पजाब केसरी लाला लाजपतराय के भाषण से प्रभावित होकर अपने घर मे नियमित रूप से बदूक चलाने का अभ्यास करते थ। मरी हैरिस ता उदारवादी विचारा की अग्रेज महिला थी, वह भारत को गुलाम बनाए रखने के सख्त खिलाफ थी। पर उनके पडोसी, इस हिदुस्तानी को ज्यादा पसद नही करत थे। फिर जब से उन्होने अग्रेज छात्र की पिटाई की सारे अग्रज समाज मे मदनलाल धीगडा के प्रति नफरत की आग फल गयी।

लिहाजा मदनलाल धीगडा इडिया हाउस होस्टल म रहने लग। एक दिन उन्होने बातो ही-बातो म सावरकर से कुछ काम बतान का कहा था। तब सावरकर ने मदनलाल धीगडा स बडे ही रुखे शब्दा म कहा, "आजादी का रास्ता इतना ज्यादा आसान नही है इसक लिए बहुत ही आत्मविश्वास और आत्मसयम की जरूरत है जो हर आदमी म नही होता है। अगर कुछ करना है ता पहले आत्म नियन्त्रण सीखा। अपनी उच्छृखलता छाडो, साथ ही अपने गुस्स और आक्रोश पर काबू करना सीखा, तभी स्वतन्त्रता से सम्बधित कुछ काम मागना। तब तक क्राति की बातें तुम्हारी समझ म नही आएगा।"

व्यक्ति भी बुरी तरह जख्मी हो जाते। वह सब मर भी सकते थे। इससे भी बुरी बात तो यह होती कि विस्फोट सुनकर बाहर के लोग भीतर घुस आते। पुलिस को भी समाचार मिल जाते, जिससे बड़ा अनर्थ हो जाता।

भाग्यवश, स्टोव के निकट खड़े हुए मदनलाल धींगड़ा का ध्यान अचानक उबलते हुए द्रव की तरफ गया, उन्होंने चिल्लाकर कहा, "हे भगवान यह तो हमारे काम का अंत ही आ गया लग रहा है, अब क्या होगा।"

सावरकर और श्याम बिहारी वर्मा दोनों ही इस स्थिति में घबड़ा गए। बर्तन स्टोव से तुरन्त ही उतारना जरूरी था। दोनों ही व्यक्ति हड़बड़ाये से अपने पास ही सड़सी ढूढ़ रहे थे। उस समय अधिक खोजने का समय नहीं था। उबलता हुआ पदार्थ खतरे की ओर बढ़ रहा था। पल भर में ही वह कमरा एक दर्दनाक दृश्य उपस्थित कर सकता था।

अचानक हो दोनों व्यक्ति देखते ही रह गए। मदनलाल धींगड़ा दौड़कर आगे बढ़े और उन्होंने स्टोव पर से उबलता बर्तन, अपने नंगे हाथों से उतारा और उसे मेज पर रख दिया।

इस तरह जलता बर्तन हाथ से उठाने के कारण मदनलाल धींगड़ा के हाथों की हथेलियां बुरी तरह झुलस गयीं, उनमें फफोले पड़ गए। सारा कमरा चमड़ी के जलने की दुर्गंध से भर गया।

पर मदनलाल धींगड़ा के मुंह पर न कोई शिकन आई और ना ही उनके मुख से जरा सी भी चीत्कार या आवाज नहीं निकली। बल्कि उनके मुंह पर वही खिलदड़ापन और मुस्कराहट तैर रही थी।

सावरकर और श्याम बिहारी वर्मा बड़ी देर तक स्तब्ध से खड़े रहे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था वह क्या करें क्या कहें।

सावरकर पहली बार मदनलाल धींगड़ा की निर्भीकता, सहनशीलता से बहुत ज्यादा प्रभावित हुए। उन्होंने मदनलाल धींगड़ा को स्नेह से आलिंगन में भरकर कहा, 'बहुत अच्छा किया, मदन भाई तुमने बहुत हिम्मत से काम लिया, तुम धन्य हो। तुम्हारी सहनशीलता, तुम्हारा साहस धन्य है।"

ज्यां-ज्यों वक्त गुजरता गया सावरकर और श्याम बिहारी वर्मा को इस घटना की गम्भीरता का पता चलता जाता। उन्हें मदनलाल धींगडा की यह हिम्मत और दिलेरी से श्रद्धा होती। आज मदनलाल धींगडा ने उनकी जान ही नहीं बचाई थी बल्कि इण्डिया हाऊस को बचाया था, वहां की होने वाली गुप्त गतिविधियों को दुनिया के सामने उजागर होने से रोका था। अगर अंग्रेज सरकार को इस बात का पता चल जाता तो सब जेलों में ठूंसे जाते।

अपनी प्रशंसा से मदनलाल को बहुत शर्म आई। उन्होंने तो उस समय जो किया था, अपनी व सबकी जान बचाने के लिए किया था। वह तो बहुत हिम्मत वाले व्यक्तियों में से एक थे। उन्होंने अपनी प्रसन्नता के लिए कभी कोई काम नहीं किया था। जो किया था वह अपने मन के संताप के लिए किया था।

इस घटना से सावरकर के मन में मदन भाई के लिए आदर और प्रेम की भावना उत्पन्न हो गयी थी। श्याम बिहारी वर्मा तो जन्म मदन भाई के पक्के दोस्त हो गए थे।

मदन का भी सारा समय अब इण्डिया हाऊस के कामों, वहां की गतिविधियों में गुजरता था। पर मदन भाई का वह हंसमुख स्वभाव कभी नहीं बदलने वाला था। वह हमेशा, वहां आकर अपने मित्रों को तरह-तरह से चिढ़ाते, सीटियां बजाते, गाते बजाते और मस्त रहते। अपना बन्दूक चलाकर निशाना लगाने का अभ्यास वह एक शिक्षक के निर्देशन में सीखते।

सावरकर उनकी सारी गतिविधियां अच्छी तरह जानते थे। वह यह भी जानते थे कि मदन भाई को बदल डालना, ना उनके वश में था और ना ही किसी अन्य के वश में।

इंडिया आफिस की स्थापना

लदन मे अब भारतीय युवको की गतिविधिया उग्र रूप धारण करने लगी थी। इडिया हाउस जो भारतीय नवयुवको की गतिविधियो का केन्द्र बना हुआ था, अग्रेजी सरकार की निगाह म आ गया। वहा आने जाने वाले लोगो पर सरकार की निगाह लग गयी।

इस कारण सर कर्जन वायली जो भारत के राज्य सचिव के राजनीतिक सलाहकार थे। सर कर्जन वायली एग्लो इडियन थे और उन्होने ब्रिटिश सेना म वरिष्ठ अधिकारी के रूप म काम प्रारम्भ किया था। इसके बाद वह ब्रिटिश प्रशासनिक सेवाओ के सदस्य बने जिसके कारण वह भारत म और नेपाल के कई राज्यो म रेजीडेंट कमिश्नर रहे। अजमेर प्रभाग के काफी समय तक चीफ कमिश्नर रहे थे। उस दौरान डॉ० साहब दित्तामल के पुत्र कुदनलाल जो मदनलाल धीगडा के सगे छोटे भाई थे के बडे ही घनिष्ठ मित्र रहे थे।

यही सर कर्जन वायली की अध्यक्षता म 'इडिया आफिस' खोला गया, जो ऊपरी तौर पर भारतीय छात्रो के हितो की रक्षा करने के लिए था। पर अदरूनी तौर पर इडिया आफिस का उद्देश्य भारतीय छात्रो की गतिविधियो पर नजर रखना था।

इडिया आफिस के गुप्तचरो द्वारा इडिया हाउस म रहने वाले छात्रो पर नजरें रखी जाने लगी। इन गुप्तचरो ने मदनलाल धीगडा को देख कर कहा, 'यह युवक तो कवि है हमेशा फूलो को देखता रहता है, हसता मुस्कराता रहता है। इसम तो सारे गुण कवियो के है। क्राति कारियो से इसका वास्ता तो हो ही नही सकता है।' जबकि मदनलाल तो पक्के क्रातिकारी बन चुके थे।

मदनलाल धीगडा रोजाना इडिया हाउस के अलावा इडिया आफिस

भी आने जाने लगे व मदनलाल धींगडा इडिया आफिस के सदस्य बन गए। एक बार उनके इडिया हाऊस के मित्र ने उन्हें वहा आता जाता देखकर इस विषय मे आपत्ति उठाई, पर सावरकर ने चुप करा दिया। लेकिन इसके बावजूद इडिया हाउस के लोग उन्हें गद्दार और देशद्रोही करार देने लगे।

उन्ही दिनो भारत म अग्रेज सरकार की गतिविधिया बहुत ही तेज हो गयी। कन्हाई लाल दत्त, खुदीराम बोस और हेमचन्द्रदास आदि क्रातिकारियो को फांसी की सजा दी गयी और श्री विनायक सावरकर के बड़े भाई गणेश सावरकर को राजद्रोह की कवितायें लिखने के जुर्म म कालेपानी की सजा दी गयी और उनकी सारी पारिवारिक सपत्ति सरकार द्वारा जब्त कर ली गयी।

तब मदनलाल धींगडा अपने महाविद्यालय म एक बैज लगाकर गये जिस पर लिखा था 'शहीदो की स्मृति म'। मदनलाल ने जब यह बैज लगाकर कक्षा म प्रवेश किया, तो एक बैज हटाने पर दुगत करवाने की याद करने के कारण कोई छात्र तो उनसे कुछ नही बोला, पर अध्यापक ने उन्हें तुरन्त बैज निकालने को कहा। जिस पर मदन लाल धींगडा ने स्पष्ट इनकार कर दिया।

अध्यापक ने उन्हें प्राचार्य के पास भेज दिया। उसने भी बैज निकालने को कहा या अर्थदड भुगतने की सजा दी, पर मदनलाल ने बिल्ला उतारने से अधिक अर्थदड भरना ज्यादा उचित समझा।

बडी मुश्किल स उनको कालेज से निकाला जाना बचाया जा सका था। वरना कालेज के अध्यापक तो उनके रखने के पक्ष मे नही थे।

इस सारे घटनाक्रम के बाद भी मदनलाल धींगडा के स्वभाव म कोई अन्तर नही आया था। वह सदा की भाति हसते मुस्कराते हुए रहते।

एक दिन तो उन्होने बहुत गजब कर डाला। इडिया हाऊस मे जब वह पहुचे तब वहा सब लोग बहुत गम्भीर विचार-विमर्श मे मग्न थे। भारत मे हमारे देशवासियो को तग करने के लिए अग्रेज कोई ना कोई नया कानून बनाते रहते थे।

सारवरकर ने इसी विषय पर चर्चा करने के लिए आज एक सभा बुलाई थी।

मदनलाल धींगडा ता सिफ सारवरकर का ही भाषण सुनत थ। किसी नेता का ना वह भाषण सुनत और ना ही किसी व्यक्ति को भाषण दना पसन्द करत थे। मदनलाल धींगडा आये और चुपचाप बठे हुए बडी देर तक सावरकर के विचार सुनते रह। उनका भाषण समाप्त हाते ही मदनलाल धींगडा उठकर बाहर चले गए।

सावरकर जसे गम्भीर व्यक्ति को मदनलाल का इस तरह उठना अखरा पर वह उनकी आदतें अच्छी तरह जानत थे। इसलिए उन्होंने विशेष ध्यान नही दिया।

मदनलाल धींगडा थोडी देर तो बाहर इधर-उधर टहलत रह। फिर पास की दुकान म रखा ग्रामाफोन बाजा और लाउड स्पीकर उठा कर ले आए। इंडिया हाऊस की खिडकी पर लाउडस्पीकर रखकर वह अपने मन-पसन्द गाना के रिकाड बजा कर सुनने लग।

सगीत की धुन बजत ही आस पास के लडके व लडकिया की भीड इकट्ठा हो गयी। जो सगीत की मधुर धुन सुनकर, ताली पीटकर सीटी बजाकर नाचने लग। मदनलाल धींगडा इस समय कस पीछे रहत। वह खुद भी इस अनाखे सामूहिक नत्य म शामिल हा गय। सगीत का स्वर, सीटिया, नाच जिसमे शोरगुल का दश्य उपस्थित हो गया।

इससे इंडिया हाऊस के प्रागण म चलती हुई सभा म बाधा पडी। सावरकर जी समेत उपस्थित सभी लोगा की भकुटिया तन गयी। गुस्से में सावरकर जी खुद दौडे-दौडे आए। उन्होंने जब मदनलाल धींगडा को इस तरह नाचते-गाते देखा तो वह क्रोध मे थरथराते हुए बिल्कुल आपे से बाहर हो गए। उन्होंने गुस्से मे चीखते हुए कहा 'मदन अपना यह गदा सगीत बन्द करो । तुम्हे अपने आप पर शर्म नही आती। भीतर कितने गभीर विषय मे सभा चल रही है। तुम इसमे सम्मिलित नही हुए इसके विपरीत यहा अपनी मूखता का प्रदर्शन कर रहे हो। सभा से बाहर हो ही, साथ ही जो लोग सभा के अन्दर हैं उनके लिए भी बाधक

चन रहे हो। ओह ! तुम पर मुझे लज्जा आती है मदन, अगर तुम्हारा व्यवहार यही है तो फिर अन्तिम क्षण तक स्वतन्त्रता के लिए लडने की बडी-बडी बातो का क्या उपयोग है।"

धीगडा पर जसे घडो पानी पड गया। वह चुपचाप वहा से चले गए। उनके जाते ही यो ही मगीत की धुन पर आकर नाचने वाले लडके लडकिया भी लज्जित से इधर उधर हो गए। कुछ समय बाद सावरकर का जब क्रोध शात हुआ तो उन्हें मदन भाई के साथ अपने किए हुए व्यवहार पर लज्जा आई। पर वह जानते थे मदन भाई दिल के बहुत भोले हैं, उन्होंने उनके क्रोध का जरा भी बुरा नही माना था। आज नही तो कल वह फिर यहा आ जायेंगे।

पर मदनलाल धीगडा अबकी बार सचमुच बहुत लज्जित थे। वह उस दिन के बाद से दोबारा इडिया हाऊस की ओर ना गए। उन्हे बार-बार यह बात सालती, लोग क्यो उन्हे हमेशा गैर जिम्मेदार समझते हैं जबकि वह तो हमेशा देश के लिए अपनी जान देने को भी प्रस्तुत रहते हैं।

इस बीच मदन भाई इंडिया आफिस आते-जाते रहते ताकि उन्हे अंग्रेज सरकार की गतिविधियो का पता चलता रहे। सावरकर के इडिया हाउस ना आने से सारे लोग उन्हे बहुत याद करते थे। सबसे ज्यादा सावरकर ही उन्हे याद करते थे। आखिर दो महीने से मदन-लाल धीगडा यानी उनके मदन भाई आखिर कहा चले गए। अब सावरकर को उनकी कुशलता की बहुत ज्यादा चिंता हो गयी। आखिर मदन कहा गया, दोबारा यहा आया क्यो नही—सावरकर हमेशा यही सोचते रहते थे।

अग्नि-परीक्षा

जिस तरह श्री विनायक सावरकर, अपने मदन भाइ अर्थात अमर शहीद मदनलाल धींगडा के लिए इंडिया हाऊस न आन स बहुत चिंतित थे। मदन भाई उतन ही आश्वस्त थे, प्रसन्नचित्त थे। उन्ह सब गर जिम्मेदार समझते थे, इस कारण से उन्ह बहुत चिंता हो गयी थी।

पर अचानक ही एक दिन अमर शहीद मदनलाल धींगडा इंडिया हाऊस आये और सीधे सावरकर के पास जा पहुंचे आर बिना दुआ सलाम के उनसे आखो म आखें डालकर बोले "सावरकरजी अब आप मुझे यह बतलाइए क्या मेरे लिए अपने प्राणो को न्योछावर करने का समय आ गया ह।'

सावरकर आश्चर्यचकित और अभिभूत स्वर म बोले 'मदन भाई स्वय का बलिदान करने के लिए सिद्ध व्यक्ति जब यह महसूस करता है कि आत्मबलिदान का समय आ गया है तो यह समय लेना चाहिए कि वाकई समय आ गया है।'

'तब तो सावरकर जी मैं बिल्कुल तयार हू। मदनलाल धींगडा न जोश भरे स्वर म कहा।

सावरकरजी उन्ह स्नेह स थपथपाते हुए अपने कमर म ले गय काफी देर तक दोनो म विचार विमर्श होता रहा।

उस समय भारत म स्वतत्रता सग्राम बडे जोर शोर स चल रहा था। जनता के जुलूस पर पुलिस के लाठी प्रहार प्रति दिन की घटनायें बन चुकी थी। अंग्रेज भारत को अपने शिकजे से किसी प्रकार छोडना नही चाहते थे।

इसका कारण यह था कि भारत से अपने उपयोग के लिए खनिज पदार्थ कपास आदि सामान इंग्लैंड ले जाया करते थे।

इग्लैंड की मिलो मे बना माल भारत लाया जाता था जिसे काफी मुनाफे के साथ भारत के बाजारा मे बेचा जाता था। भारत से अधिक काम लेने और भारत का पूरी तरह शोषण करने के लिए इग्लैंड के शाही परिवारो के आवारा और लफगे शहजादा को भारत म काफी ऊचे वेतन देकर भेजा जाता था। भारत मे जमीन मुफ्त की थी, मजदूर मुफ्त के थे। इसलिए मोटा मुनाफा कमाने के लिए कपडे की मिलें स्थापित की जा रही थीं।

भारतीय जाग उठते, भारत स्वतन्त्र हो जाता तो अग्रेजा की बहुत बडी हानि हो जाती। इसलिए स्वतन्त्रता की इच्छा करने वाले, अग्रेज सरकार के शत्रु बन गये। पुलिस और सेना की सहायता से उन्ह निममता-पूर्वक पीटा गया था। गिरफ्तारी और बलिदान प्रतिदिन की घटनायें बन गयी थी। लोकमान्य बाल गगाधर तिलक, लाला लाजपत राय जसे नेतागण भारत क स्वातन्त्र्य सग्राम का नेतृत्व कर रहे थे।

दूसरी ओर कुछ ऐसे क्रातिकारी युवक भी थे जो अस्त्र शस्त्रा की सहायता से अग्रेज सरकार से सघर्ष कर रहे थे। बम बना रहे थे। सबसे पहला बम विस्फोट खुदीराम बोस व प्रफुलचद्र चाकी ने बगाल मे किया था।

मदनलाल धीगडा जब भी इस प्रकार के समाचार सुनते थे उन्हें अपने अत करण मे एक विचित्र तरग उठा करती थी। व अपने हृदय स अग्रेजा स घृणा करने लगे थे। इस बीच ही सावरकरजी के बडे भाई श्री गणेश सावरकर पर, जो कालेपानी सजा पा कर अडमान निकाबार द्वीप मे सजा भुगत रहे थे। पर तरह-तरह के अत्याचारो की खबरें आती रहती थी। कालेपानी के कारागार मे श्री गणेश सावरकर पर सर्प, बिच्छुओ और जगली जानवरो से डसाया जाता था। इन सब बाता को सुनकर ही मदन भाई के क्रोध म जैसे घी पड गया था। हिन्दू युवको की बदले की भावना का परिचय अग्रेज सरकार को कैसे दिया जाय, यह बात मदन भाई को बहुत ज्यादा बेचैन कर रही थी।

अपने निश्चय को सफल बनाने के लिए मदन भाई एक पिस्तौल भी खरीद चुके थे।

मदन भाई नदन की एक सस्था नेशनल इडियन एसोसियेसन के भी सक्रिय सदस्य थे। जिसकी सचिव कुमारी एमा जासेफाईन नेक नामक एक अग्रेज महिला थी। इस सस्था का काम इग्लैड म उच्च शिक्षा प्राप्त करने आये भारतीय छात्रों की सहायता करना था। पर अदरूनी तार-पर यह सस्था भारतीय छात्रों को अग्रेज सरकार और अग्रेज जाति समर्थक बनाने तथा उनका दुश्चरित्र बनान का काय करती थी। इस सस्था के पीछे भी सर कजन वामली का ही हाथ था। वही उसके सस्थापक और प्रधान थे।

माच १९०९ को मदनलाल धीगडा नेशनल इडियन एसासियसन के दफ्तर म गये जहा कुमारी ऐमा जोस फाईन नेक म उनकी भेट हुई। मदनलाल धीगडा ने इस सस्था का सदस्य बनने की अपनी इच्छा प्रकट की जा सहप पूरा हो गयी। अगले माह से मदनलाल धीगडा इस सस्था के सक्रिय सदस्य बन गये। कुमारी एमा जास फाइन नेक स मदनलाल धीगडा की बहुत गहरी मित्रता हो गयी। अग्रेज सरकार ने इस बीच एक तीन सदस्यीय समिति का गठन किया जिसम सर कजन वामली प्रमुख सदस्य थ।

एक दिन शाम के समय मदनलाल धीगडा जब इडिया हाऊस पहुच ता सावरकर, शयाम बिहारी वर्मा आदि क्रातिकारी इडिया हाऊस म एकत्रित थे और उस समय बातचीत जापानियो के शाय और साहस पर हो रही थी। सभी लाग एक स्वर म जापानियो के साहस का बहुत ज्यादा प्रशसा कर रहे थे। कुछ दर तक ता मदन भाई ने उनका समथन किया फिर हसकर बाले, भाईयो जापानियो की प्रशसा हो गयी क्या तुम लाग यह समझते हो कि हिन्दू उनस किसी भी प्रकार कम है? समय आने दो, हम हिन्दू भी अपना कतव्य जी जान स निभा कर दिखला देंगे। सारा विश्व हमारी कतव्य भावना को दखेगा।

अनेक लाग मदनलाल धीगडा को किसी काम का व्यक्ति नहीं समझते थे। उन्हे सब छल-छबीला व्यक्ति ही समझ पाय थ।

इसलिए उनकी इस बात को किसी ने गभीरता स नही लिया। उनम स एक व्यक्ति ताना कसते हुय हसते हुये बोला, 'अरे हम तुम्हे

अच्छी तरह जानते हैं, तुम तो केवल बातूनी ही हो, समय आने पर तुम कुछ नही कर पाओगे।"

इस पर उपस्थित सब लोग ठहाका लगाकर हसने लगे, अरे हम तुम्हे अच्छी तरह जानते हैं। यह बात बार-बार सभी लोग दोहराने लगे।

धीगडा इस बात को स्वीकार करने को जरा भी तैयार नही थे। इसलिए बार-बार इस बात का प्रतिवाद करते रहे कि उनको बात बढा चढाकर कहने की खोखली बाता की आदत है। फिर भी उनके मित्रो का उन्हे चिढाना और ताने कसना जारी रहा।

आखिर हसी मजाक की बाता ने अचानक गभीर मोड ले लिया आर यह निश्चित किया गया कि धीगडा की साहस की कसौटी पर परीक्षा की जाय। धीगडा इसके लिए तुरत ही तयार हो गये।

उनके मित्रो मे से एक मित्र बहुत नुकीली और मोटी सुई ले आया इसने मदन भाई को अपना हाथ का पजा मेज पर रखने को कहा। मदन भाई ने निसकोच हसते हुये पजा, मज पर फैला दिया। सभी की आखें उनके पजे पर लगी हुई थी। जो युवक सूजा लेकर आया था उसने मदनलाल धीगडा के हाथो मे धीरे सुई चुभाना आरभ किया। इसके बाद तो वह उस सूजे को कसकर दबाता रहा। सूजा हथेली को पार करता हुआ, चमडी को चीरता हुआ, मास को फाडता हुआ मज की सतह तक जा पहुचा। लेकिन मदन भाई के मुह पर जरा भी शिकन नही आई। उनके चेहरे पर जरा भी वेदना के भाव नही थ वल्कि वह पहले की ही तरह मुस्करा रहे थे। हाथ से भल भल खून वह रहा था। उपस्थित कई लागो के मुह से चीत्कार निकल रही थीं। कईयो की आखो म वेदना की कल्पना कर के ही आसू वह चले थे। पर मदनलाल धीगडा बिलकुल पत्थर की तरह खड रहे। सुई निकल जान के बाद भी उनके चेहर पर जरा भी अतर नही झलका। यह उनकी अग्नि परीक्षा थी, जिसम वह सफल साबित हुये थे।

उस समय उपस्थित सभी मित्रो, सावरकर तक की आखें मदन भाई की सहनशीलता, निर्भीकता देख कर बहुत बुरी तरह भीग गयी। जिन्

मित्र ने उनकी सुई चुभोकर परीक्षा ली थी वह तो फूट फूट कर रोने लगे और अपनी गलती का क्षमा मागन लग।

पर मदन भाई को किसी से कोई गिला शिकवा नहीं था, वह अपने मित्रा और प्रशसको के बीच खरे साबित हुय थे, सच्चे साबित हुये थे। उस दिन सारे मित्रो को उनकी निर्भीकता, देशभक्ति और सहनशीलता पर अटूट विश्वास हो गया। इन व्यक्तियो में सावरकर भी प्रमुख थ। कुछ विद्वानो ने इस घटना का वर्णन करते हुये मदन भाई की परीक्षा लेने वालो म सावरकर का ही नाम लिया है।

असफल प्रयास

इस अग्नि परीक्षा म उत्तीण हाने के वाद मदनलाल धींगडा इडिया हाउस म एकत्रित हाने वाले सभी क्रातिकारियो की और सावरकर जी के विश्वासपात्र वन गए थे।

सावरकर की सलाह पर मदन भाई को यह आदेश दिया गया कि वह अपने सम्बन्ध इडिया आफिस और नेशनल इडिया ऐसोसिएशन से ज्यो के त्यो रखे। ताकि अग्रेज सरकार की क्रातिकारियो के खिलाफ चल रही कारवाईया का अता-पता चलता रहे।

धीगडा प्रतिदिन इडिया आफिस और नेशनल इडियन ऐसोसिएशन के दफ्तरो म जाते । वहा इन दोनो ही सस्थाओ के प्रमुख सर कर्जन वामली से उनकी मुलाकात हाने लगी। सर कर्जन वामली मदन भाई के साथ ऐसा व्यवहार करते जसे वह उनके और भारत के कल्याण के लिए मर जा रहे हा।

इधर धीगडा भी सर कर्जन वामली से ऐसा व्यवहार करत जसे माना उनकी कर्जन वामली के प्रति अगाध श्रद्धा था। दोनो ही एक-दूसरे का छल बल स अपने अपने कामो को सिद्ध करने के लिए तौल रह थे।

एक दिन बाता ही बाता म कर्जन वामली ने मदन भाई से इडिया हाउस म होन वाली गतिविधियो की पूरी-पूरी जानकारी चाही। साथ ही यह भी इच्छा प्रकट की कि वह वहा के सारे गुप्त भेद उन्हें बतला दें।

धींगडा सावरकर जी से मिलकर उन्हे कर्जन वामली की सारी गतिविधियो की जानकारी दे आते। सावरकर जी की ही सहमति से मदन भाई इडिया हाउस की थोडी बहुत जानकारी कर्जन वामली को दे दिया करते थे।

सावरकर और मदन भाई अच्छी तरह जानते थे कि यह सब एक नाटक-मात्र था। जिसमें कुछ भी सच्चाई नहीं थी।

पर इंडिया हाउस के कुछ लोग मदन भाई को गद्दार और देश द्रोही कहने लगे। जिसे मदन भाई अपनी आदत के अनुसार हंस कर टाल देते थे।

असलियत तो दो-तीन लोगों ही तक सीमित थी। यानि सावरकर जी, श्याम जी कृष्ण वर्मा और स्वयं मदनलाल धींगडा तक।

मदनलाल धींगडा लंदन में नित्य अपनी डायरी लिखते और रोज ही अपने गामज पिस्तौल से गोली चलाने का अभ्यास करते थे।

मदनलाल धींगडा का पूरा परिवार अंग्रेज सरकार का भक्त था। उनके पिता डा० साहब दित्तामल और छोटा भाई कुंदनलाल सर कर्जन वामली से पुराने परिचित थे। जब कर्जन वामली हिंदुस्तान में अजमेर प्रभाग के चीफ कमिश्नर थे तब से डा० साहब दित्तामल से उनके स्नेह-पूर्ण संबंध थे। उनके छोटे पुत्र कुंदनलाल जिनका अपना निजी स्वतंत्र व्यवसाय था के भी सर कर्जन वामली से मधुर सम्बन्ध थे। दोनों ही बाप बेटे सर कर्जन वामली को पत्र लिखा करते कि वह उनके अजीज मदनलाल की पूरी पूरी सहायता करें ताकि मदन भाई का पूरा-पूरा कल्याण हो सके।

सर कर्जन वामली भी उन दोनों को यानी भारत में मौजूद मदन के पिता डा० दित्तामल और उनके छोटे भाई कुंदनलाल को मदन के सम्बन्ध में सूचना दिया करते थे जिस पर भारत में मदन के परिवार वालों को बहुत कम विश्वास होता था। वह यह अच्छी तरह जानते थे कि उनका वंशधर मदनलाल धींगडा अंग्रेजों के साथ मित्रता का दिखावा भले ही करें अंदरूनी तौर पर उनका पक्का दुश्मन है।

कुछ मदन के पिता डा० दित्तामल के पत्रों से और कुछ मदन की गतिविधियों से कर्जन वामली को मदनलाल धींगडा की विश्वसनीयता पर शक हो गया, जिसका जिक्र उन्होंने भारत में स्थित उनके पिता डाक्टर दित्तामल से भी कर दिया।

डा० साहब दित्तामल ने अपने पुत्र मदनलाल धींगडा को पत्र लिखा

जो उन्होंने सर कर्जन वायली के पते पर लंदन भेजा था। सर कर्जन वायली ने १३ अप्रैल १९०९ को मदनलाल धींगड़ा को एक पत्र लिखकर बुलाया जिसके अनुसार उन्हें ३० अप्रैल १९०९ के बाद दोपहर ग्यारह बजे से लेकर साढ़े तीन बजे के बीच किसी भी समय मदनलाल धींगड़ा से मिलकर बहुत प्रसन्नता होगी।

इस पत्र को प्राप्त कर मदनलाल को बहुत मस्त क्रोध आया। उन्हें यह पहली बार अहसास हुआ कि उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए सर कर्जन वायली ने यह पत्र उन्हें लिखा है। इस पत्र को उन्होंने भारतीय व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप माना।

इस बार कर्जन वायली से वह फिर दोबारा मिलने नहीं गए। उसी दिन से उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि कर्जन वायली को अब सबक सिखलाना ही पड़ेगा। सर कर्जन वायली की भारत विरोधी गतिविधियां काफी बढ़ चुकी थीं। जिस कारण सावरकर समेत अन्य सभी क्रांतिकारी अब यह सोचने लगे थे कि सर कर्जन वायली को किसी तरह इस मार्ग से हटा दिया जाये ताकि भारत की आजादी का मार्ग और सुगम बनाया जा सके।

अपने मित्र क्रांतिकारियों के समक्ष मदनलाल धींगड़ा यह घोषणा कर चुके थे कि सर कर्जन वायली को मौत के घाट उतार कर ही मानेंगे। उनकी इस बात का सावरकर समेत सभी लोगों ने समर्थन किया था। पर सावरकर यह चाहते थे कि मदन भाई जो भी काम करें पूरी योजना बनाकर व ठोक-बजा कर करें ऐसा ना हो कि बाद में उन्हें पछताना पड़े।

पर मदनलाल धींगड़ा तो किसी और ही मिट्टी के बने हुए थे। योजनाबद्ध तरीके से कोई काम करना उन्हें बिल्कुल ही पसन्द नहीं था। वह सब काम अपने मनमाने तरीके से करते थे। उनके पास पिस्तौल थी व उनका शिकार कर्जन वायली भी खुला घूम रहा था।

कुछ सूत्रों के अनुसार ६ जून के आस पास जब सर अपनी मोटर पर सवार होकर जा रहे थे तभी पेड़ों के में से मदन भाई ने उन पर गोली चला दी। बदकिस्मती से

कजन वामली का बिना किसी नुकसान पहुंचाए ही भटक गयी। सर कजन वामली की जान बच गयी। जब तक मोटर रुकी और गाली चलाने वाले की तलाश की जाती तब तक मदन भाई गायब हो गए। तब तक आज जसी आतंकवादी स्थिति नहीं आई थी और कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि जहां अंग्रेजों के साम्राज्य की राजधानी लंदन में कोई भारतीय थूकने की भी हिम्मत नहीं कर सकता था वहां कोई भारत का व्यक्ति एक उच्च अंग्रेज अधिकारी पर गाली चलाने की कोई हिम्मत कर सकता है। इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। जब तक खोजबीन हुई मदन भाई झाड़ियों के पीछे से भाग चुके थे।

बाद में बात आई गयी हो गयी। मर कजन वामली और पुलिस यह मानने लगी शायद यह गोली किसी और के लिए चलाई गयी थी या संयोगवश ही उस समय चल गयी। जब सर कजन वामली की मोटर उधर से गुजर रही थी।

सावरकर से यह घटना छिपी नहीं रह सकी। वह यह भी अच्छी तरह समझ गए कि इस घटना के पीछे किसका हाथ है। उन्होंने इंडिया हाऊस आने पर मदन भाई को बहुत फटकारा और फिर समझाया कि बिना योजना बनाये कोई काम ठीक से नहीं होता। इस गोलाबारी में कर्जन वामली के बच निकलने का यही कारण है।

सावरकर के सामने मदन भाई ने अपनी गलती स्वीकार कर ली व इसके साथ ही यह वायदा भी कर लिया कि वह अब बिना योजना बनाए उत्तेजनावश कोई भी काम नहीं करेंगे।

मदन भाई के इस वायदे से सावरकर ऊपरी तौर पर आश्वस्त अवश्य हो गए। पर वह मदन भाई की जिद्द को अच्छी तरह जानते थे। वह कभी भी कहीं भी कुछ भी ऐसा कर सकते थे जो उनके लिए अच्छा साबित नहीं होता। सावरकर यह चाहते थे मदनलाल धींगड़ा जसा निर्भीक और वीर व्यक्ति कुछ ऐसा काम करे जो जमाना देखे, पर साथ ही उनकी कीमती जान भी व्यर्थ ना जाए। क्योंकि मदन भाई से उन्हें आगे भी बहुत सी उम्मीदें थीं।

आखिर हसरत पूरी हुई

इस बीच मदनलाल धींगड़ा, सर कर्जन वामली की हत्या का अपना इरादा भूले नहीं थे। बल्कि अब वह इस नेक काय को सावरकर जी की आज्ञानुसार पूरी योजना बनाकर ही सम्पन्न करना चाहते थे।

इस कारण अब उनको उस अवसर की तलाश थी जब वह सर कर्जन वामली को मौत के घाट उतार सकें। सच बात तो यह है लार्ड कर्जन वामली के काले डेथ वारण्ट पर उसी समय दस्तखत हो चुके थे, जब मदन भाई ने उन्हें मारने का निश्चय कर लिया था।

एक दिन मदनलाल धींगडा जब नेशनल इंडियन ऐसोसिएशन के दफ्तर में कुमारी ऐमा नेक से मिले। काफी देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं। बातों ही बातों में जब मदन भाई ने किसी दिन ऐमा नेक से शाम को कहीं मिलने का कार्यक्रम बनाने को कहा था।

तब ऐमा नेक ने अपनी असमर्थता जताते हुए बतलाया कि वह इन दिनों बहुत व्यस्त है क्योंकि २ जुलाई १९०९ को लंदन के इस्टीट्यूट ऑफ इम्पीरियल स्टडीज के जहांगीर हाल्स में एक भव्य समारोह आयोजित होने वाला है जिसकी अध्यक्षता सर कर्जन वामली करेंगे। यह बात सुनते ही मदन के कान खड़े हो गए। उन्हें अपना सपना अब सच होता हुआ लगने लगा।

उन्होंने ऐमा नेक से इस समारोह की पूरी पूरी जानकारी खोद खोद कर पूछ ली। उन्होंने इस सावजनिक समारोह में ही कर्जन वामली के जीवन का अन्त करने का फैसला कर लिया।

२० जून को वह सीधे सावरकर से मिले और उन्हें अपनी पूरी योजना समझा दी, जिसे सुनकर सावरकर बहुत ही प्रसन्न हुए।

उन्होंने उसी समय धींगडा को इस शुभ काम के लिए अग्रिम बधाई दे दी। एक जुलाई १९०९ के दिन गुरुवार का वह पवित्र दिन था जिस दिन कन्हाई दत्त, खुदीराम बोस की हत्या और श्रीगणेश सावरकर काला पानी की सजा का बदला गिन गिनकर वजन वायली से लिया जाना था।

अब मदनलाल धींगडा बडा ही बेसब्री से उस शुभ दिन का इंतजार कर रहे थे जिस दिन वजन वायली की तडपती हुई लाश उनकी आंखों के सामने होगी।

धीरे धीरे करके दिन गुजरते चले गए और १ जुलाई का शुभ दिन आ गया। सारा दिन मदन भाई अपने घर में ही आनन्द से सोते रहे।

तीन साढे तीन बजे सोकर उठे और सीधे अपने निशानबाजी के इंस्टीटयूट जा पहुंचे। जहां एक से लेकर बारह तक गोलियां चला कर उन्होंने अपने अचूक निशाने की परीक्षा की। शाम को ही रात का भोजन कर लिया।

शाम को छह बजे वह लौटकर अपने घर आए। नहा धोकर उन्होंने अपना बेहतरीन सूट पहना, स्टिफ कालर पहना, टाई बांधी, सिर पर अपनी कलफ से कडक नीली पगडी बांधी। कोट की जेब में एक रिवाल्वर दो पिस्तौलें और दो चाकू साथ में रखे। जूते पहने मां काली को हाथ जोडकर प्रणाम किया। इसके बाद एक बार चलते चलते अपने घर पर एक निगाह डाली। अब दोबारा शायद ही इस घर को देखना नसीब हो। भले ही किराये का था पराये शहर पराये देश की धरती पर था, फिर भी वहां जीवन के सुख दुख से भरे तीन साल गुजरे थे।

लंदन के इम्पीरियल इंस्टीटयूट आफ स्टडीज का वार्षिक समारोह जहांगीर हाउस में हो रहा था। जो बडे ही भव्य ढंग से सजाया संवारा गया था। सारा हाल रंगीन गुब्बारों और कागज की रंगबिरंगी झंडियों से सजाया गया था। रंगीन रोशनी और हलका संगीत समारोह की भव्यता में अपनी अलग ही छटा बिखेर रही थी। हाल का वातावरण बडा ही मनमोहक लग रहा था।

हाल मे बनाव शृगार से सजी ध[illegible] वह
समारोह मे बडी सख्या मे भारतीय प्रशासनिक अधिकारी, अग्रेज
सिविल सर्वेंट, सेवानिवत अग्रेज सिविल सेना सरकारी अधिकारी व
इग्लड के गणमान्य नागरिक शामिल हुए थे। रात आठ बजे के करीब
मदनलाल धीगडा सजे-सवरे हुए हाल म दाखिल हुए। तब तक इस
समारोह के मुख्य अतिथि सर कजन वामली आए नहीं थे।

मदन भाई समारोह म आई महिलाओ से मिलने-जुलने लगे, जिनके बीच म वह बहुत ज्यादा लोकप्रिय थे। इसके बाद सगीत समारोह आरम्भ हो गया, जिसम उपस्थित सभी लोग बडे ही मनोयोग से सम्मिलित हो गए।

तभी ऐमा नक आ गयी जिनमे मदनलाल धीगडा बडे ही प्रेम से मिले व उनसे उनके हाल चाल पूछते रहे तथा तरह-तरह के मजाक करते रहे। उनकी प्रसन्नता और स्नेहपूर्ण व्यवहार देखकर कोई भी व्यक्ति उनके मन की बात नहीं भाप सकता था।

रात दस बजे के करीब सर कजन वामली ने अपनी पत्नी के साथ इस समारोह मे प्रवेश किया। उनकी पत्नी सबका अभिवादन करती हुई अपनी महिला मण्डली मे जा मिली और सबके हाल चाल पूछने लगी।

सर कजन वामली भी उपस्थित व्यक्तियो से मुलाकात करने लगे। मदनलाल धीगडा भी ऐमा नेक से क्षमा याचना करते हुए उठे और सर कजन वामली के पास आए। उनसे हाथ मिलाकर पहले उनकी कुशलक्षेम पूछी फिर जसी अग्रेज अभिजात्य वर्ग की विशेषता है वह सर कजन वामली से लदन के मौसम पर चर्चा करने लगे।

कजन वामली बडे स्नेह से उनसे बातचीत कर ही रहे थे कि अचानक मदनलाल धीगडा ने अपने कोट की जेब से एक वल्जियम रिवाल्वर निकाली और सर कजन वामली के चेहरे को लक्ष्य कर घोडा दबा दिया। एक एक कर पाच घातक गोलियां सर कजन वामली के चेहरे पर धस गयी। किसी को भी यहा तक कि कजन वामली तक

को भी पलक झपकने का मौका नही मिला। इस बीच एक पारसी डाक्टर कावस खुर्शीद जो लालका सर कजन वामली को बचाने को झपटा तो मदनलाल धींगडा की रिवाल्वर का रूख उसकी ओर हो गया और वह भी मदनलाल धींगडा की छठी गोली का शिकार हो गया।

सर कजन वामनी का खूबसूरत चेहरा गोलियो स भुनकर इतना विकृत हो गया था कि पहचान म ही नही आ रहा था। उनकी तत्काल मृत्यु हो गयी थी। सारा वातावरण स्तब्ध था। जब लोगो को होश आया तो मदनलाल धींगडा की ओर झपटे जिसके जवाब म मदनलाल धींगडा न जेब स चाकू निकालकर लहराया।

इससे उपस्थित सार लोग डरकर अपनी सुरक्षा के लिए इधर उधर भागन लग। तब मदनलाल धींगडा न बडी दिलेरी से लोगो से आराम से बैठन को कहा और एलान किया कि किसी को भी उनस घबरान की कोइ आवश्यकता नही है। उन्होने अपना काम कर लिया ह अब किसी को भी उनसे घबराने की जरूरत नही है। क्योकि वह कोइ पेशेवर हत्यार नहीं ह । ना ही वह यहा हत्यायें करने आए है। इसके साथ ही मदनलाल धींगडा न बडे ही इत्मीनान से अपनी खुली हुई पगडी को बाधा। एक अग्रेज दशक न जब उन्ह हत्यारा कहकर सम्बोधित किया तो उन्होन उसे गुस्से से झिडकते हुए कहा, "म एक दशभक्त भारतीय हू। मैन सर कजन वामली को मार कर कोई भी गलत काम नही किया है। अगर आज इग्लैड के ऊपर जमनी का शासन हो जाये तो कोई भी अग्रज दासता से अपना पीछा छुडाने के लिए ऐसा ही कदम उठाता । मैंने जो भी किया अपने दश के लिए किया है, जिसके लिए मुझे जरा भी ग्लानि नहीं है।"

तब तक किसी न लदन पुलिस को टलीफोन पर सूचना द दी थी। मदनलाल धींगडा ने उस स्थान से भागने का जरा भी प्रयास नहीं किया। वह बडी ही शान से और इत्मीनान से खडे हुए हसते रह और लोगो से हसी मजाक करत रहे।

लदन पुलिस ने आकर तुरन्त ही मदनलाल धीगडा को गिरफ्तार कर लिया। अपनी गिरफ्तारी के समय तक मदनलाल धीगडा शात-चित्त थे। उन्होने पुलिस प्रमुख से कहा, "जरा दो मिनट रुकना जरा मैं अपना चश्मा ठीक कर लू।" सयोगवश उस दिन सावरकर लदन मे उपस्थित नही थे बल्कि अपने एक व्यक्तिगत काम से रीडिंग नामक कस्बे की यात्रा पर गए थे।

मदनलाल धीगडा को गिरफ्तार करके तुरन्त ही मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया, जिसने उन्हे सात दिन तक पुलिस रिमाण्ड देकर हिरासत मे ही पेण्टोनविली जेल मे रखने का आदेश दिया, जहा राता रात ही मदनलाल धीगडा को पहुचा दिया गया।

तूफान के बाद

मदनलाल धींगड़ा का नाम, अचानक ही सारे इंग्लैंड में और बिजली जैसी तेजी से सारे हिन्दुस्तान में फैल गया। सारे भारत के क्रांतिकारियों के बीच खुशी की लहर दौड़ गयी। कर्जन वायली उन सबका पक्का दुश्मन था। उसकी मृत्यु का समाचार तो सारे देशवासियों के लिए बहुत ज्यादा खुशी का समाचार था। ऐसा एक निर्मम और निरंकुश व्यक्ति की मौत की खबर उनके लिए बहुत खुशी की खबर थी। और ऐसे व्यक्ति को मौत के घाट तक उतारने वाला व्यक्ति मदनलाल धींगड़ा रातों रात देशभक्त भारतवासियों के बीच हीरो बन गए।

अमृतसर में मदनलाल धींगड़ा के घर भी समाचार पहुंचा। मदनलाल धींगड़ा के पिता डा० साहब दित्तामल ने तुरन्त एक वक्तव्य जारी कर कहा, "इसने मेरे नाम को कलंकित कर दिया है, मैं मदनलाल धींगड़ा को आज से अपना पुत्र ही नहीं मानता हूं।"

मदन के बड़े भाई का कहना था, "मैं इसे अपना भाई मानने को ही तैयार नहीं हूं। इसने सर कर्जन वायली जैसे महान व्यक्ति की हत्या करके जो गम्भीर अपराध किया है, उसकी कड़ी से कड़ी सजा इसे मिलनी चाहिए। उनके इस दुष्कर्म के प्रति घर की यानि परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।"

जहां उनके परिवार के लोग उनकी बुरी तरह निन्दा कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर बहुत से ऐसे देशभक्त भारतीय थे जो उन्हें अपना सगा भाई समझ रहे थे, सगा पुत्र समझ रहे थे।

२ जुलाई की सुबह के समय लंदन पुलिस के कमिश्नर की ओर से शिमला स्थित सेंट्रल क्रिमीनल इंटेलीजेंस के डायरेक्टर के नाम एक तार भेजा गया, जिसमें लिखा गया था, "कल रात को ग्यारह बजे मदन-

लाल धींगडा द्वारा जो गुरदासपुर के सिविल सर्जन का पुत्र बतलाया जाता है। सर डब्लू० कर्जन वायली की हत्या कर दी गयी है। उसी के साथ एक पारसी सज्जन जिसका नाम कावस लालका है मारे गए हैं। अभियुक्त के सम्बन्ध में जानकारी लौटता डाक से भेजें।

इस तार की प्रतिलिपि से कलकत्ता का बंगाल की पुलिस को यह डर महसूस हुआ कि कहीं मदनलाल धींगडा बंगाली ना हो।

मदनलाल धींगडा को रात भर नींद नहीं आई। वे अधिकतर अपना समय, अपना बयान तैयार करते रहे, जो वह फांसी के समय पढ़ना चाहते थे। पैंटानविली जेल के अहाते में उन्होंने अपना यह बयान रात में कई बार पढ़ा और उसे जोर-जोर दोहराया। जब जब वह अपना यह बयान दोहराते उनका चेहरा बुरी तरह दमक उठता व उनकी आंखों में अनोखी चमक आ जाती। मदनलाल धींगडा बार बार अपने इस बयान को जब तक पढ़ते रहे जब तक उनके मन की आग शांत नहीं हो गयी और वे इस लायक नहीं हो गए कि उसे संयत स्वर में गंभीरता से पढ़ सकें।

सावरकर के रीडिंग से लौटने के बाद ५ जुलाई १९०९ को इंडिया हाउस में एक सभा आयोजित की गयी, जिसका उद्देश्य मदनलाल धींगडा के इस कुकृत्य की निंदा करना था। सबसे पहले वक्ता सावरकर ही थे।

सावरकर ने एक स्वर से धींगडा के इस कार्य को देशभक्ति का कार्य बतलाया और मदन भाई को देश का सच्चा सपूत बतलाया। सावरकर की इस बात से ही उक्त सभा में तीव्र उत्तेजना फैल गयी। कई लोगों ने उठकर सावरकर का सख्त विरोध किया और उन्हें धक्के मारकर इस सभा से निकाल दिया गया।

यहां स्थिति सरोजनी नायडू के भाई वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय की हुई जिन्होंने सावरकर की ही भांति मदनलाल धींगडा के कार्य को देश भक्ति का कार्य ठहराया था। वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय के सिर की कीमत बाद में अंग्रेजी सरकार ने जिंदा या मुर्दा १० हजार पौंड आंकी थी।

लदन टाइम्स म लिस अपन पत्र म श्री चटटोपाध्याय न कहा—'भविष्य म फासी के तख्त पर चढन वाला की सख्या और अधिक हा जाएगी और इसकी जिम्मदारी उन लागा पर ही होगी। जो ये सोचत ह कि भारत की स्वतन्त्रता की अवहेलना करके, भारत पर हमशा ब्रिटन का कब्जा बनाए रखा जाए।'

इस सभा के बाच म जस ही सभा के अध्यक्ष आगा खान न, मदन लाल धीगडा के काय की निदा किए जान का प्रस्ताव रखा था। तभी सावरकर अपन मित्रा क साथ फिर वापिस उसी सभा भवन म लौट आए। उन्होने चिल्लात हुए कहा एक साहसी भारतीय युवक अपन प्राणा की बलि चढा रहा ह और आप सब भारतीय होत हुए भी उसका कोई साथ नहीं दे रहे ह। अगर साथ भी नही द सकत है ता निन्दा प्रस्ताव रखन का अधिकार का भी नहीं है।

आगा खा क्रुद्ध हो गए वह बाले यह प्रस्ताव पास होकर हा रहगा। सावरकर ने कहा, तो यह सर्वसम्मत प्रस्ताव कभी नही हा सकता।

सावरकर के इतना कहते ही आगा खान की बालती बद हा गई। बाकी उपस्थित सारे भारतीय इधर-उधर सरक गए। इस स्थिति का दख कर एक अंग्रेज व्यक्ति बहुत ही कुपित हुआ। उसन सावरकर के मुह पर एक घूँसा जमा दिया और बाला, इस घटना से हुआ अग्रेज जाति क नुकसान का इतना फल ता भुगत ला।

चोट से सावरकर जी का चश्मा टूट कर गिर गया और उनकी नाक से खून बहन लगा। पर सावरकर जी ने बिना विचलित हुए कहा—चाहे जा हो जाए म इस प्रस्ताव का हमशा विराध करता रहूगा।

इसी बीच सावरकर के साथी क्रातिकारी तिरूमल आचाय ने अपना डडा उठाकर उस अग्रेज की अच्छी-खासी पिटाई कर दी। और इसके बाद उससे बोले—अब जरा भारतीय क्रोध का मजा भी ता ले लो। वह अग्रेज अधिकारी अपनी लगडी टाग घसीटता हुआ कायरा की तरह दुम दबाकर ही भाग गया। एक ओर सावरकर जस धीगडा के मित्र थे जो हर हाल मे उनसे प्रेम करते थे और उनके सम्मान का रक्षा करना अपना परम कर्तव्य समझते थे।

दूसरी ओर उनके जन्मदाता उनके पिता डा० साहब दित्तामल थे जिन्होंने लार्ड मिंटो के निजी सचिव सर डनलप मिंटो को एक पत्र लिखा—जिसमे उन्होंने अपनी तीस साल की महत्वपूर्ण सरकारी सेवा का हवाला देते हुए अग्रेज सरकार के प्रति दर्शाई गयी वफादारी का भी जिक्र किया। इसके बाद उन्होंने इस बात पर सख्त अफसोस जाहिर किया कि, "हमारा परिवार अपने इस पागल पुत्र के इस भयावह और हृदय विदारक कुकृत्य के लिए अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है। मैं विश्वास दिलाता हू कि मैं अपने इस दुष्ट पुत्र की मृत्यु से कतई दु खी नही होऊगा। किन्तु उस महान व्यक्ति सर कर्जन वायली की दुख द मृत्यु से बहुत ज्यादा ही दु ख व कष्ट महसूस कर रहा हू। मेरे उक्त दुष्ट पुत्र के इस कार्य ने अपने सारे परिवार को इस असम्मानजनक स्थिति मे पहुचा दिया है। हमारा परिवार सदा सरकार का कृतज्ञ रहा है जिसने हमे बहुत सम्मान और सहूलियतें दी ह।"

७ जुलाई को मदनलाल धींगडा के दो बडे भाईयो ने सर स्मिथ से व्यक्तिगत मुलाकात की। उनके समक्ष लिखित उद्घोषणा की हम मदनलाल धींगडा को शहीद नही मानते है जैसा कि कुछ लोग कह रहे ह। हम तो उसे पागल करार देते है और उसके इस कार्य की पूरी निंदा करते ह व इस कार्य को अमानुषिक कार्य ठहराते हैं।

मदनलाल धींगडा के कानो को अपने मा जाये सगे भाइयो के सद्-विचार और अपने पिता की अग्रेजो के प्रति गुलामो जसी भाषा के पत्रो की पूरी-पूरी जानकारी मिल गयी थी। यह सब जानकर उन्हे अत्यत वेदना हुई।

जब सावरकर जी उनसे मिलने ब्रिक्स्टन कारागार मे गए तो मदन भाई बड़ी ही आह्लादपूर्वक मिले और बोले, "सावरकर जी मैंने जो किया अच्छा किया मैंने लालका को जबरदस्ती नही मारा था। वह तो बीच बचाव मे कूद गया इसलिए मर गया। कर्जन वायली को मारकर मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया है, मेरी मृत्यु के बाद मेरे शरीर को आप ही हाथ लगाना और कोई अहिन्दू मेरे मृत शरीर को भी हाथ न लगाए। मेरा अन्तिम सस्कार आप हिन्दू पद्धति से करना और

मेरा सामान नीलाम करवाकर जो धन इकट्ठा हो उसे क्रांतिकारियों के लिए बने कोष मे दान दे दिया जाए।"

सावरकर और मदन भाई दोनों ही जानते थे यह उनकी अन्तिम भेंट है। क्रांतिकारियों की जान तो हमेशा ही हथेली पर होती है। पर इस बात से दोनों ही जरा भी विचलित नहीं थे। अन्तिम बार गले मिलते समय भी दोनों ही देश के सपूतों ने अपनी आंखों में आंसू अपनी अपनी आंखों मे ही दबा लिए। कहीं किसी के आंसू देखकर दूसरे का मन कमजोर ना पड जाए।

ऐतिहासिक मुकदमा

कापी तयारिया के बाद ब्रिटिश पुलिस ने मदनलाल धींगडा को "१० जुलाई १९०९ को लंदन के वेस्ट मिनिस्टर स्थित 'ओल्ड बली कोर्ट' पेश किया। उस समय तक मदनलाल धींगडा सारे संसार मे चर्चित हो चुके थे। इसलिए सारे लंदन के भारतवासी व लंदन के भारत विरोधी नागरिक भी उस व्यक्ति को देखने के बहुत इच्छुक थे, जिसने एक उच्च पदस्थ अग्रेज अफसर को भरी हुई सभा मे मौत के घाट उतार दिया था।

मदनलाल धींगडा, ब्रिक्स्टन कारागार म भी उतने ही प्रसन्नचित थे जितने अपने घर १०८, लैडी बेरी रोड पर रहते थे। उन्हें मां-बाप, पत्नी, एकमात्र पुत्र और सगे भाईयो की न कोई परवाह थी ना ही कोई मोह ममता थी। उन्हे चिन्ता थी तो अपने प्यारे देश हिन्दुस्तान की, जिसकी धरती पर उस समय अग्रेजो का राज्य था।

१० जुलाई १९०९ को ओल्ड बली की अदालत मे भी मदनलाल धींगडा अपनी मस्त चाल चलते हुए, शेर जसी शान से अदालत मे दाखिल हो गए। उनके अदालत म पहुचते ही शोर मच गया। अग्रेज मजिस्ट्रेट ने बडा मुश्किल स शोरगुल कम कराया और मदनलाल धींगडा से पूछा, "क्या उन्हे अपनी सफाई म कुछ कहना है। मदनलाल धींगडा ने अपनी जेब म एक वक्तव्य निकालकर दिखलाते हुए कहा मैं अपने इस कार्य को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए अवश्य मुझे कुछ कहना है। मैं इसे उचित नही मानता हू कि किसी अग्रेज अदालत को यह अधिकार हो कि मुझे सजा दे, या मुझे जेल मे रखें या मृत्युदण्ड दें। यही कारण है कि मैंने अपने बचाव के लिए अब तक कोई वकील नही किया है। लेकिन मैं यह मानता हू कि किसी भी अग्रेज को जब राष्ट्र-भक्त माना

जाएगा यदि वह उन जमना क खिलाफ लड जा कि उसक दश पर अपना अधिकार करने आए हो। यह वात विशेष रूप स मरे दम मुक्दम म यायाचित है कि मैं भी अग्रेजा के विलाफ मघर्ष करू। मैं अग्रेजो का अपने दश के तीस कराड आदमिया का खूनी मानता हू। मरा आशय ५० वर्षों क उनक काले कारनामा से है। यही नही, व प्रतिवप १० कराड पोण्ड का धन भारत स अपने देश इग्लैड म ले जाते है। मैं उनका अपने देशवासिया को सताने और अनेक को मृत्यु दण्ड दने का जिम्मदार भी ठहराता हू। वे हमारे देश मे जाकर वही काय करते है जा यहा रहने वाले अग्रेज उनका सलाह दत है। एक अग्रेज जा हिदुस्तान मे १०० पौड प्रतिमाह वेतन पाता है उसकी इम तनखा का सीधा अथ यह है कि वह मरे गरीब देश के एक हजार आदमिया का खाना छीनकर उह मौत के मुह म धकेलता है। मरे एक हजार दशवासी उस १०० पौड से एक माह तक बहुत आराम की जिन्दगी जी सकते हैं जिसे ये अग्रेज अपने एशो आराम और एय्यासी म खतम कर देत हैं।

जिस प्रकार जर्मना का यह अधिकार नही है कि वह इस दश पर अपना कब्जा करें उसी प्रकार अग्रेज जाति का भी यह अधिकार नही है कि वह अपना अधिकार मरे दश भारत पर अपना प्रभुत्व जमाए रह और यह भी पूणत यायोचित है कि हमारे पवित्र देश का जा अग्रेज अपवित्र करना चाहते है उनको भी मात के घाट उतारा जाए। जब मैं अग्रेजो का शोषित मानवता अर्थात् कागो आदि देशा की जनता क रक्षक होने का दावा करत देखा है तो मुझे हैरत होती है। क्याकि मुझे मालुम है कि वे अपनी मिथ्या शक्ति का प्रदशन और प्रचार का घणित मुखौटा पहन हुए है। यही नही, हिदुस्तान मे वह प्रत्यक वप २० लाख आदमिया की हत्या करत ह और स्त्रियो का अपमान करत है। उनका यह बबर, नशस अत्याचार वहा बढता ही जा रहा है। यदि यह दश जमना के कब्ज मे आ आए और कोई अग्रेज लोग अपन लदन शहर की गलिया मे विजेता क रूप मे जमना को घूमत देखकर किसी जमन को दराकर गुस्से मे भर जाए और उनमे स एक दो का खून कर दे, तो वह

अग्रेज, इस देश का बहुत बडा देशभक्त स्वीकार किया जाएगा। इसी प्रकार मैं भी एक बहुत बडा देशभक्त हूं जो कि अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर रहा हू। इससे अधिक मुझे जो कुछ कहना है वह मेरे उस वाक्य मे है जो मैं इस अदालत मे दे चुका हू। मै यह बयान इसलिए नही दे रहा हू कि मैं किसी प्रकार की दया की भीख माग रहा हू या ऐसी ही कोई मदद चाहता हू। मैं तो यही चाहता हू कि मुझे यह अग्रेज अदालत मौत की सजा दे ताकि मेरे देशवासियो मे विद्रोह की आग और भी तेजी से भडक उठे।"

मदनलाल धीगडा का यह बयान उनके विचारो के अनुरूप था। सावरकर समेत अनेक क्रातिकारियो व देशभक्तो का उनसे इसी प्रकार के बयान की आशा थी। पर साधारण नागरिको और अग्रेज नागरिको को यह बयान चौकाने वाला लगा। कुछ उदारवादी अग्रेज मदनलाल धीगडा के इस बयान से बहुत ज्यादा प्रभावित हुए और ऐसे अग्रेजो का एक अलग वर्ग बन गया जो मदनलाल को किसी सजा का हकदार नहीं मानते थे।

इस मुकदमे को सुनने वाले जज ने इस मुकदमे का फैसला लगभग बीस मिनट से भी कम समय मे ही दे दिया और उसी दिन फासी पर चढाने के इस फसले के साथ ही मदनलाल धीगडा को फासी पर चढाने की तारीख १७ अगस्त १९०९ भी तय कर दी गयी जो कि न्याय के इतिहास मे एक अनोखा कदम बतलाया जाएगा।

आज तक किसी अदालत ने किसी भी अपराधी को फासी लगने की तारीख खुद मुकरर नही की है। क्योंकि किसी भी अदालत का काम फासी की सजा को क्रियान्वित करना नही है क्योंकि फासी देने का काम प्रशासन का है। वही फासी देने की व्यवस्था करती है और वही फासी की तारीख मुकरर करता है। अदालत का काम तो मात्र फासी देना है, उसे क्रियान्वित करने का काम सरकार का है।

पर अन्याय के नाम पर न्याय का ढोंग रचाने वाली सरकार शायद अपने द्वारा निर्धारित नीतियो व प्रशासनिक कार्यों की सीमा को भूल गयी थी या उसने मदनलाल धीगडा जसे अमर शहीद की हिम्मत से

घबराकर ही साम दाम-दंड भेद अपने हाथ में ले लिया था।

मदनलाल धींगडा के इस मुकदमे में न्याय के बुनियादी सिद्धांतों तक को ताक पर रख दिया था। मदनलाल धींगडा का बचाव करने वाला कोई वकील नहीं था। साथ ही उनसे सिवाय सफाई मांगने के और कोई मौका न्याय के नाम पर उन्हें नहीं दिया। न्यायाधीश द्वारा फांसी दिए जाने का फैसला सुनाए जाने के तत्काल बाद ही, मदनलाल धींगडा ने ऊंचे स्वर में कहा, "मुझे इस बात का बहुत गर्व है कि अपने देश की खातिर प्राण उत्सर्ग कर रहा हूं। लेकिन याद रखो—जल्द ही मेरा देश आजाद होगा।"

मदनलाल धींगडा को फांसी दिए जाने की खबर भी मर्स कर्जन वायली की मौत की तरह आग की भांति पूरी दुनिया में फैल गयी।

जगह जगह इस सजा को अन्याय के रूप में लिया जा रहा था। मदनलाल धींगडा ने जो लिखित बयान पुलिस को दिया था उसे ब्रिटिश पुलिस छिपा गयी थी। पर मदनलाल धींगडा चाहते थे कि उनका यह बयान किसी तरह आम जनता के सामने आए।

सावरकर जी के पास इस बयान की प्रतिलिपि थी। उन्होंने क्रांतिकारी ज्ञानचंद वर्मा को इस गुप्त बयान की प्रतिलिपि देकर गुप्त रूप से रातों रात पेरिस रवाना कर दिया ताकि सारे विश्व के अखबारों में यह बयान आ जाए। जर्मनी, इटली, अमेरिका जैसे देशों और लन्दन के प्रमुख अखबार 'डेली न्यूज' ने यह बयान बड़े ही महत्त्वपूर्ण रूप से छापा जो सावरकर के एक अंग्रेज मित्र के माध्यम से ही प्रकाशित हो पाया। १६ अगस्त तक यह बयान सारे अखबारों में आ गया।

बयान इस प्रकार का था—"यह सत्य है कि मैंने एक अंग्रेज का खून बहाने का प्रयत्न किया है। अंग्रेज भारत को जो प्रताड़ित कर रहे हैं यह उसका छोटा सा बदला है। अपने इस कृत्य के लिए मैं अकेला जिम्मेदार हूं। मेरा देश परतंत्र है। स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हम बहुत ही कठोर संघर्ष करना पड़ेगा। हमें हथियार रखने की अनुमति नहीं है। हम यहां बंदूकें नहीं रख सकते हैं। इस कारण ही मैंने पिस्तौल से हमला किया था।

मैं एक हिन्दू हू । अपने राष्ट्र के अपमान को अपने देवता का अपमान मानता हू । म कोई चतुर नही हू ना ही बहुत शक्तिमान हू । अपने लहू के अतिरिक्त मैं अपनी भारत माता को क्या समर्पित कर सकता हू । इस कारण मातृभूमि की सेवा मे मैं अपना रक्त बहा रहा हू । मेरे लिए भारत माता की सेवा ही श्रीराम की सेवा है, श्रीकृष्ण की सेवा भी मेरे लिए भारत माता की ही सेवा है । इसके लिए ही मै अपने प्राण न्योछावर कर रहा हू । मुझे इस बात पर बहुत ज्यादा गर्व है । मेरी यही चाह है कि जब तक भारतमाता स्वतन्त्र नही हो जाती मेरा जन्म बार बार भारत की धरती पर हो ताकि मैं बार-बार अपने प्राण भारत के लिए बलिदान कर सकू । ईश्वर मेरी चाह पूरी करे । वन्दे मातरम् ।

इस बयान ने बहुत ही ज्यादा तहलका मचा दिया । कई अंग्रेज व्यक्तियो ने भी मदनलाल धीगडा के इस कार्य की पूरी तरह सराहना की ।

पर सरकार अपने दृढ निश्चय पर अटल थी । उसने पहले ही मदनलाल धीगडा को कोर्ट द्वारा फासी की सजा और फासी की तारीख १७ अगस्त १९०९ को स्वीकार कर लिया था ।

सन् १९३१ मे भी लाहौर स्पेशल ट्रिब्यूनल ने एक और क्रातिकारी अमर शहीद भगतसिह की फासी की सजा देने के साथ ही फासी की तारीख भी तय कर दी थी । क्राति की जसी परम्परा मदन ने कायम की थी वसे ही नियति ने उनकी फासी की तारीख तय करने वाली बात को भी एक अजीब परम्परा का उदाहरण बना दिया था ।

फांसी

आखिर १७ अगस्त १९०९ का दिन भी आ गया। लदन के पेंटन विले जेल म मदनलाल धीगडा को मृत्युदड की सजा दी जाने वाली थी। मदनलाल धीगडा ता बड ही साहस और बेसब्री से इस मौके का इन्तजार कर रह थे।

सावरकर और उनके मुट्ठी भर साथी आज भी उनको फासी दिए जाने के शोक म भाव विह्वल हुए जा रह थे। उन्होंने इस फासी को दिए जाने के अवसर पर एक पर्चा छपवाया और १६ अगस्त का आधी रात से ही वह लाग इस ऐतिहासिक पर्चे को लेकर लदन की सडका पर आ गए और हर जाने वाले के साथ साथ दौडत हुए वह यह पर्चा थमात और प्राथना करते इसे ध्यान स पढिए भाई साहब, ऐसी हमारी प्राथना है। उस ऐतिहासिक पर्चे मे छपा था—आज १९०९ की १७ अगस्त है। आज का दिन प्रत्येक राष्ट्र भक्त भारतीय के हृदय पर रक्त स अकित किया जाना चाहिए। आज हमारे मित्र और महान देशभक्त क्रांतिकारी मदनलाल धीगडा का पेंटोन विले कारागार मे फासी के तख्ते पर लटका दिया जाएगा। उनकी प्रेरणा शक्ति हमारा सदा ही पथ-प्रदर्शन करेगी। उनका नाम इतिहास मे सुन्दर पृष्ठो पर शोभा बढाएगा। वे अग्रेज हमार स्वतन्त्रता सग्राम को कभी कुचल नही सकत हैं।

१७ अगस्त की भोर तक यह पर्चा हाथा हाथ ही हजारा भारत वासियो और मदनलाल धीगडा के प्रशसका तक जा पहुचा था।

१७ अगस्त १९०९ को फासी के तख्त पर चढ़न से पूव अमर शहीद मदनलाल धीगडा ने अपनी आखिरी इच्छा प्रकट की कि 'मैं अपना

ही मारा जाऊ। यह क्रम तब तक चलता रहे जब तक कि मेरा देश स्वतन्त्र नही हो जाता है ।

मेरे देश मे देशभक्त भारतीय युवको को जो भीषण यत्रणायें दी जा रही ह और जिन बेकसूर लोगो को फासी दी जा रही है उनके प्रति मेरी यह प्रतिक्रिया मात्र है ।"

अपने 'चुनौती' नामक एक अन्य वक्तव्य म मदनलाल धीगडा न कहा था - "मरे को यह विश्वास है कि विदशी सगीनो के साए म पनप रहे राष्ट्र म एक युद्ध की तयारी अवश्य चल रही होगी। चूकि यह लडाई असभव मालूम पडता है और तमाम यद्को पर प्रतिबध लगा दिया गया है, ऐसी स्थिति म म यही कर सकता था कि अपनी पिस्ताल निकालकर गोली मार दू । मेरे जसा गरीब और सामाजिक रूप से अप्रतिष्ठित व्यक्ति यही कर सकता था कि अपनी मातृभूमि के लिए अपना रक्त बहाऊ और यही मैंन किया ह । आज की स्थिति मे हर भारतीय के लिए एक ही सबक है कि वह यह सीखे कि मृत्यु का वरण कसे किया जाए और यह शिक्षा तभी फलीभूत होगी जबकि हम अपन प्राणो का मातृभूमि पर बली चढा दें। इसलिए मैं मर रहा हू और मर शहीद होने से देश का मस्तिष्क ऊचा ही होगा ।"

१७ अगस्त १९०९ की आज सुबह ही मदनलाल धीगडा का फासी के तख्ते पर ले जाया गया। उस दिन उन्होने अग्रेज अधिकारियो स कहा कि "उनके शरीर को हिन्दू रीति से जलाने के लिए सावरकर जी को सौप दिया जाए।" जिसे अग्रेज अधिकारियो ने एक कैदी की अतिम इच्छा क रूप मे भी अस्वीकार कर, अपनी नैतिकता पर एक और कलक का टीका लगा लिया।

मदनलाल धीगड़ा की फासी का कोई गवाह आज भी उपलब्ध नही है पर उनके चरित्र के अनुरूप, हमे आज भी यह पक्का विश्वास ह कि उन्होंने फासी के फद तक हसते हुए ही कदम बढाया होगा । और हसते हुए ही फासी का फदा अपने गले मे ही पहना होगा। आर उसा वीरता से अपने प्राणो को उत्सग किया होगा। उनका चेहरा मरन क बाद भी हसता, खिलखिलाता सा होगा।

मदनलाल धींगडा का शव बिना सावरकर का दिए हुए पैंटानविले के एक अनजान शमशान गृह म चुपचाप गाड दिया गया। उस स्थान पर न कोई स्मारक ही बन सका और ना ही कोई शिलालेख हीं लगाया गया। इतनी शाहरत की मौत मरा यह वीर गुमनाम कब्र के साथ म सोता रहा।

बड ही सरकारी प्रयत्ना व लिखा-पढी क बाद सन १९६३ मे मदन-लाल धींगडा के अवशेषो को इग्लैंड से आजाद हिंदुस्तान लाया गया। यहा पालम हवाई अडडे से यह अस्थि अवशेष अमतसर ल जाए गए। जहा आज भी यह अवशष, उनक कार्यों की ऐतिहासिक याद दिला रहा है। सदा याद दिलाता रहगा।

प्रतिक्रिया

मदनलाल धींगडा को फांसी दिए जाने के बाद आयरिश समाचार पत्रों ने मदनलाल धींगडा को बहादुर व्यक्ति की संज्ञा दी। इसी प्रकार काहिरा से प्रकाशित होने वाले, मिस्र के समाचार-पत्र 'लल पेटी इजिप्श्यन' ने आगामी ४० वर्षों के बीच में ब्रिटिश साम्राज्य के पतन की भविष्यवाणी की थी। इस समाचार पत्र ने ही मदनलाल धींगडा को अमर शहीद की उपाधि दी थी।

श्रीमती ऐनी बेसेंट ने कहा, "इस समय देश को बहुत से मदनलाल धींगडा जैसे अमर शहीदों की बहुत आवश्यकता है।"

वीरेंद्र नाथ चट्टोपाध्याय ने मदनलाल धींगडा की स्मृति में एक मासिक पत्रिका प्रारम्भ की। यह पत्रिका बर्लिन से श्रीमती कामा द्वारा प्रकाशित की जाती थी। इसका नाम 'मदन तलवार' (मदनलाल की तलवार) था। कुछ समय बाद ही यह पत्रिका विदेश में रहने वाले भारतीय क्रांतिकारियों की विचार धाराओं का मुखपत्र बन गयी थी। लेकिन भारत में कांग्रेस अध्यक्ष पंडित महामना मदनमोहन मालवीय ने लाहौर में कांग्रेस के अपने अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए कहा, 'मदन लाल धींगडा ने बहुत ही अमानवीय कार्य किया है जो अशोभनीय अपराध कहा जाएगा।' लेकिन भारत की अपनी जनता ने मदनलाल के इस कार्य को भारतीय इतिहास की अविस्मरणीय घटना मानकर उन्हें शहीद के नाम से विभूषित किया।

१९१९ में प्रकाशित श्री डब्ल्यू० डब्ल्यू ब्लण्ट ने अपनी पुस्तक में अमर शहीद मदनलाल धींगडा की बहादुरी की बहुत प्रशंसा करते हुए लिखा है, "धींगडा ने जिस बहादुरी के साथ एक न्यायाधीश के सामने

अपना ओजस्वी बयान दिया वसा किसी भी ईसाई शहीद ने नही दिया होगा।'

सयुक्त राज्य अमेरिका मे गदर पार्टी का आरम्भ करने वाले लाला हरदयाल के अनुसार, 'धींगडा ने मृत्यु का उसी तरह वरण किया जसे कि पुरान राजपूत वीर और सिख किया करते थे। इग्लड सोचता है कि उसने धींगडा को मार दिया है लेकिन सच यह है कि वह हमशा अमर रहेगा और उसन भारत म अग्रेजा की प्रभुसत्ता को एक करारा तमाचा दिया है ।'

पजाव केसरी लाला लाजपतराय ने, मदनलाल धींगडा का अत्यन्त बहादुर क्रातिकारी की श्रेणी मे रखा। उन्होने ही पजाव म अमर शहीद की प्रतिमा लगाने की अपील की जो आज तक पूरी नही हुई।

सच है जिस व्यक्ति को सगे बाप ने अपना बटा तक स्वीकार नही किया हो, भाइयो ने भाई ना माना हो उसक देशवासी उसका कस आसानी स अमर शहीद स्वीकार कर सकने हैं ।

उपेक्षित मदनलाल धींगडा

वीरा की मौत के साथ ही उनके जीवन की कहानी कभी ममाप्त नही होती है। बल्कि वीर की मौत के बाद ता त्याग और बलिदान का एक अनोखा सिलसिला प्रारम्भ होता है जो अनवरत चलता ही जाता है। और अपने बलिदान से जब तक अपने लक्ष्य की पूर्ति नही हो जाती यह मिलसिला चलता रहता है।

मदनलाल धींगडा के बलिदान के बाद आज तक देश के प्रति जान की बाजी लगाने का यह सिलसिला चलता आ रहा है।

आज भी मदनलाल धींगडा के विषय म कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नही है। अमृतसर की नगर पालिका के जीर्ण शीर्ण अभिलखा म उनके जीवन का काई रिकाड उपलब्ध नही ह। वहा के उस समय के अस्पताला म काई ऐसा रिकाड नही है जो उनकी ठीक-ठीक जन्म तिथि के विषय मे कोई निश्चित सी सूचना दे दे। ना ही धींगडा परिवार के अमृतमर आ वसने का काई सीधा प्रमाण मिलता है। वस ऐसी कुछ सूचनायें है कि मदनलाल धींगडा के जन्म के तीस वर्ष पूर्व ही मदन के पिता डा० साहब दित्तामल ने बहुत सी जमीन-जायदाद इकट्ठा की थी। वह स्वय और उनके सभी पुत्र अग्रजा के मित्र थे। इस कारण मदनलाल धींगडा के बलिदान के बाद उनका पूरा परिवार अंग्रेज सरकार से हर तरह से माफी मागता रहा। इससे भी जब सतोष नहीं मिला तो मदनलाल धींगडा के पिता डा० साहब दित्तामल ने यह घाषित कर दिया कि मदनलाल धींगडा नामक व्यक्ति तो उनका पुत्र ही नही है।

इसी प्रकार मदन के छोटे भाई कुदनलाल ने जो बहुत बडे व्यवसायी थे ने तथा, उनके दा अन्य भाइयो जो वकील और डाक्टर थे, ने भी

मदन के इस दुष्कर काय की निंदा की और यह घोषित कर दिया कि उनका मदनलाल धींगडा से कोई भी सम्बन्ध नही ह वह ना उसे अपना भाई मानते ह और ना ही उनका उससे काइ भी पारिवारिक सम्बन्ध ह। इसका सबसे बडा कारण यही था कि अमर शहीद मदन लाल धीगडा के य सारे भाई अव्वल नम्बर के चापलूस थ। अग्रेज सरकार के इतन ज्यादा वफादार थे कि अपन सगे भाई को भाई कहना तक भी इनको पसद नही आया। इसी कारण इन तथाकथित भाइयो और इन सबके पिता डा० साहब दित्तामल ने निश्चित रूप म अमर शहीद से सबधित सारी जानकारिया अस्पताल से और म्युनिसिपिल दफ्तर से गायब ही करा दी होगी। वस ता डा० साहब दित्तामल स्वय रिटायर सिविल सजन थे और अग्रेज सरकार के उच्च पदस्थ अधिकारी थे। उनके सभी पुत्र अग्रेज हुकूमत के कृपापात्र थे और रिश्वत देकर भी यह काम आसानी स करा सकते थे, ताकि सारी जिंदगी कोई भी व्यक्ति उनका सम्बन्ध मदनलाल धीगडा जस व्यक्ति स नही जोड सके।

यही स्थिति उनकी पढाई के सम्बन्ध म पदा की गयी ह। उनकी पढाइ बीच-बीच म क्यो बन्द हो गयी और फिर काफी समय के लिए क्या पूरी तरह छूट गयी इसका भी कोई पक्का पता नही चलता है। कहा काइ उल्लेख नही मिलता।

आजादी के बाद की हमारी काग्रेस सरकार ने भी अमर शहीद मदनलाल धीगडा के विषय मे कोई विशेष रुचि नही ली। इन लोगो ने भी अपना प्रारभिक समय अपने व्यक्तिगत लाभ और जो कुछ बोया था उसे काटने मे लगाया। अग्रेज सरकार ने तो मदनलाल धीगडा की यह अतिम इच्छा पूरी नही की थी कि वह उनका शरीर उनके परम मित्र श्री विनायक दामोदर सावरकर को सौप दें। कोई भी अहिन्दू उनके शव का स्पश ना करे। और सावरकर पूरी तरह, हिंदू शास्त्र सम्मत वदिक नियमो के साथ उनके शव का अतिम सस्कार दाह-कम करें।

पर न्याय के लिए विख्यात, अन्यायी सरकार ने मदनलाल धीगडा का शव, सावरकर को नही सौपा। बल्कि मदनलाल धीगडा के शव का जानबूझकर, जमीन मे दफनाने का निणय किया गया, जो कि सनातन हिन्दू धम के सवथा विपरीत है। इसका कारण, अग्रज सरकार का वह पत्र है जो इग्लैंड से भारत सरकार को लिखा गया था । पत्र मे लिखा है कि—"हम यह नही चाहते है कि इस शहीद के अवशेष भारत को पासल से भेजे जायें।" सावरकर समेत मदनलाल धीगडा के अन्य बहुत मे मित्र, भारतीय विद्यार्थी १७ अगस्त १६०६ की सुबह से ही पेंटोनविले जेल के सामने आ खडे हुए थे। परतु ब्रिटिश सरकार ने किसी को भी पेंटोनविले जेल के अन्दर घुसने तक की अनुमति नही दी गयी थी।

तभी से काफी लम्बे समय तक माग की जाती रही कि मदनलाल के अवशेषो को उनके आजाद देश को वापिस भेज दिया जाए। तब जाकर ब्रिटिश सरकार ने भारत सरकार के सामने यह स्वीकार किया कि मदनलाल धीगडा की तो कब्र पर काई शिलालेख नही था। उनके नाम का पत्थर भी नही लगा था, उस शव को एक गुप्त सख्या देकर जमीन म गाडा गया था। इस सम्बन्ध म भी काई सूचना नही है कि किसी भारतीय व्यक्ति अथवा भारतीय सस्था ने इस अमर शहीद की स्मृति म कोई समाधि बनाई हो।

शहीद उधमसिंह के अवशेषो को ढूढे जाते समय अचानक ही मदनलाल धीगडा के अवशेष भी मिल गए। उनके अवशेषो का भारत सरकार व लदन स्थित उच्चायुक्त की उपस्थिति मे सन १६७६ मे निकाला गया था। सन १६७६ की १३ दिसम्बर को दिल्ली के पालम अड्डे पर उनके अवशेषो को एक पात्र मे लाया गया, जिसका स्वागत दिल्ली और पजाब के नागरिको ने किया। यह अस्थि कलश कुछ दिना की रेल यात्रा के बाद अपनी मातृभूमि अमृतसर तक जा पहुचा जहा के लोगो न इनकलाब जिंदाबाद के नारो के साथ अमर शहीद के अवशेषो का भव्य स्वागत किया।

मदनलाल धींगडा की परम्परा

अमर शहीद मदनलाल धींगडा की परम्परा का उनके बाद करतार सिंह सराबा, पजाब स उनके अगुआ बनकर आए। उनके साथ ही रास बिहारी बोस ने भी उत्तर भारतीयो के बीच जागृति बनाए रखने के लिए बहुत ही काय किया है। भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद ने भारत म नये प्रकार की लहर पदा की थी।

पर मदनलाल धींगडा ने ही इस बात की प्रेरणा दी थी कि अग्रेज यह सोच लें कि भारतवष मे उनको अब अधिक दिनो तक सहन नही किया जाएगा व क्रातिकारी तरीके से ही हिन्दुस्तान से अग्रेजो को भगाया जा सकता है। खुदीराम बास ने उनसे पहले और सरदार भगतसिंह ने उनके बाद उसी तरह हसते हुए फासी के फदे को गले मे डाला था। इस कारण आज भी मदनलाल धींगडा का नाम भी पक्ति मे रखा जाता है।

मदनलाल धींगडा को फासी दिए जाने के बाद विनायक सावरकर की गतिविधिया बहुत ज्यादा बढ गयी। उनके भाई गणेश जिन्हे सब आदरपूवक नाना सावरकर कहते थे, का एक अग्रेज जज जेक्सन ने कालेपानी की सजा दी थी। यह अग्रेज जज जेक्सन नासिक जिले का ही था। जिसे बाद म अभिनव भारत सस्था के एक सदस्य अनन्त कान्हरे ने एक रगमहल मे गोली मार उसकी हत्या कर दी। अनन्त कोन्हरे को तत्काल पकड लिया गया। बाद मे उसके सभी साथी भी पकडे गए, जिन्हें असहनीय यातनायें मिली।

अग्रेज सरकार का यह मत था कि जेक्सन और कजन वामली की हत्याओ के पीछे विनायक सावरकर का हाथ है। अग्रेज सरकार ने आखिर सावरकर के विरुद्ध मुकदमा दायर कर दिया।

लदन के विक्टोरिया स्टशन पर अचानक सरकार ने सावरकर को गिरफ्तार कर लिया। बाद मे सावरकर को भी मारिया नामक पानी के जहाज से भारत म काले पानी की सजा काटने को भेजा गया।

सावरकर जहाज के शौचालय से कूदकर मार्सेलीन नामक बन्दरगाह पर उतर गए और गायब हो गए। जहा से वह तैरते हुए फ्रास जा पहुचे। जहा फ्रास की जल सीमा में ही पुलिस द्वारा उन्ह गिरफ्तार किया गया।

सावरकर पर भारत म मुकदमा चलाकर दो दो काले पानी की सजा द दी गयी जो एक साथ चल रही थी। सावरकर की यह सजा पचास साल चलने वाली थी। सावरकर तो कवि हृदय थे, उनके बस की काले पानी की सजा नही थी।

सन १९२१ मे स्वास्थ्य की खराबी के कारण उन्ह छोडा गया। वह भी इस शर्त के साथ कि वह रत्नागिरी जिले से बाहर नहीं जायेंगे, ना ही किसी समारोह म भाग लेंगे।

१९३७ में यह बधन भी अग्रेज सरकार ने ही हटा दिए। जिसके बाद सावरकर सक्रिय राजनीति म कूद पडे और हिन्दू महासभा के अध्यक्ष चुन गए।

१९४८ म महात्मा गाधी की हत्या के बाद हिन्दू महासभा पर शक हुआ, इस कारण सावरकर को भारत सरकार न भी गिरफ्तार कर लिया। पर बाद मे उन्ह निष्कलक पाकर छोड दिया गया। १९६० म सावरकर के अनुयाइयो द्वारा 'मृत्युजय दिवस मनाया गया। सन १९६५ मे महाराष्ट्र तथा भारत सरकार ने सावरकर को स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी मानकर पेंशन देना स्वीकार किया।

२६ फरवरी १९६६ को ८४ वर्ष की दीर्घ आयु भोग कर मदनलाल धीगडा के साथी और गुरु सावरकर का देहात हो गया। आज सरकारी तौर पर मदनलाल धीगडा या सावरकर की कोई जयती भले ही ना मनायी जाए। इसके बावजूद अमर शहीदो का नाम भारत के इतिहास म सदा उज्वलित रहेगा।

अमर शहीद ऊधमसिंह

आमुख

अमर शहीद मदनलाल धीगडा की यह अतिम इच्छा थी कि वह जब तक भारत की धरती पर जन्म लेते, और अपने प्राणो को न्याछावर करते रहें जब तक भारत, उनका अपना देश स्वतन्त्र ना हो जाए ।

भगवान जाने अमर शहीद की यह इच्छा पूरी हुई या नही । उनका भौतिक शरीर तो सभी लोगो की भाति नष्ट हो गया । पर मदनलाल धीगडा की वीरता व निर्भीकता ने ना जाने कितने मदनलाल धीगडाओ को जन्म दिया था । शहीदो व देशभक्ता की ऐसी परम्परा हमारे देश मे पड गयी जिन्होने अग्रेज सरकार को हिन्दुस्तान से खदेड कर ही दम लिया था ।

अमर शहीद उधमसिह भी इसी परम्परा के एक महान क्रांतिकारी और देशभक्त थे । जिन्होने अग्रेजो की छाती पर जब तक मूग दली व जब तक उन्होने भारत छोडने का निश्चय नही कर डाला, उन्होने व उनके साथियो ने उन्हे चैन से नही बठने दिया ।

गाजियो मे बू रहेगी, जब तलक ईमान की ।
तख्ते लदन तक चलेगी, तेग हिन्दुस्तान की ॥

यह उक्ति उसी अमर शहीद उधमसिह की थी जिसने जलियावाला बाग हत्याकाड के जिम्मेदार अग्रेज अफसरो को कभी क्षमा नही किया उन्हे उनके घर लदन मे जाकर पूरी पूरी सजा दी । ऐसे जाबाज बहादुर सिपाही थे—अमर शहीद ऊधमसिह । जिनका नाम हमेशा हमेशा भारत की स्वतन्त्रता के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे लिखा रहेगा । हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा उनका सदा ऋणि रहेगा और सारी जिन्दगी उन्हे याद रखेगा ।

कष्टकपूर्ण बचपन

अमर शहीद ऊधमसिंह का जन्म पजाब प्रात के सगरूर जिले म एक गरीब कम्बोज परिवार मे हुआ था। इनका वास्तविक नाम शेरसिंह था। सगरूर जिले मे एक छोटा सा गाव था सुनाम, उसमे शेरसिंह के पूर्वज आकर बस गए थे।

इसी परिवार मे टहल सिंह नामक एक सज्जन थे जो उस समय बना रेल सेवा मे चौकीदार के पद पर काय करते थे। उनकी पत्नी का नाम नारायणी देवी था। दाना ही पति पत्नी अपने नाम के अनुरूप सीधे-साधे स्वभाव के और पुरुषार्थी व्यक्ति थे। टहल सिंह स्वभाव मे निडर और बहुत साहसी व्यक्ति थे। नारायणी देवी धार्मिक स्वभाव की सेवा भावी स्त्री थीं।

नारायणी देवी और टहलसिंह दपति के एक पुत्र था जिसका नाम साधूसिंह था। साधूसिंह भी अपने नाम के ही अनुरूप बिलकुल साधू स्वभाव के सीधे सादे व्यक्ति थे।

सगरूर जिला और सुनाम गाव उस समय पटियाला रियासत का एक अग था। इसी पटियाला रियासत के सगरूर जिले के सुनाम गाव म, १३ पौष सवत् १९५९ यानि सन १९०३ मे शेरसिंह का जन्म हुआ था। मा इनकी नारायणी देवी और पिता टहलसिंह थ जो जाति से कुम्भन थे पर सरकारी नौकरी यानि रेल विभाग मे चौकीदारी करते थे।

कुछ विद्वानो के अनुसार अमर शहीद ऊधमसिंह जिनका वास्तविक नाम शेरसिंह था, का जन्म २० दिसम्बर सन १८९९ को सगरूर के सुनाम गाव मे ही हुआ था।

माता पिता टहल सिंह और नारायणी देवी के कुल दो ही सतानें हुइ, शेरसिंह व उनके बडे भाई साधूसिंह। साधूसिंह अपने नाम के अनुरूप

सीधे-साधे, सज्जन स्वभाव के, धार्मिक विचारो के थे। जबकि शेरसिंह निडर और साहसी स्वभाव के स्वाभिमानी बालक थे। अपने पिता के सभी गुण उन्होंने प्राप्त किए थे। वह बचपन स ही गुलल चलाना सीख गए थे। कुश्ती लडना गुलल से चिड़िया का शिकार करना और गड्ढा खोदकर जगली जानवरो को फसाना यह अमर शहीद उधमसिंह के बचपन के खेल थे।

कुछ बड़े होने पर जब पढने लिखने का समय आया तो दुर्भाग्य ने उनके परिवार पर अपनी काली छाया डाल दी। ढाई वर्ष की उम्र मे ही शेरसिंह की मा उन्हें अपनी ममता के साये म ही छोड़कर स्वर्ग सिधार गयी। पिता ने अपने अबोध बच्चो के स्नेहवश अपना दूसरा विवाह नही किया कि कही विमाता उन्हे और कष्ट ना दे।

टहलसिंह अपनी चौबीस घण्टे की सरकारी नौकरी करने के बाद इन अबोध मातहीन बच्चो की देखभाल म सारा समय लगा देते। थोडा बहुत जितना वह स्वयं पढ लिखे थे यह इन बच्चो को पढा देते। जिस स्टेशन पर टहलसिंह नौकरी कर रहे थे वहा और उसके आस पास कोई पाठशाला मौजूद नही थी। इस कारण शेरसिंह व साधूसिंह की ठीक प्रकार पढाई लिखाई नही हो पाई थी।

टहलसिंह के पडौस के घर मे एक पडित जी बच्चो को पढाने आते थे। एक दिन उनकी बातचीत शेरसिंह से हुई थी। पडित जी शेरसिंह की कुशाग्र बुद्धि से बहुत ज्यादा प्रभावित हुए और उन्होने टहलसिंह से शेरसिंह को खूब पढ़ाने लिखाने की सलाह दी। टहलसिंह ने जब इस विषय मे अपनी असमर्थता व्यक्त की तब पडितजी स्वय शेरसिंह को खुद ही पढ़ाने लिखाने को तयार हो गए। वह रोज नियमित रूप से घर आकर शेरसिंह को पढाने लगे। शेरसिंह की कुशाग्र बुद्धि को देखकर, एक दिन फिर पडित जी ने शेर सिंह के पिता टहलसिंह को सलाह दी, कि वह शेरसिंह को किसी अच्छी पाठशाला मे आगे पढने को भेज दें तभी इसकी बुद्धि का अच्छी तरह विकास हो सकेगा। पहले तो टहलसिंह ने पहले की तरह अपनी गरीबी और असमर्थता की बात कही पर पडित जी द्वारा शेरसिंह की उज्जवल भविष्य की आशाओ

को दिखलाने पर वह कुछ सोचने पर मजबूर हो गए। आखिर मे पडित जी के बहुत समझाने के बाद उन्होंने अपने उच्चाधिकारियो से यह प्रार्थना की कि उनकी बदली अमृतसर रेलवे स्टेशन पर कर दी जाए ताकि वह अपने बच्चो की अच्छी पढाई-लिखाई करा सकें।

रेल अधिकारियो ने टहलसिंह की प्रार्थना सहर्ष मंजूर कर ली और उनका स्थानातरण अमृतसर रेलवे स्टेशन पर हो गया। वहा एक पाठशाला मे शेरसिंह प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने लगे, जहा उनकी पढाई लिखाई सुचारु रूप से चलने लगी।

पर दुर्भाग्य की जो काली छाया शेरसिंह के ऊपर पडी हुई थी वह इतनी जल्दी अपना पीछा छोडने वाली नही थी। एक दिन अचानक ही उनके पिता टहलसिंह का देहान्त हो गया। दोनो ही भाई बिना मा बाप के हो गए। बिलकुल असहाय अवस्था मे थे, चारो ओर अन्धकार ही अन्धकार छाया हुआ था। मृत्यु और जीवन की सत्यता के विषय मे दोनो भाई कुछ जानते भी नही थे। उनके पिता टहलसिंह के अंतिम संस्कार का इंतजाम उनके अडोस पडोस के व्यक्तियो ने किया। अब स्थिति यह थी कि इन अबोध बालको के पास न तो रुपया पैसा था व न ही कोई बडा व्यक्ति सिर पर हाथ रखने वाला था। कल कहा जाना है, क्या करना है—यह दोनो मे से कोई भाई नही जानता था।

ऊधमसिंह (उर्फ शेरसिंह) रात-भर यही सोचते रहे—कल से क्या होगा, वह और उनके भाई अब कहा जायेंगे कौन उनके खाने की व्यवस्था करेगा।

अपने रिश्तेदारो, नातेदारो से तो उन्हें न तो किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता या सहारे की उम्मीद थी। पास पडोस के लोग भी उन्ही की भांति निम्न श्रेणी के कमाने-खाने वाले व्यक्ति थे, जो उनकी सहायता एक या दो दिन ही कर सकते थे। फिर उनका भविष्य क्या होगा यही सोचते-सोचते शेरसिंह की न जाने कब आख लग गयी। उन्होने सपने मे देखा शेर को कहीं सहारे की जरूरत पडती है। स्वप्न टूटते ही उन्हें शक्ति का अनुभव होने लगा।

प्रात होते ही किसी ने अचानक उनका दरवाजा खटखटा दिया। शेरसिंह ने उठाकर दरवाजा खोल दिया। उनके सामने उनके विद्यालय के आदर्श शिक्षक पंडित जयचंद्र शर्मा खड़े हुए थे। उन्होंने शेरसिंह के सिर पर बड़े ही स्नेह से हाथ फेरा और बड़े साहस से शेरसिंह को इस दुनिया का सामना करने की सीख दी। पण्डितजी ने कहा यह संसार तो नश्वर है जो यहां आता है वह यहां से जाता भी है। कौन कैसे और कब जाता है वह सब ईश्वर के अधीन है। नियति ने तुम्हारे साथ बहुत क्रूर मजाक किया था।

मैं तुम दोनों भाइयों के रहने खाने आदि की व्यवस्था कर दूंगा। तुम दोनों भाई नियमित रूप से पाठशाला में पढने आते रहना। उन्होंने उधमसिंह यानि शेरसिंह और साधू को उसी दिन से एक अनाथ आश्रम में प्रवेश करा दिया। दोनों भाई नियमित रूप से पढने लगे। आश्रम के नियमित जीवन और कुशाग्र बुद्धि ने शेरसिंह की प्रतिभा को दिन पर दिन नया निखार दिया। शेरसिंह अपने आश्रम और पाठशाला के एक आदर्श विद्यार्थी गिने जाने लगे। वार्षिक परीक्षा में उन्हें प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

पर शायद दुर्भाग्य को उनकी यह सफलता और खुशी अच्छी नहीं लगी। उनके बड़े भाई साधूसिंह निमोनिया के शिकार हुए और असमय ही अकाल मृत्यु को प्राप्त कर गए। साधूसिंह से शेरसिंह को अथाह प्यार था। उन्हें असमय जाता देखकर शेरसिंह की सारी हिम्मत टूट गयी। वह अपने आपको इस क्षण से सचमुच में अनाथ समझने लगे। अब इस संसार में उनका कौन था जिसके सहारे वह जाते। अब उनका इस संसार में क्या काम शेष था जिसके लिए वह जीते।

हमेशा की तरह उनके अध्यापक पण्डित जयचंद्र शर्मा आगे आए। उन्होंने शेरसिंह को बहुत समझाया बुझाया। इस दुःख और निराशा के अवसर पर उन्हें हिम्मत से काम लेने की सलाह दी। फिर वह शेरसिंह को अपने घर ले गए। कुछ दिन अपने घर में ही रखा भी था।

पण्डित जयचंद्र शर्मा ने शेरसिंह के मन में एक आदर्श शिक्षक और सच्चे गुरु का स्थान बना लिया था। नित्य उनके घर आने जाने लगे।

शेरसिंह के मन में पण्डित जयचन्द्र शर्मा ने देश भक्ति की और क्रांतिकारी की भावनायें भरी। उनकी वाणी बड़ा ही ओजस्वी थी। कई नौजवानों ने उनसे प्रेरणा प्राप्त कर देश भक्ति का सबक सीखा।

पण्डित जयचन्द्र शर्मा की स्नेह भरी छाया में शेरसिंह अपने माता-पिता की मृत्यु तक को भूल गए।

कुछ अन्य विद्वानों की सम्मति के अनुसार शेरसिंह या ऊधमसिंह साधूसिंह के छोटे भाई थे। और उन्हें पुतली घर के अनाथ आश्रम तक पहुंचाने वाले सुनाम गांव के एक सामाजिक कार्यकर्ता सरदार चंदासिंह थे। इन विद्वानों के अनुसार शेरसिंह के पिता का नाम सरदार निहालसिंह था। जब उनके माता पिता दोनों ही कालकवलित हो गए तो उन्हें अपने भाई के साथ कई गांवों में आश्रम के लिए भटकना पड़ा। सरदार चंदासिंह के आशीष से शेरसिंह ने गुरमुखी के साथ उर्दू और हिन्दी भाषा में प्रवीणता प्राप्त कर ली। कालान्तर में शेर-सिंह ने अंग्रेजी भाषा भी सीख डाली। किन्तु उन्होंने अपनी आजीविका का साधन अपने हाथ की कारीगरी को ही बनाया।

इन दोनों विसंगतियों के बावजूद यह तथ्य है कि शेरसिंह का प्रारम्भिक जीवन ही कष्टपूर्ण था। उन्हें अनाथ अवस्था और आश्रय-हीनता की स्थिति स्वीकार करनी पड़ी। शायद नियति ने उन्हें जीवन की समस्त कठोरतायें एक साथ दिखलाकर पत्थर की तरह सख्त और कुंदन की तरह निर्मल रूप दिया था ताकि भविष्य में वह एक बेमिसाल आदर्श साबित हो सकें।

पूर्वाभास

शहीद उधमसिंह यानि बचपन के शेरसिंह, जिनके ऊपर दुर्भाग्य की अति कृपा थी अनाथ आश्रम मे रहते हुए धीरे धीरे बच्चे से किशोर हो गए। मास्टर पंडित जयचंद्र शर्मा के स्नेह की छाया मे जहा उन्हे विद्या धन और पिता का वात्सल्य मिला था वही सरदार चंदा सिंह के साज्य से उन्होंने अपनी आजीविका चलाने के लिए परम्परा गत हाथ की कारीगरी सीख डाला थी।

पंडित जयचंद्र शर्मा के सदप्रयासो से शेरसिंह के मन मे देश प्रेम की जागृति हुई और उन्होंने १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के जननायक मंगल पांडेय का सम्पूर्ण जीवन चरित्र पढ डाला था। पर सबसे ज्यादा प्रभावित उन्हे अमर शहीद मदनलाल धींगडा के जीवन चरित ने किया।

उन्ही दिनों बीसवी शताब्दी के पहले दशक का प्रारम्भिक दौर था। पंजाब की जनता मे असंतोष की आग जल रही थी। पंजाब के तत्कालीन गवर्नर सर डेंजिल एबटसन ने १९०७ मे वायसराय को जो गुप्त रिपोर्ट भेजी थी उसने पंजाब प्रांत की स्थिति को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया था। इस गुप्त रिपोर्ट मे पंजाब प्रांत मे फैली नई हवा का वर्णन किया गया था व तत्कालीन ब्रिटिश सरकार को यह चेतावनी दी गयी थी कि यदि हालात पर काबू ना किया गया तो आग मुश्किल आ सकती है। पंजाब की हालत काबू से बाहर हो जाएगी। पंजाब के किसान भी सरकार द्वारा नहरो पर लगाए गए अतिरिक्त करो से बहुत ज्यादा असंतुष्ट थे। शहरी जनता भी अंग्रेज सरकार के खिलाफ चलाए जा रहे आंदोलनो से काफी असंतुष्ट थी। सारे पंजाब प्रांत के शहरी भागो मे हडतालें हो रही थी। कई जगह

दंगे हो रहे थे जो इस बात का सूचक थे कि प्रदेश की राजनीतिक हालत दिन प्रति दिन बिगडती जा रही है। उस समय अमृतसर सबसे अधिक शांतिप्रिय क्षेत्र माना जाता था। अनायास ही सबसे अधिक स्वतंत्रता संग्राम का केंद्र बन गया था व अमृतसर के कई हिस्सो में स्वतंत्रता संग्राम के लिए कई स्थानो पर गुप्त रूप से गतिविधिया चल रही थी। यो तो सारे पंजाब में विद्रोह की लहर फैली हुई थी और उससे सम्बन्धित लोग बहुत ही ज्यादा चिंतित थे।

इसका सबसे बडा कारण प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१८) समाप्त हो चुका था जिससे भारत की जनता को कोई राहत नही मिली थी। इसके विपरीत सरकार का शिकंजा जनता के लिए और अधिक कस गया था। जनता का दमन दिन प्रतिदिन बढता ही जा रहा था। ब्रिटिश शासन भारत मे सुरक्षा कानून लागू करना चाहता था और यह कहा जा रहा था कि शांति के लिए व नागरिको की भलाई के लिए नागरिक अधिकारो के लिए यह कदम उठाया जा रहा है। उदारवादी दृष्टि से इस कानून को लागू करने की बजाय ब्रिटिश सरकार और भी अधिक सख्ती का उपयोग कर रही थी। भारतीय दंड विधान और अन्य कानूनो की मौजूदगी में भी सरकार ने 'रौलट एक्ट' नामक नया कानून बनाया था जो सरकार की आवश्यकता अनुसार भारतीय दंड विधान मे बहुत से परिवर्तनो की आवश्यकता का प्रतीक था। इस कारण भारतीय दंड विधान में मनमाने परिवर्तनो के बाद, इस नये कानून को बनाने वाली समिति के अध्यक्ष रौलट के नाम से यह नया कानून 'रौलट एक्ट' के नाम से लागू किया गया था। वैसे दिखावे के तौर पर इस समिति ने कानून द्वारा ब्रिटिश शासन के प्रभाव से भारतीय जनता की सुरक्षा के लिए अपनी सिफारिशें पेश की थी। साथ ही युद्ध के बाद की तीन विभीषिकाओ—भूख यानी अनाज की कमी, अकाल मृत्यु यानि बीमारी व गरीबी ने भारतवासियो को बहुत विक्षुब्ध कर दिया था। पंजाब के किसानो को दबाने के जो प्रयास हुए थे उससे पंजाब के जनमानस में अंगारे दहकने लगे थे। इन नये कानूनो ने जनता को और भी ज्यादा विक्षुब्ध कर दिया था।

महात्मा गांधी ने इस कानून और अन्य कठिनाइयों के निराकरण के लिए सत्याग्रह का अमोघ अस्त्र दिया था। महात्मा गांधी उस समय दक्षिण अफ्रीका से लौटे थे व उनकी आयु ४९ वर्ष की थी। 'स्वराज्य' का मन्त्र यहीं से पहली बार उच्चरित हुआ था और तब हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा प्राप्त हुई थी। ऐसे वातावरण में बड़े होते शेरसिंह को जयचंद्र शर्मा द्वारा राजनीति का चस्का लग चुका था। विश्व युद्ध के बाद पूरा देश महंगाई से त्रस्त था। महंगाई बढ़ गयी थी। जनता में त्राहि त्राहि मच रही थी। लोगों को खान पान की वस्तुएं भी आसानी से नहीं मिल रही थीं जिसके कारण जनता ने आवाज उठाई थी।

ऐसी विषम परिस्थितियों में शेरसिंह जैसे किशोर की क्या दशा हो सकती है। इसकी कल्पना की जा सकती है जिसके सिर पर से माता पिता की छाया कब की उठ चुकी थी। अनाथ आश्रम छोड़कर जो अपनी हाथ की कारीगरी पर ही जिन्दा था। शेरसिंह अपना पेट बड़ी ही मुश्किल से भर पा रहे थे। नौजवानी की उम्र था। इस उम्र में आशा-निराशा होना ही है। ऐसी उम्र में सत्याग्रह की बात शेरसिंह के गले कैसे उतर सकती थी। फिर पंडित जयचंद्र शर्मा के संपर्क में आने के कारण उनका संपर्क उस समय के क्रांतिकारियों से हो गया था जिनके साथ रहकर शेरसिंह क्रांतिकारियों की छोटी मोटी सहायता करने लगे थे। जयचंद्र शर्मा के आशीर्वाद से शेरसिंह स्वयंसेवक के रूप में भर्ती हो गए।

अत्याचारी अंग्रेजों ने सारे देश में रौलट एक्ट का विरोध करने वालों का बड़ी कठोरता से दमन किया था। अमृतसर में भी डा० सत्यपाल व डा० सैफुद्दीन किचलू ने हिंदू मुस्लिम सम्प्रदायों का संयुक्त जलूस निकाला। इस जलूस में स्वयंसेवक के रूप में शेरसिंह भी शामिल थे। इस जलूस ने अमृतसर के तत्कालीन कमिश्नर का सरकारी बंगला घेर लिया जिसके कारण डा० सत्यपाल व सैफुद्दीन किचलू को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के बाद दोनों नेताओं को किसी अज्ञात स्थान पर भेज दिया गया व भीड़ को तितर बितर

तितर बितर कर दिया गया।

११ अप्रल १६१६ को इन दोनो नेताओ, डा० सैफुद्दीन किचलू, डा० सत्यपाल की रिहाई की माग को लेकर एक विस्तृत जलूस निकाला गया जो अमृतसर के हाल गेट बाजार तक पहुचा। उसी समय अग्रेज पुलिस ने जलूस को तितर-बितर करने के लिए अधाधुध गोलिया चला दी। सारी भाड भाग गयी। इसमे अनक लोग इधर उधर गिरते पडते हुए भागे। अनेक घायल हुए व अनक लापता। चारो ओर अग्रेजो के इस अत्याचार की बुरी तरह निंदा हो रही थी। पर यह तो भविष्य का पूर्वाभास मात्र था।

भीष्म प्रतिज्ञा

अमर शहीद ऊधमसिंह स्वतन्त्रता सग्राम की गतिविधिया मे एक स्वयसवक के रूप म शामिल हो चुके थे। उनका बचपन का नाम शेर-सिंह था जिसे वह सही अर्थों मे सार्थक कर रहे थे।

रौलट एक्ट के खिलाफ चल रहे आदोलन म भी वह शामिल हो चुके थे। ११ अप्रल को अग्रेज सरकार द्वारा गिरफ्तार डा० सत्यपाल और डा० सैफुद्दीन किचलू की रिहाई की माग को लेकर आदोलन हुआ था। एक विशाल जलूस निकला था जिसको हाल गेट पर पुलिस ने तितर-बितर कर दिया था।

अब १३ अप्रैल १६१६ को बैसाखी के शुभ दिन एक विशाल सभा का आयोजन किया गया था। जो अमतसर के जलिया वाला बाग म आयोजित होने वाली थी। इस सभा मे ही डा० सत्यपाल और डा० सेफुद्दीन किचलू की रिहाई की माग की गयी थी। पर किसी भी व्यक्ति को यह ज्ञात नही था कि यह सभा ससार का सबसे बडा आयोजन बन जाएगा जिसे सारी उम्र एक प्रतीक के रूप म हमेशा याद किया जाएगा। जिसकी मिसाल सदियो तक, अत्याचार के पैमाने के रूप म होगी।

इस ऐतिहासिक आयोजन मे सरदार ऊधमसिंह उर्फ शेरसिंह भी शामिल थे जो उस समय लगभग १६ साल के थे और उनके साथ, उनके मित्र व सहयोगी सरदार भगतसिंह भी थे, जो मात्र ११ वर्ष ७ महीने और १६ दिन का था।

११ अप्रैल १६१६ को नगर के तनाव को देखते हुए अमतसर के कलेक्टर ने नगर का प्रशासन सेना को सौप दिया था। ११ अप्रैल को हुई गोलीबारी मे दो व्यक्ति मारे गए थे जिसके कारण ही यह तनाव

फैला हुआ था।

जलिया वाला वाग तीन ओर से एक ऊची दीवार स घिरा हुआ था। उस वाग को पजाव के तत्कालीन गवनर सर माइक्ेल आ डायर के आदेश पर, भारत मे ही जन्म अग्रेज सेना के अधिकारी ब्रिगडियर जनरल रेजिनाल्ड ई० एच० डायर ने सैंकडो हथियारबन्दो द्वारा यह स्थान चारो आर से वुरी तरह घेर लिया था। इसके वाद २०, २५ हजार के आस पास स्त्री-पुरुष इस ऐतिहासिक सभा मे पहुच चुके थे, जिनमे शेरसिंह भी शामिल थे।

जलिया वाला वाग ऐसा मदान था, जहा एक आर निर्माणाधीन इमारतो का मलवा पडा हुआ था। यह लगभग पूरा मैदान बनती हुई इमारतो और उसके सामान से पटा पडा हुआ था। आन जान का रास्ता बहुत ही सकरा और उबड-खावड सा था। सामने एक कुछ ऊचा सा मच वना हुआ था जिस पर खडे होकर एक व्यक्ति अपना भाषण दे रहा था।

तभी ब्रिगडियर जनरल रेजिनाल्ड ई० एच० डायर उस रास्त से अ दर दाखिल हुए। उस रास्ते के दोनो ओर बहुत ऊची दीवार उठी हुई थी। यह स्थान उस ऊचे से मच से कोई १५० गज दूर था जहा जनरल डायर न अपन सनिको को रोका हुआ था। इन सनिको म ६६ नेपाली गोरखा और २५ वलूचिस्तान के वलूच सिपाही राइफला से लैस थे व ४० गोरखाओ के पास खुकरिया थी और दो हथियार वन्द गाडिया थी।

यह हिन्दू और सिखा का पवित्र दिन था। इसके अलावा पजाव के ईसाईयो सहित सभी हिन्दू मुसलमानो के लिए यह एक धर्म-निरपेक्ष / पव का दिन था। वसाखी के इस ऐतिहासिक पव पर पगडी वाधे सिख और तहमद पहन मुसलमान 'पगडी सम्हाल जट्टा ' गाते हुए चले आ रहे थे। यह त्योहार खेता मे उगी हुई लहलहाती फसलो का त्योहार था। सारे किसान नाचने गाने को इकट्ठे हुए थे, सारे शहर मे मले का वातावरण था। हमेशा की भाति शहर के बाहरी भाग मे मले का आयाजन था। लेकिन वदले हुए वातावरण म यह सारे किसान इस

आयोजन स्थल यानि जलियां वाला बाग की ओर मुड़ गए थे।

हंसराज उस २० २५ हजार व्यक्तियों की भीड़ को सम्बोधित कर रहे थे। जो इन व्यक्तियों को उन नेताओं के सम्बन्ध में बतला रहे थे, जो गिरफ्तार हो चुके थे। तभी अंग्रेज सैनिकों की टुकड़ी उस सभा-स्थल पर दाखिल हुई और अंग्रेजी सेना ने घुटनों के बल बैठकर, राइफलें भीड़ के सामने की ओर तान दीं। इसके बाद पलक झपकते ही गोलियां चलने लगीं। एकदम शोर मच गया और चारों तरफ भगदड़ मच गयी। लाला हंसराज मंच पर से चिल्लाए, "घबराओ नहीं यह नकली गोलियां हैं, खाली कारतूस हैं, इनसे किसी को कुछ नुक्सान नहीं होगा।"

लाला हंसराज की बात सुनकर जनरल डायर को लगा कि कुछ गड़बड़ है वह भी उतने ही जोर से चिल्लाया, "इनको गोली मारो, गोली हवा में क्या चला रहे हो।

उस समय आसमान साफ था। पंजाब में इस साल भी बहुत ही अच्छी फसल उगी थी। हवा में स्नोगरा और सरसों की खुश्बू फैली हुई थी। गोलियां सिर्फ दस मिनट तक ही चली थीं पर उनकी गूंज आस-पास घंटों बाद भी सुनी जाती रही थी। सभी प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है उन गोलियों का लक्ष्य वे सारे रास्ते थे जिन रास्तों से लोग निकलकर भाग रहे थे। एक वृद्ध जो अपने भतीजे को ढूंढने बाग में आया था, उसने देखा कि उसका भतीजा गोलियों से छलनी हुआ पड़ा था। उसका सिर फट गया था। एक गोली नाक के नीचे ऊपर वाले ओंठ पर लगी थी। दो बायीं ओर एक गर्दन पर बायीं ओर और तीन जांघों पर तथा दो या तीन सिर में।

चंद ही मिनटों के लिए जलियां वाला बाग खून से नहा उठा। चारों ओर लाशें पड़ी हुई थीं। खून नाले के रूप में बह रहा था। शेरसिंह एक पेड़ पर चढ़े हुए अपने चारों ओर फैली हुई लाशें देख रहे थे। अपनी जान बचाने के लिए भगदड़ में यह इस ऊंचे पेड़ पर चढ़ गये थे।

जल्द ही सारा शहर पूरे अंधकार में डूब गया। लगता था किसी

ने गम की चादर उढा दी हो। उस शाम विधवा हुई रतन देवी के अनुसार लाशो को देखकर उनके रोंगटे खडे हो गए थे। सारा दृश्य ही बहुत यंत्रणादायक था। उस बहादुर महिला ने अपने पति की लाश को ढूढने म वहा घटो विताए। उस निजन जगल म, जहा से वह अग्रेजो की आज्ञा से बचाकर अपने पति की लाश को चुपचाप घसीटकर ले गयी थी। उस महिला ने पूरी रात रा राकर बिताई थी। पति को अन्तिम सस्कार के लिए घर ले जाने के लिए एक चारपाई की आवश्यकता थी। उस महिला के अनुसार 'मरे लिए उस सबका वणन करना लगभग असम्भव है जो मैंने वहा किया। वहा लाशो के ढेर पड हुए थ। कुछ छाती के बल कुछ पीठ के बल गिरे पडे थे, उनमे से अनेक गरीब निर्दोष बच्चे थे। मैं उस निजन जगल म पूरी रात अकेली रही। कुत्ता के भौकने और गधो के रेंकने की आवाजो के सिवाय कुछ और आवाजें सुनाई नहीं पडती थी। उन सैकडा लाशो के बीच मैंने सारी रात राते-राते काटी। क्योकि सारा बाग रक्त से भरा हुआ था। सूखे स्थान के लिए बुरी तरह मारामारी थी।"

इस नर सहार के नायक ब्रिग्रेडियर जनरल रेजिनाल्ड ई०एच० डायर ने बाद म हटर कमीशन के सामने बतलाया "म जसे ही वहा अपनी कार मे आया—मैं निश्चय कर चुका था कि लोगा को जान स मार दूगा। इस इनक्वारी कमीशन के सामने यह बात भी सामने आई कि उसने भीड को कोई भी चेतावनी नही दी। ना ही भीड को वहा से जान को कहा गया, ना ही उनके जान की जरा भी प्रतीक्षा की गयी, उलटे सारे रास्तो पर कब्जा कर गोलिया बरसाई गयी। इस विषय मे जनरल डायर ने अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर स भी कोई बातचीत नही की। डिप्टी कमिश्नर वहा उपस्थित भी नही थे। यह सवदा विदित ह कि बिना फस्ट क्लास मजिस्ट्रेट की अनुमति के कोई भी फोस, चाहे पुलिस हो या आम्स पुलिस या फिर सेना भी क्यो न हो बिना मजिस्ट्रेट की अनुमति के गोली नही चलाई जा सकती है। इस प्रशासनिक नियम को ताक पर रखने का कारण जनरल डायर ने यह बतलाया कि "मैं जलियावाला बाग गोलीबारी को अपना कतव्य समझता था। एक

भयानक वक्तव्य ! मैं उनको एक ऐसा पाठ पढाना चाहता था ताकि वह लोग मुझ पर हँस ना सकें। इसलिए मैं और ज्यादा दूर तक गोलिया चलाता रहता अगर मेरे पास आवश्यक संख्या मे और गोलियाँ होती। मैं अपने साथ हथियारबंद गाडी ले गया था। लेकिन मैंने देखा कि उस रास्ते से वे जा ही नहीं सकती थी। इसलिए उन्हें मैंने पीछे छोड दिया। मुझे ऐसा लगा कि मुझे अच्छी तरह और तेजी से गोलियाँ चलानी चाहिए ताकि मुझे या किसी और को फिर से गोलियाँ ना चलानी पड़े।" एक तार में भेजे गए संदेश मे डायर के इस कार्य का सर माइकल ओ डायर ने सहमति दे दी। "लेफ्टीनेंट गवर्नर तुम्हारे व्यवहार को उचित व सही ठहराते है।" इस हत्याकांड का समाचार जब कलकत्ता पहुँचा, तो सुभाषचन्द्र बोस ने हाथ में पिस्तौल लेकर अंग्रेजो को बल प्रयोग से देश से निकालने की प्रतिज्ञा की।

जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड में कुल मिलाकर १६५० गोलियाँ चलाई गयी थीं। इस पर जनरल डायर का गर्व था कि एक भी गोली व्यर्थ नही गयी थी। मृतकों की संख्या से यह बात बिलकुल सत्य सिद्ध हुई थी। पंजाब डिसार्डर्स इन्क्वायरी कमेटी के कमिश्नर न्यायमूर्ति श्री रैकिन के यह पूछने पर "क्या तुमने घायलो की देखभाल के लिए कोई कदम उठाया था।'

डायर का जवाब था, "नहीं, यह मेरा काम नहीं था। अस्पताल खुले हुए थे और वे वहाँ जा सकते थे।'

इस हत्याकाण्ड के कई प्रत्यक्षदर्शियों में मेवासिंह नाम का एक हलवाई भी था जो मेले मे अपनी मिठाई बेचने आया था। उसके सम्बन्धियों के अनुसार मेवासिंह हलवाई का शव गोलियों और गोलियों के निशाने से भरा हुआ था। उसके सिर से खून का फव्वारा छूट रहा था। अमृतसर के कालेज के बीसियों विद्यार्थी मारे गए थे। आज तक भी यह मैदान खूनी और काली कमाई थी। पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा इस सम्बन्ध में खोजबीन कर एक ग्रंथ छापा गया था जिसका नाम ही 'जलियाँवाला के शहीद' था, जिसके लेखक डा० राजाराम नामक एक वरिष्ठ प्रोफेसर थे। डा० राजाराम ने प्राप्त तथ्यों के आधार पर

यह खोजकर निकाला था कि यह विशाल नरसहार पूरी तरह पूव नियोजित था और अच्छी तरह सोच समझकर इसकी योजना बनाई गई थी। इस पुस्तक मे इस हत्याकाड मे मृत लोगो की सूची और विस्तृत वणन है। इनका आधार वह सरकारी फाइलें व रिकाड हैं जो अव उपलब्ध नही हैं। गदर और आतरिक शासन आदोलनो के बाद अमृतसर हत्याकाड ब्रिटिश शासन मे कफन मे एक कील की तरह साबित हुआ था। लेफ्टीनेंट गवनर सर माइकल ओ डायर का यह वक्तव्य हास्यास्पद ही साबित हुआ कि यह गोलीबारी नतिक प्रभाव डालने के लिए की गयी थी। हालाकि यह सैन्य दृष्टिकोण को ध्यान म रखकर की गयी थी।

सरदार उधमसिंह उफ शेरसिंह ने जलियावाला की सभा मे अपने अनाथ आश्रम की ओर से स्वयसेवक के रूप मे भाग लिया था। डायर द्वारा गोली चलाने के आदश के बाद शेरसिंह ने एक पड पर चढ कर, डाल के ऊपर पत्तो के बीच म सिर छिपाकर अपने प्राण बचाये थे। उस समय शेरसिंह की उम्र मात्र १६ वप थी। यह सारा नर-सहार शेरसिंह ने अपनी आखो से देखा था और उसी समय उन्होने यह दृढ निश्चय कर लिया था कि वह 'जलियावाला हत्याकाण्ड' के तीनो अधिनायको सर माइकल ओ डायर, पजाब के लेफ्टीनेंट गवनर ब्रिगेडियर जनरल ई० एच० डायर जो भारत मे पैदा हुए अग्रेजी सेना के अफसर, लाड जेट लैंड भारत के राज्य सचिव को उसी समय गोली से उडान का दृढ निश्चय कर लिया और इस शपथ को अपनी डायरी म दज कर लिया था।

तब स हर वसाखी पर शेरसिंह अपनी डायरी निकालकर हर बार दोहराता और उसके मन की आग और सुलग उठती। गोलियो की आवाज समाप्त होते ही अन्य स्वयसेवक विद्यार्थियो के साथ शेरसिंह भी पड से नीचे उतरे। घायल लोगो की चीत्कार सुनकर शेरसिंह सहित सभी स्वयसेवक विद्यार्थियो का कलेजा दहल गया था। फिर भी हिम्मत बाधकर, घायलो को अस्पताल पहुचाने लगे। जब सारे अस्पताल घायलो से पट गए तब शेरसिंह इन घायलो को लेकर अनाथ

आश्रम ले गए। कुछ का आर्य समाज मंदिर पहुंचाया गया जहां रख-कर उन सभी ने मिलकर इन घायलों की भरपूर सेवा-सुश्रुषा की थी। शेरसिंह के नेतृत्व में इन घायलों और दुखियों की इतनी भरपूर सेवा की थी कि छात्रों और घायलों के बीच परस्पर स्नेह का सम्बन्ध बन गया। जब यह घायल लोग ठीक होकर अपने घर गए तो उनका रोम-रोम उन्हें आशीर्वाद दे रहा था।

पर जलियांवाला हत्याकाण्ड का नर संहार देखकर शेरसिंह का मन बुरी तरह उदास हो गया था। यह दुनिया, यह समाज उन्हें बड़ा सूना सा लग रहा था। उनकी इच्छा हो रही थी कि वह जल्दी से जल्दी इस नरसंहार को कराने वाले अंग्रेज काजियों को मौत की सजा देकर अपने कर्तव्य का पालन कर डालें।

उस समय सारे देश में इस हत्याकाण्ड को लेकर नफरत की आग धधक रही थी और हर व्यक्ति अपने तरीके से इसका विरोध प्रकट कर रहा था।

शेरसिह से ऊधमसिह तक

नाथ आश्रम म शेरसिह अपना एक एक दिन बडी ऊब से गुजार रह थे। उनका हर समय यही इच्छा होती थी कि वह जल्द से जल्द सर माईकल ओ डायर, जनरल डायर और लाड जट लैंड को जान से मारने की इच्छा पूरी हो।

पर हण्टर कमेटी की रिपोर्ट न सर माइकल ओ डायर और जनरल डायर को इस अनैतिक व गैर कानूनी हत्याकाण्ड का दोषी मान लिया था और उन्हें सरकारी नौकरी से पदमुक्त कर दिया गया था। उनकी पेंशन भी जब्त कर ली गयी थी। भारत मे रह रहे अंग्रेजो ने दोनो व्यक्तियो को २०,२० हजार पौंड का पुरस्कार और अजनबी देश मे अंग्रेज जाति का सम्मान बचाये रखने के प्रयास मे दोनो को एक एक तलवार भेंट की थी। जल्द ही दोनो व्यक्ति लदन रवाना हो गए जहा उनका और अभूतपूर्व स्वागत हुआ। जिस पर इंग्लैंड के राजा जार्ज और उनके चाचा ड्यूक कनाट बहुत अप्रसन्न हुए। ड्यूक कनाट भारतवासियो के दुखी मन पर मरहम लगाने लदन मे भारत आए और इस घटना पर क्षोभ प्रकट किया।

सर माइकल ओ डायर और जनरल डायर के भारत छोड कर जाने के समाचार ने शेरसिह के मन को और विक्षुब्ध कर दिया। उस रात वह अनाथ आश्रम म बेचैनी से करवटें बदलते रहे। जब नीद ना आई तो उन्हें लगा अब यहा रहना व्यर्थ है। अब कुछ कर दिखलाने का समय आ गया है।

जब मन की बेचैनी बहुत बढ़ी तो अचानक ही एक दिन वह अपना थोडा बहुत सामान लेकर अनाथ आश्रम से चले आए। शेरसिह ने अपने एक रिश्तेदार के मोटर गैरिज मे नौकरी कर ली जहा शेरसिह

माटर मेकेनिक का काम सीखने लगे। इसके साथ-साथ मोटर ड्राइवरी सीखने लगे थे। कुछ ही दिना मे उन्होने माटर ड्राइवरी और माटर मेकेनिक दानो ही कार्यों में भरपूर सफलता हासिल कर ली थी।

उस समय मोटरा का धधा नया नया आया था। इस कारण अच्छे माटर ड्राइवरो आर मोटर मकेनिका की बडी माग थी। शेरसिंह के उक्त गरिज की माटरें अग्रेज पुलिस और फौज को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया करती थी। शेरसिंह भी एक सफल ड्राइवर हो गए थे जिस कारण राजाना फौज का माटर गाडियो द्वारा इधर से उधर ले जाया करते थे। उनका असली उद्देश्य तो किसी तरह अग्रेजी फौज के उच्च अधिकारियो से सम्पर्क बनाना था।

एक दिन मोटर गरिज के मालिक का हुकम मिला कि अग्रेजी फौज का माटर द्वारा गुजरालावाला कसूर की आर ले जाए। जहा स २४ अप्रल को पजाब के तत्कालीन गवनर के आदश पर फौज ने हवाई जहाज द्वारा शहर के ऊपर बेकसूर नागरिका पर बम गिराए गए। यह सारा दिल दहलान वाला हगामा शेरसिंह ने अपनी आखा से देखा। अग्रेज सरकार के नादिरशाही अत्याचारा के पीछे इस बार भी नर माइकल ओ डायर का हाथ था। पर बहुत प्रयास करने के बावजूद शेरसिंह, सर माईकल आ डायर तक ना पहुचा सके। जिससे विक्षुब्ध होकर वह यह महसूस करने लगे कि ओ डायर द्वारा कराया गया हवाई हमला भी उनके द्वारा फौज पहुचाये जान क कारण हा पाया ना वह फौज का मोटर द्वारा पहुचाते ना हवाई हमला हाता।

एक दिन विक्षुब्ध होकर शेरसिंह न उस मोटर गरिज से भी कूच कर ली और सहारनपुर जा पहुचे। वहा एक साल ड्राइवरी का काम किया। पर जब वहा भी कुछ चन ना मिला और आत्म सतुष्टि ना मिला और दिन पर दिन बेचनी बढती गयी तब शेरसिंह लखनऊ जा पहुचे। वहा के एक ताल्लुकेदार क घर पर रहकर उसकी नौकरी करने लगे। उस ताल्लुकेदार का शिकार खेलन का जबरदस्त शौक था। उसके पास तरह-तरह की बहुत-सी बदूकें, पिस्तौलें, रिवाल्वर थ। शेरसिंह ने जी खोलकर उस ताल्लुकेदार की जानकर सवा की।

इसके बाद घर का व बाहरका काय करते। सेवा करते-करते फिर एक दिन मौका पाकर ताल्लुकेदार से शेरसिंह ने प्रार्थना की कि वह उनको निशाना लगाना सिखा दे। ताल्लुकेदार ने सहर्ष शेरसिंह की प्रार्थना मजूर कर ली।

छह माह तक शेरसिंह ने लखनऊ मे रहकर निशानबाजी का कड़ा अभ्यास किया। जिससे वह अच्छे निशानेबाज बन गए। अब शेरसिंह ताल्लुकेदार के साथ शिकार खेलने जाने लगे। अपने निशाने पर जब शेरसिंह को अगाध विश्वास हो गया तो उन्होने यह समझ लिया कि उनका लखनऊ रहने का उद्देश्य पूरा हो गया।

शेरसिंह ने एक दिन चुपचाप उस ताल्लुकेदार की नौकरी छोडकर लखनऊ छोड दिया और अब शेरसिंह को क्रातिकारियो की तलाश थी। ताकि उन तीन दुष्टो को मौत की सजा देकर अपने मन की प्यास बुझा सके। जब-जब जहा-जहा उन्हे क्रातिकारियो की मौजूदगी का समाचार मिलता शेरसिंह पहुच जाते थे। पर क्रातिकारियों से उनकी मुलाकात नही हो सकी थी।

उत्तर प्रदेश जो उस समय सयुक्त प्रात कहलाता था तथा पजाब आदि स्थानो के अनेक शहरो कस्बो मे शेरसिंह भटके। जीवन-यापन के लिए कई तरह के पापड बेले। इससे कई तरह की परिस्थितियो का सामना किया, कई तरह के लोगो से मुलाकात हुई। उनकी बदले की इस अदम्य भावना के कारण, कठोर उद्यम करने के कारण, शेरसिंह का नाम उधमसिंह पडा।

निराशा ही निराशा

ऊधमसिंह घूमत घूमत एक दिन मरठ जा पहुचे। सन १८५७ म पहले विद्राह की शुरआत मरठ से ही हुई थी। इस कारण ऊधमसिंह क मन मे यह आशा जागी कि हो ना हो कोई भूला भटका क्रांतिकारी अब भी मरठ मे अवश्य मिल जाए।

सरदार ऊधमसिंह मेरठ के एक होटल मे नौकरी करन लगे। वस वह माटर डाइवरी जानत थ। पेट भरने के लिए इसम अच्छा काम कोई और ना हाना। पर वह तो ऐसा काम चाहते थे जहा ज्यादा स ज्यादा आदमिया स सम्पक स्थापित हो, ताकि जल्द से जल्द वह क्रांतिकारिया के सम्पक म आ सकें।

एक दिन दा आदमी मेरठ के उस होटल म भोजन करन आए जिस हाटल म ऊधमसिंह काम करत थे। दाना एक खाली मज पर बठ कर ऊधमसिंह का भाजन लान का आदश देकर बातो मे मग्न हा गए। पानी रखकर ऊधमसिंह अय ग्राहका की सेवा म खड थे तभी उन दोना व्यक्तिया की बातें ऊधमसिंह के कानो म पडी। दाना की बाता का लक्ष्य जनरल डायर आर पजाब के गवनर सर माईकल ओ डायर थे। यह बातें सुनकर सरदार ऊधमसिंह के कान खडे हो गए।

उन दाना व्यक्तियो म से एक बोला, 'आपने सुना है जनरल डायर यहा से वापिस इग्लैंड चले गए ह जहा वे काफी दिना से सख्त बीमार हैं। पजाब के गवनर सर माईकल ओ डायर भी रिटायर होकर लदन चले गए ह।' यह बात सुनकर सरदार ऊधमसिंह एकदम खडे के खड रह गए। उनके परा के तले से जमीन निकल गयी। उनकी भीष्म प्रतिज्ञा पूरी हात-हाते रह गयी। उस दिन सारी रात उन्हे नीद नहीं आई। सर माईकल ओ डायर, जनरल डायर और लाड जेट लड लदन

पहुच चुके थे। अब इन तीनो को मौत के घाट उतारने की उधमसिंह की भीष्म प्रतिज्ञा बिना इग्लैंड जाए पूरी हो नही सकती थी। और इग्लैंड जाना ना आज इतना आसान है और ना ही उस समय ही इतना आसान था। हजारो रुपये जहाज का किराया था।

इस बात ने उधमसिंह को बहुत ज्यादा बेचैन कर दिया। सारी रात सरदार उधमसिंह को बेचैनी के कारण नीद नही आई। सारा रात उधमसिंह बिस्तर पर करवटें बदलते रहे। फिर उन्हे अमर शहीद मदनलाल धींगडा का कारनामा याद आया जिसने सर कर्जन वायली को जहांगीर हाल लन्दन मे भीड भरे समारोह मे मौत के घाट उतार दिया था।

उसी समय सरदार उधमसिंह ने एक और भीष्म प्रतिज्ञा कर डाली कि वह लदन जाएगे। जहा जलियावाला बाग हत्याकाण्ड के इन तीनो दोषियो को मौत के घाट अवश्य उतारेंगे। इस दृढ निश्चय के बाद सरदार उधमसिंह नीद की गोद मे जा पहुचे।

पर सरदार उधमसिंह तो ज्यादा पढे लिखे भी नहीं थे। जयचन्द शर्मा के सहयोग से प्रारम्भिक शिक्षा ही प्राप्त कर पाये थे। उन्हे अग्रेजी का पूरा-पूरा ज्ञान नहीं था। इस कारण सरदार उधमसिंह मेरठ छोडकर तुरन्त फिर पजाब वापिस लौट गए जहा से कई स्थानो पर रुकते हुए और कुछ काम धधा करते हुए सरदार उधमसिंह लाहौर जा पहुचे, जहा ईश्वर की कृपा से उनका धधा चल निकला। इसके अलावा वहा से सरदार उधमसिंह ने हाई स्कूल और इटरमीडिएट की परीक्षाये भी पास कर ली। व्यापार करते करते सरदार उधमसिंह ने बहुत सा धन भी इकट्ठा कर लिया।

परन्तु काफी प्रयत्नो के बाद धन इकट्ठा करने और उसे कजूसी से बचाने के बावजूद, यह धन इतना ज्यादा नही था कि उससे इग्लैड की यात्रा की जा सके। इस सारी पढाई और व्यापार करने मे भी पूरे चार साल गुजर गए थे। पर इसके बावजूद भी इग्लैड जाना बहुत मुश्किल लग रहा था। जिसके कारण सरदार उधमसिंह की बेचैनी दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी।

अचानक एक दिन सरदार उधमसिंह ने समाचारपत्रों में पढ़ा कि 'अमृतसर के जलियावाला बाग का हत्यारा ब्रिगेडियर जनरल इ० एच० डायर काफी लम्बी बीमारी के बाद सात साल बिस्तर पर बीमार पड़ पड़ लंदन में ही मर गया।"

सरदार उधमसिंह के हाथों से अखबार छूट गया, उनकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। जिस आदमी की जान लेने के लिए वह इतने साल भटकते रहे। जगह जगह छोटे छोटे काम धंधे करके पैसे इकट्ठे करते रहे। वह उनके बिना मारे ही मर गया यह बात उधमसिंह को बुरी तरह साल रही थी।

इस दुख में सरदार उधमसिंह ने दो दिन खाना नहीं खाया। एक रात उनका मन हुआ कि आत्महत्या कर लें अब जिंदा रहने का क्या फायदा। अब जिंदगी का क्या फायदा जब जीने का उद्देश्य ही समाप्त हो चुका था। पर यह विचार करते उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि आत्महत्या करना तो महापाप है क्यों न जिंदा रहा जाय। अरे डायर मर गया तो क्या हो गया। अभी सर माईकल ओ डायर तो जिंदा है उसे मार कर भी अपनी प्रतिज्ञा पूरी की जा सकती है। आखिर उसीने तो जनरल डायर को अंधाधुंध गोली चलाने का आदेश दिया था इस आदेश को देने के बाद ओ डायर ने ही अपने इस आदेश को सरासर उचित और आवश्यक भी ठहराया था। इसके बाद ओ डायर ने पूरे संसार में जहां-जहां वह गया जनरल डायर द्वारा किए गये नरसंहार की जी खोलकर प्रशंसा की। डायर के इस कार्य को माईकल ओ डायर ने बहादुरी का संज्ञा दे डाली थी।

माईकल ओ डायर जनरल डायर की बहादुरी की प्रशंसा मात्र करके ही संतुष्ट नहीं हुआ बल्कि लंदन पहुंचते ही उसने चन्दा मांग कर हजारों पाउंड इकट्ठे कर डाले व हजारों पौंड इनाम की शक्ल में उसने सार्वजनिक रूप से अभिनंदन करके डायर को भेंट किए।

यह सब समाचार उधमसिंह समाचार पत्रों में पढ़ चुके थे। उनकी निगाह में माईकल ओ डायर भी जनरल डायर की तरह ही दोषी था। उसका नाम हिटलिस्ट में बहुत ही अच्छी तरह लिखा गया था।

सरदार ऊधमसिंह को यह निश्चित रूप से लगने लगा कि बिना माईकल ओ डायर की हत्या किए। जलियावाला बाग के शहीदो की आत्मा को शाति नही मिलेगी। उन्हें सद्गति नही प्राप्त होगी ।

पजाब के भूतपूर्व गवर्नर सर माईकल डायर की हत्या के निश्चय मात्र म ही ऊधमसिंह के मन मे शाति छा गयी थी पर आर्थिक स्थिति ज्यो की त्यो थी। कई जगह प्रयत्न किया पर निराशा ही हाथ लगी। घूमते घामते एक दिन हरिद्वार जा पहुचे।

जहा एक ज्योतिषी को, गगा किनारे, बैठे हुए, देखकर सरदार ऊधमसिह से ना रहा गया उन्होने अपना हाथ उस ज्योतिषी के आगे पसार दिया । ज्योतिषी ने सरदार ऊधमसिंह का हाथ देखकर बतलाया कि 'वह चौतीस वर्ष की अवस्था म विदेश जायेंगे । और उनकी मनचाही इच्छा तभी पूरी होगी।' निराशा के गर्त मे डूबे सरदार ऊधमसिंह को ज्योतिषी की यह भविष्यवाणी अमृतवाणी की तरह लगी । वह बार बार ज्योतिषी से अपने हाथ की रेखाओं का और स्पष्ट करने को कहते रहे ज्योतिषी द्वारा बिलकुल स्पष्ट रूप से चौतीस वर्ष की अवस्था म ही विदेश यात्रा और मन की मुराद पूरी होने की बात कही। अब सरदार ऊधमसिंह को एक ही बात का इतजार था जल्दी से जल्दी चौतीस वर्ष की आयु तक जा पहुचने का ।

राम मुहम्मद सिंह आजाद

अब सरदार ऊधमसिंह को एक ही बात का इंतजार था कि जल्दी से जल्दी अब चालीस साल का हो जायें और अपने मन की मुराद पूरी करें।

ज्यों ज्यों वह तंतीस वर्ष की अवस्था तक पहुंचे उन्हें ज्योतिषी की कही हुई बात याद आती जाती। विदेश जाने की प्रबल लालसा बढ़ती जाती।

आखिर एक दिन एक अप्रवासी भारतीय से उनकी मुलाकात हो गयी जो अफ्रीका में लकड़ी का व्यापार करता था और वहां से व्यापार के ही सिलसिले में भारत आया था। बातों ही बातों में उस अप्रवासी भारतीय व्यापारी ने सरदार ऊधमसिंह को यह बतलाया कि उसे एक ईमानदार, मेहनती आदमी की जरूरत है जो कि कोई हिन्दुस्तानी हो तो बहुत उत्तम रहेगा।

अंधा क्या चाहे दो आंखें सरदार ऊधमसिंह को विदेश जाने का इतना सुनहरा और सुलभ अवसर प्राप्त हो रहा था। वह कैसे इसे छोड़ देते। उन्होंने तुरंत उस अप्रवासी भारतीय से यह प्रार्थना की कि वह उन्हें अपने साथ अफ्रीका ले चलें। वह ईमानदार भी हैं और मेहनती भी हैं। उनसे अधिक भरोसेमंद व्यक्ति उन्हें और कहां मिलता।

उस अप्रवासी की भी दिल में यही इच्छा थी। पर वह अपने आप कहने में डर रहा था कि कहीं सरदार ऊधमसिंह मना ना कर बैठें।

पर सरदार ऊधमसिंह तो हर शर्त मानकर भी किसी तरह विदेश यात्रा करना चाहते थे ताकि उनकी बहुत दिन से की गयी भीष्म प्रतिज्ञा पूरी हो सके।

कुछ समय बाद सरदार ऊधमसिंह उस अप्रवासी भारतीय के साथ

अफ्रीका चाना हो गये जहा उस समय बहुत से भारतीय क्रांतिकारी रह रह थे। अपनी यात्रा के दौरान पानी के जहाज में ही कुछ भारतीय क्रांतिकारियो से उनकी भेंट हो गयी। सरदार उधमसिंह जल्दी इन क्रांतिकारियो के सपर्क म आ गय और दक्षिण अफ्रीका म रहकर भारतीय क्रांतिकारियो की पूरी तरह मदद करन लग। इनके साथ वह अग्रेजो के खिलाफ जी भरकर प्रचार का काय करते ।

एक गुप्त रेडियो केंद्र अफ्रीका म काम कर रहा था, जिसके जरिये भारत के क्रांतिकारी अपना मनचाहा प्रसारण करते—खबरें देते लेते और भारत की अग्रेजी सरकार के खिलाफ मनचाहा कुप्रचार करते।

अफ्रीका मे रहते रहते और क्रांतिकारियो की सहायता करते-करत एक दिन एक जरूरी सदेश लेकर अमरीका रवाना हो गये । अमरीका म भी उन दिनो बहुत से क्रांतिकारी सक्रिय थे—जो भारत माता की गुलामी की जजीरें तोडने के लिए अपनी ओर से ही कटिबद्ध थे। अमरीका मे सरदार उधमसिंह ज्यादा दिन रह नही पाये। उनका उद्देश्य अमरीका पहुच कर वहा से सीधे इग्लैंड जाने का था।

पर अमरीका से भी उनका इग्लैंड जाना कोई आसान नही था। यह बात अमरीका पहुच कर, सरदार ऊधमसिंह की समझ मे आ गयी। अमरीका मे कुछ दिन रहकर सरदार उधमसिंह ने फिर अग्रेज सरकार के खिलाफ अपना प्रचार अभियान चलाया। इसके कुछ समय बाद वह फिर दक्षिण अफ्रीका लौट गये जहा से कुछ समय बाद वह दोबारा हिंदुस्तान लौटकर अपने शहर अमतसर जा पहुचे और अमृतसर के घटाघर के पास रहते हुय उन्होने एक दुकान खोल डाली और अपना नाम राममुहमद सिंह आजाद रख लिया जो हिंदू मुस्लिम सिख एकता का प्रतीक था। इस दुकान पर हमेशा भीड बनी रहती थी।

कुछ ही समय के बाद यह दुकान क्रांतिकारियो का सम्मिलन स्थल बन गया। सारा काय ही अग्रेज सरकार के खिलाफ चलने लगा।

यह दुकान क्रांतिकारियो का अड्डा बन गयी। भगत सिंह सुखदेव आदि इसी दुकान के माध्यम से धीरे धीरे सरदार उधमसिंह के सपर्क

मे आने लगे।

पजाब केसरी लाला लाजपतराय, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानद, सरदार भगत सिंह भी इस दुकान पर आने-जाने लगे। इसके साथ स्वामी श्रद्धानद जैसे आर्य नेता का भी स्नेह सरदार ऊधमसिंह को प्राप्त हुआ।

इन बडे-बडे नेताओ के सपर्क और स्नेह ने सरदार ऊधमसिंह को नयी हिम्मत, प्रेरणा दी। जिससे वह और ज्यादा इग्लैड जाने के लिए उतावले होने लगे।

सन् १९२३ मे एक बार फिर उसी लकडी के व्यापारी के साथ सरदार ऊधमसिंह दोबारा अमरीका गये। जहा ऊधमसिंह का कार्य और मेहनत से उक्त व्यापारी को कई गुना अधिक लाभ हुआ। जिससे प्रभावित होकर उस व्यापारी ने उन्हे अपना भागीदार बना लिया और लाभ का काफी बडा हिस्सा उसने सरदार ऊधमसिंह को दिया।

जिसका उपयोग सरदार ऊधमसिंह ने अमरीका मे 'आजाद पार्टी सगठन" बना कर किया। जिसका उद्देश्य अप्रवासी भारतवासियो के बीच भारत की आजादी का प्रचार करना था। यही रहकर ऊधमसिंह ने अपना रिवाल्वर चलाने का अभ्यास प्रारभ किया जिसके साथ उनका जन्म जिदगी का साथ था।

तभी अचानक एक दिन नोट छापने की मशीन 'आजाद पार्टी सगठन' के कब्जे मे आ गयी। जिसको अपने तकनीकी स्वभाव के कारण सरदार ऊधमसिंह ने पूरा खोल डाला। इस मशीन को बनाने का उन्होने बहुत अच्छा अभ्यास कर लिया। वह इस मशीन का कुछ उपयोग कर पाते कि भारत से सरदार भगतसिंह का बुलावा आ गया और सरदार ऊधमसिंह फिर वापिस भारत आ पहुचे।

दो अमर शहीद जेल मे

हिंदुस्तान वापिस लौटकर सरदार ऊधमसिंह फिर क्रांतिकारी गतिविधि मे सहयोग देने लगे। जिस कारण उनका बाहरी रूप अंग्रेज सरकार और पुलिस की निगाहो मे चढ गये। जिसका नतीजा यह हुआ कि अब उनकी हर गतिविधि पर सी० आई० डी० व पुलिस की निगाह पडने लगी। हर समय सी० आई० डी० उनकी निगरानी करने लगी। उनका हर पत्र, सरकार पहले ही खोल डालती। उनकी हरकत को बारीकी से परखा जाता।

आखिर मे अंग्रेज सरकार ने, सन् १९२८ के आसपास एक झूठे मुकदमे में जो शस्त्रसहिता पर आधारित था मे सरदार ऊधमसिंह को गिरफ्तार कर लिया और चद दिन बाद झूठा मुकदमा चलाकर चार वष का कठोर कारावास दे दिया गया। लाहौर मे स्थित लाहौर स्पेशल जेल मे भेज दिया। इस समय ही अमर शहीद सरदार भगत सिंह को भी पुलिस ने बम बनाने के कारण बद कर दिया था। सरदार भगतसिंह को लाहौर की सेंट्रल जेल मे बद रखा गया था। कुछ इतिहासविदो के अनुसार लाहौर सेंट्रल जेल मे ही सरदार भगत सिंह के साथ ही सरदार ऊधमसिंह को भी बद रखा गया था एव २३ माच १९३१ के दिन तक, जिस दिन सरदार भगत सिंह का फासी की सजा दी गयी थी। वह घायल शेर की भाति पिंजरे मे कद थे। सन् १९३२ मे उन्हे मुलतान जेल मे भेजा गया था जहा सन् १९३३ म ही उन्हे रिहा किया गया। कुछ दिनो बाद उन्होने अमृतसर म एक दुकान खोली जिस पर उनका नाम राममोहम्मद सिंह आजाद लिखा था।

सन् १९३३ मे जेल से रिहा हाते ही कुछ दिन तक सरदार ऊधम-सिंह एक सीधे साधे नागरिक की तरह रहे। चुपचाप अपनी दुकान चलाते रहे।

फिर एक दिन उन्हे अचानक लगने लगा कि उनका जन्म इस तरह अपना जीवन काटने के लिए नही हुआ है। साधारणतया जावन-यापन करना तो साधारण मनुष्यो का काय है। इस तरह जीते जी मर जाना शेरसिह जसे व्यक्ति का काय नही है। शेरसिह जसे जिस व्यक्ति के मा बाप, बचपन मे ही भगवान को प्यारे हो गये थे। पूरा बचपन अनाथ आश्रम मे बीता। जहा बहुत मेहनत करने के कारण उनका नाम शेरसिह से उधमसिह पडा जो आगे चलकर उधमसिह हो गया।

यही उधमसिह जिसका बचपन से लेकर यौवन तक का हिस्सा उधम करके बीता था। वह इस तरह साधारण जीवन बिताय। जावन-यापन करके पेट पालना तो साधारण मानव का स्वभाव था। पर सरदार उधमसिह तो असाधारण मानव थे।

एक दिन उन्हे कही से जाली पासपोट बनवान का सूत्र मिला सरदार उधमसिह ने तुरत अपना एक जाली पासपाट बनवाया। अपनी सारी जमापूजी इक्ट्ठी की और राता रात यूरोप रवाना हो गये। जहा सबसे पहला पडाव जमनी मे डाला । फिर कुछ दिन रहकर रूस चले गए। रूस के विभिन्न प्राता म घूमते रह। इसके बाद फिर लौटकर जमनी आ गये जहा से अबकी उन्हान अपना अस्थाई स्थान जमनी का सुप्रसिद्ध शहर बर्लिन बनाया।

पर बर्लिन मे रहकर कुछ दिन कामकाज करन के बाद अब इग्लड पहुचने का निश्चय कर लिया।

आखिर इच्छा पूरी हुई

होनहार युवको को कौन रोक पाता है कौन रोक पाया है इन्द्र-धनुष बाहो मे कौन रोक पाया है समुन्दर बीच राहो मे । इसी तरह अपनी भीष्म प्रतिज्ञा पर कटिबद्ध इस होनहार युवक को कौन रोक पाता जिसका नाम ही ऊधमसिह था ।

सन् १६३३ के किसी माह मे सरदार ऊधमसिह लदन जा पहुचे । अपनी दिली इच्छा मन मे छिपाकर उन्होने एक इजीनियरिंग कालेज मे एडमीशन ले लिया । उन्होन लदन मे अपना नाम उदेसिह रख लिया ।

कुछ दिन तक उदेसिह से शेरसिह बन गए और कुछ दिन बाद अपना नाम फ्रैंक वजिल रखकर फ्रासीसी नागरिक की भाति जीवन यापन करने लगे । हिन्दुस्तानियो के लिए हमेशा उनका एक ही नाम था राम मोहम्मद सिह आजाद ।

जलियावाला बाग की वह खूनी घटना, वह आज तक नही भूले थे । जिस कारण उनका खून उबलने लगता था । आखिर एक दिन उनके हाथ एक पिस्तौल लग गयी । गोली चलाने और निशाना लगाने का प्रशिक्षण वह काफी समय पूव ले ही चुके थे । अब सरदार ऊधम सिह रोज पिस्तौल साफ करते व मौका तलाशने लगे कि कब लाड जेट लेण्ड और सर ओ डायर एक साथ मिलें और वह उनका काम तमाम कर डालें ।

एक रास्ता और भी यह था जब मौका हो, तब लाड जेट लैंड और सर माइकल ओ डायर के घर के अन्दर घुसकर जान से मार डाला जाए । पर सरदार ऊधमसिह को यह काय बहुत ज्यादा अनतिक लगा और चारो जैसा लगा ।

उन दिनो सर माइकल ओ डायर हिन्दुस्तानी विरोधियो मे अपने

आपका प्रथम पक्ति मे समझने लग थे। वह हर सभा म जाते और हिन्दुस्तानियो के खिलाफ जबरदस्त जहर उगलते।

प्रतीक्षारत रहते हुए सरदार ऊधमसिंह न तय कर लिया था कि किसी सावजनिक स्थान पर माईकल आ डायर को मौत की सजा दी जाये।

अवसर की तलाश मे रहते हुए सरदार ऊधमसिंह का लदन मे रहत हुए सात साल हा गए। १९४० का साल आ गया। सरदार ऊधमसिंह बराबर सर माईकल ओ डायर का पीछा करते रहे।

आखिर इन्तजार का वक्त समाप्त हो गया। लदन के अखबारा मे समाचार छपा कि १३ माच १९४० को लदन के कक्सटन हाल म रायल सेंटल एशियन सोसायटी और ईस्ट इण्डिया एसोसियन सासायटी द्वारा अफगानिस्तान के सम्बघ मे एक समिनार का आयोजन किया गया है जिसमे लाड जेट लैण्ड और सर माईकल ओ डायर भाषण देंग।

सर माईकल ओ डायर और ब्रिग्रेडियर जनरल सर पी सक्स पूर्वी देशो के विशेषज्ञा के तौर पर इस सभा मे उपस्थित होने वाले थ।

सरदार ऊधमसिंह को यह अवसर एक स्वण अवसर की तरह लगा। उन्होंने उसी दिन लाड जेट लेण्ड व सर माईकल ओ डायर का मौत के घाट उतारने का निश्चय कर डाला।

सारी रात वह भरपूर नींद सोये। सुबह जब उठे ता तरोताजा थे। बहुत प्रसन्नचित्त थे।

लदन के कक्सटन हाल मे सन १९४० के १३ माच का बहुत अधिक भीड इकट्ठी हो गयी। उन दिनो सर माइकल आ डायर के भारत विरोधी भाषणो की बहुत धूम थी।

नियत समय पर लाड जेट लेण्ड, सर माईकल आ डायर और ब्रिगेडियर जनरल सर पी सक्स कैक्सटन हाल में आ गए। सरदार ऊधमसिंह एक वकील की वेषभूषा मे नियत समय मे कक्सटन हाल मे आय उनके बायें हाथ म कानून की मोटी मोटी पुस्तकें थी। इन पुस्तका के बाच ही उनकी पिस्तौल थी जा पूरी तरह से कारतूसा से लस था। सरदार ऊधमसिंह सामने की पाच छह पक्तियो म बठ गए। सरदार

ऊधमसिंह पूरी तरह शात मुद्रा मे थे। किसी प्रकार की उत्तेजना उनके चेहरे पर लक्षित नही हो पा रही थी।

लार्ड सर जेटलेण्ड इस सेमिनार के अध्यक्ष थे। उन्होने इस सेमिनार का विधिवत उदघाटन किया और औपचारिक रूप से चार पाच मिनट बोलकर अपने स्थान पर जा बैठे। इसके बाद सर माईकल ओ डायर का बोलने के लिए आमन्त्रित किया गया।

सर माईकल ओ डायर मच पर आए और उन्होंने अपना भाषण प्रारम्भ किया। भाषण का विषय अफगानिस्तान था। जिस पर से बोलते-बोलते अचानक सर माईकल ओ डायर हट गये और धीरे-धीरे भारत विरोध के अपने प्रिय विषय पर आ गए। भारत विरोधी भाषण देते हुए—सर माईकल ओ डायर बहुत ही जाश मे आ गए और कहने लगे कि अग्रेजी शासन को अपनी भारत विरोधी नीति और कडी कर देनी चाहिए। भारत की जनता को बुरी तरह कुचल देना चाहिए। ब्रिटिश शासन को अपनी नीति और कडी कर देनी चाहिए। इस तरह सर माईकल ओ डायर अपनी आदत के अनुसार भारत के खिलाफ पूरी तरह जहर उगलते रहे।

अपना भाषण समाप्त कर सर माईकल ओ डायर धन्यवाद देने के लिए ब्रिगेडियर जनरल सर पी सेक्स की ओर मुडे।

तभी सामने की पक्तियो मे, पाच छह पक्ति दूर बैठे, वकील की पोशाक मे सुसज्जित सरदार ऊधमसिंह उठे उन्होने अपने हाथ मे थमी कानून की किताबो के बीच में से भरी हुई पिस्तौल निकाली और सर माईकल ओ डायर की ओर तानकर ट्रिगर दबा दिया। धाय, धाय करते-करते तीन गोलिया ने सर माईकल ओ डायर के प्राण-पखेरू ले लिए।

इसके बाद भी सर ऊधमसिंह की पिस्तौल से उगली नही हटी उनका अगला निशाना लार्ड जेटलैण्ड, लार्ड लिमिंटन, सर ले ड्यूसन को भी गोलिया लगी। सरदार ऊधमसिंह अपनी पूरी पिस्तौल खाली करके ही माने। उस समय भी वह पूरी तरह शात थे। उस समय केवल शाम के साढे चार ही बजे थे।

सारे हाल मे सन्नाटा छा गया, बाद मे होश आते ही कई व्यक्ति इधर से उधर भागने लगे। ऊधमसिंह चाहते तो आराम से भाग सकते थे पर उन्होने उतनी ही हिम्मत से कहा मैंने माईकल ओ डायर को मार दिया है अब किसी को भागने की और डरने की जरूरत नहीं है।

कुछ व्यक्तियो के अनुसार सरदार ऊधमसिंह ने इसके बाद अपने आपको पुलिस के हवाले कर दिया। पर कुछ व्यक्तियो के अनुसार इस वक्तव्य के बाद सरदार ऊधमसिंह ने निडर होकर पिस्तौल हाथ मे ही लिए सीधे दरवाजे के सामने से निकलने लगे तभी एक अंग्रेज महिला ने आगे बढकर उनका रास्ता रोकने की कोशिश की। ऊधमसिंह तुरन्त रुक गए व उन्होने अपनी पिस्तौल वही फेक दी और शात भाव से खडे हो गए। तब अंग्रेजी हवाई सेना के एक सार्जेंट क्लाइवटी ने उनको रास्ता रोककर ही तुरन्त गिरफ्तार कर लिया थोडी देर मे ही ब्रिटिश पुलिस आ गयी और सरदार ऊधमसिह हंसी खुशी पुलिस के साथ चले गए।

मुकदमा

अमर शहीद सरदार ऊधमसिंह द्वारा, जलियावाला बाग हत्याकाड के प्रमुख हत्यारे सर माईकल ओ डायर को गाली से उडाये जाने का समाचार पूरी दुनिया मे बिजली की तरह फैल गया ।

सारे भारत म खुशी और उत्साह की लहर-सी फैल गयी । जनता राता रात अपने घर से बाहर आकर खुशी से नाचने लगी व गाने लगी। इतन साला बाद आखिर यह हत्यारा मारा गया था ।

दूसर दिन सारे ससार के समाचार पत्रो म इस घटना का पूरा वणन प्रकाशित हुआ । जमनी की तत्कालीन सरकार ने अग्रेज सरकार की, भारत मे किए जा रह अत्याचारो की कड़ी निंदा की और ऊधम-सिंह के इस काय को उचित ठहराया । कई उदारवादी अग्रेजा ने भी ऊधमसिंह के इस काय को उचित ठहराया । अमर शहीद ऊधमसिंह जेल मे भी बहुत प्रसन्नचित थे। उनको भविष्य का जरा भी ख्याल नही था । बल्कि इस बात पर बहुत ज्यादा सताप था कि उन्हान अपनी वर्षों की प्रतिज्ञा पूरी कर ली ।

एक दिन जेल मे वह अग्रेज महिला उनसे मिलने आई जिसने कैक्सटन हाल मे गोलिया चलाने के बाद सरदार ऊधमसिंह को हाथ बढाकर रोका था ।

सरदार ऊधमसिंह ने उठकर उस महिला का स्वागत किया । बाता ही बातो मे उस महिला ने पूछा आपने मुझे अपना रास्ता रोकने पर गाली क्यो नही मार दी । उस जगह आपन अपनी पिस्तौल फेंक दी ।

सरदार ऊधमसिंह का जवाब था स्त्रिया, बच्चा, निरपराध आबाल वृद्धा और निहत्थो पर गोलिया अत्याचारी अग्रेज ही चला

सकते हैं। हिन्दुस्तान की आय संस्कृति स्त्री जाति पर वार करने की आज्ञा नहीं देती है। इसलिए मैंने आप पर गोली नहीं चलाई थी। अन्यथा आपको भी मारने लायक गोलियां मेरी पिस्तौल में थी। मैं आपको भी गोली मारकर वहां से निकल सकता था। पर मेरा कार्य पूरा हो चुका था। मैंने मां भारती के उन बेगुनाह सपूतों पर अंग्रेजों द्वारा किए अत्याचारों का बदला लेने के लिए ओ डायर की हत्या की थी। जलियांवाला बाग के शहीदों का तर्पण मैंने कर लिया है। अब मैं इस संसार में रहूं या न रहूं मुझे इस बात का कोई रंज नहीं है। वह अंग्रेज महिला सरदार ऊधमसिंह के इस उत्तर से बहुत ज्यादा प्रभावित हुई। उनकी जवांमर्दी व स्त्री जाति के प्रति उनकी सम्मान की अनोखी भावना ने उस महिला को अन्दर तक हिला दिया। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। भरा हुआ हृदय और ऊधमसिंह के प्रति अनोखे सम्मान की भावना के साथ वह अपने घर लौटी। एक अंग्रेज महिला द्वारा एक काले हिन्दुस्तानी के लिए स्नेह और सम्मान की यह भावना उल्लेखनीय विषय है। सच बात यह है कि सम्मान व स्नेह, जाति, धर्म व सम्प्रदाय और देश और परदेश सबसे सर्वोपरि है।

२ अप्रैल १९४० को ही सरदार ऊधमसिंह को लंदन की एक अदालत के सामने पेश किया गया, उनके वकील श्री वी० के० कृष्ण मेनन थे। सरदार ऊधमसिंह प्रसन्नचित थे।

सरदार ऊधमसिंह ने अदालत के सामने कहा 'वह शासक अत्याचारी है जो अपनी इच्छा के अतिरिक्त कोई नियम कानून नहीं जानता। मैंने अंग्रेजों के शासन के नालदार जूतों के नीचे अपने देशवासियों को कुचलते जाते देखा है। मैंने उसका विरोध अपने ढंग से नहीं किया है। जो कुछ मैंने किया है उसका कोई दुःख मुझे नहीं है। मेरे मन में इस बात के लिए जरा भी भय नहीं है कि आप मुझे फांसी देंगे या क्षमा देंगे। मौत का भय तो मेरे मन से उस समय ही हट गया था जब बीस वर्ष पूर्व जलियांवाला बाग में हजारों बेगुनाह भारतवासियों को शहीद होते देखा था। बुढ़ापे तक लड़खड़ाते हुए जीने का कोई अर्थ नहीं होता है। अपनी मातृभूमि के लिए जवानी में ही मर जाना कहीं

बेह्तर है। आज मैं बहुत खुश हू क्योंकि मेरा बीस साल पुराना प्रण पूरा हो गया है। भारतवासी अब जाग चुके हैं। अंग्रेजो को ही भारत भूमि से हटना पडेगा। मैं अंग्रेजो की इस अदालत से किसी प्रकार की दया या कृपा नही चाहता हू। तुम जितना कठोर दण्ड दे सकते हो दो, मैं हसते हुए हर्ष के साथ उसे स्वीकार करूगा।

मैं जानता हू कि अंग्रेज मुझे फासी की सजा देंगे। पर यह सोच-मुझे हसी आती है। क्योकि अंग्रेजो ने लाखो नौजवान बेगुनाह भारत-वासियो को मारा है। लेकिन इन मारने वाले अंग्रेजो को फासी नही दी गयी। मैंने एक ऐसे बूढे अंग्रेज को मारा है जिसने मेरे देश के सकडो नौजवान बच्चो को बेगुनाह मरवा दिया। उसने और उसके साथियो ने इन हत्याओ के लिए जीवन मे कभी माफी नही मागी। अंग्रेजो ने ऐसे हत्यारो को एक मिनट की भी सजा नही दी बल्कि उनके राक्षसी काम की तारीफ की गयी, उन्हें इनाम दी गयी, विशेष पेंशन दी गयी। यह कारनामा बडी ही न्यायप्रिय प्रबुद्ध अंग्रेज जाति का है। यह कितना बडा अंधेर है, कितना बडा जुल्म है, किस प्रकार का विचित्र न्याय है।

देश के लिए जवानी मे मर जाना बहुत अच्छा है। मैं भारतमाता के माथे पर लगे कलक को धोकर अपने लक्ष्य की पूर्ति कर चुका हू। मैं इस अपना सौभाग्य मानता हू। मेरा शरीर इस देश की मिट्टी से बना है। इसलिए इस पर अपनी जान कुर्बान कर मैं बहुत प्रसन्न हू। मुझे बहुत ही गर्व है। मेरे नाम के साथ रहम शब्द का प्रयोग करना भारत की इज्जत व हमारी कौम पर कलक है। मेरे जीवन का लक्ष्य है—क्राति, वह क्राति जो मेरे प्यारे देश को आजादी दिला सके। मेरे देशवासियों, अपने प्यारे वतन मे अपनी आजादी के लिए आखिरी दम तक सघर्ष करना। कोई विदेशी ताकत मेरे देश को कभी गुलाम ना बना सके।

मैंने यह हत्या इसलिए की है कि मुझे इस इसान से सख्त नफरत है। उसे जो सजा मिली वह इसी काबिल था। मैं जवान मौत मरना

चाहता हू, बूढा होकर या अपाहिज होकर मरने से क्या लाभ है। क्या लार्ड जेटलैंड भी मर गए है। उनको भी जरूर मरना चाहिए। मैंने उनके शरीर में सीधी गोलिया चलाई थी।"

न्यायाधीश द्वारा नाम पूछे जाने पर ऊधमसिंह ने जवाब दिया—"मेरा नाम ऊधमसिंह नही है। मेरा नाम राम मोहम्मद सिंह आजाद है। राम शब्द का प्रयोग हिन्दू के लिए, मोहम्मद का मुसलमान के लिए, सिंह सिख के लिए, आजाद अपने देश के लिए।"

ऊधमसिंह ने अदालत के सामने आगे कहा कि मैं किसी भी प्रकार की सजा भुगतने के लिए तयार हू। चाहे वह सजा १० वष की हो चाहे २० वष या ५० साल की या फिर सजा ए मौत ही क्या ना हो।

इग्लैंड की पुरानी बेरी कोट (ओल्ड बेरी कोट) न सरदार ऊधमसिंह को मृत्युदड की सजा दे डाली। इसी अदालत ने ३१ वष पूव अमर क्रान्तिकारी मदनलाल धींगडा को फासी की सजा दी थी, जिन्होंने सर कजन वायली की हत्या इसी प्रकार खुले आम बहादुरी स की थी। उसी स प्रेरणा पाकर सरदार ऊधमसिंह न यह कटकपूण माग अपनाया था।

जेल से फासी तक

सरदार ऊधमसिंह को फासी की तिथि निश्चित होने तक के लिए लदन की ब्रिक्सटन जेल मे कैद कर दिया गया।

जेल के बाहर, हिदुस्तान म और अन्य स्थानो पर उन्ह छोडे जाने के लिए आदोलन होने लगे। कानूनी तौर पर, सरदार ऊधमसिंह को जेल से और सजा से मुक्त कराने के प्रयास होने लगे, जिसका जिक्र ससार के सारे अखबारो म होने लगा।

सरदार ऊधमसिंह को जब सजा माफ कराने की कोशिशो का पता चला तो उन्होंने अपने मित्रो को पत्र लिखा कि उन्ह सजा से बचाने के लिए धन व्यय ना किया जाए। बल्कि उन्ह हिदी, उर्दू और पजाबी की कुछ पुस्तकें भेज दी जाए। जो साहित्य इतिहास से सबधित हो तो अति उत्तम होगा।

जेल मे सरदार ऊधमसिंह को कोई कैदी कह कर पुकारता तो वह भडक जाते। सरदार ऊधमसिंह कहते मैं इस जेल मे कैदी नहीं हू बल्कि मैं ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया का शाही महमान हू। वह मेरे आराम का बहुत ख्याल रखती है। १५ मार्च १९४० को अपने एक मित्र को लिखे पत्र मे उन्होंने स्पष्ट लिखा मैं यहा एक कैदी नहीं हू। मैं तो इग्लैंड की महारानी का शाही महमान हू। कृपा कर मुझे यहा व्यस्त रखने के लिए कुछ किताबें शीघ्र भेज दें। मेरे पास यहा समय है और जिस जेल मे मुझको कैद किया गया है वह बहुत ही आरामदायक है। लेकिन मैं इससे भी किसी अधिक आरामदायक स्थान की तलाश मे हू। यदि आपको सुविधा हो तो मेरी कही गयी किताबें शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें। किताबें उर्दू और गुरमुखी मे हो। धार्मिक विषयो पर कोई पुस्तकें ना हो। पुस्तकें शीघ्र ही डाक से भेज

दें। मैं धार्मिक पुस्तकों पर विश्वास नहीं करता हूं। मुझे पक्का विश्वास था कि सरदार मोहनसिंह से कुछ किताबें अवश्य मिल जाएगी। पर वह इंग्लैंड से वापिस चले गए हैं। उनकी जगह कौन-सा ग्रंथी यहा आया है इसका मुझे पता नही है।

मेरे लिए यहा काफी अच्छी सुरक्षा व्यवस्था है। बहुत से अंगरक्षक मुझे मिले हुए हैं। मेरी अच्छी देखभाल यहा की जा रही है। मुझे पक्का विश्वास है और मेरी यह इच्छा भी है कि मैं इस मत्युदंड के बाद शीघ्र जन्म लूं। पर जब तुम सब लोग काफी बूढ़े हो चुके होगे। मैंने काफी इंतजार के बाद यह फल पाया है। म अपना पत्र हिंदुस्तानी म इसलिए लिख रहा हूं ताकि आप मेरी जरूरतें अच्छी तरह समझ जायें। किताबों के अलावा कुछ भारतीय अखबार भी मिल जायें तो बहुत बेहतर है।

पत्र के अन्त म दर्ज था कि एक सज्जन मुझे यहा रोज दर्शन आते हैं। ये भारत के किसी सांस्कृतिक दल के प्रमुख हैं और मेरा विश्वास ईसाई धर्म की ओर मोड़ना चाहते हैं। मुझे पक्का पता है कि वह अपना समय व्यर्थ नष्ट कर रहे हैं। मैंने यहां की एक मस्जिद के मौलवी को पत्र लिखकर कुरान की एक प्रति मंगवाई है। म कुरान का अध्ययन करना चाहता हूं। पर मुझे कुरान की प्रति प्राप्त होगी या नही इसका मुझे विश्वास नहीं है। मैं इसका कभी बुरा नहीं मानूंगा, मैं तो आज भी मुहम्मद सिंह हूं।

ऊधमसिंह को ब्रिक्सटन जेल म कैदी नं० १०१० के रूप म पहचाना जाता था। ३१ मार्च १९४० को ओटालसिंह का उन्होंने एक पत्र लिखा "मैं आपको पुस्तकें वापिस लौटा रहा हूं। आपकी बड़ी कृपा रही जो आपने ये पुस्तकें मुझे वापिस भेजी। इन किताबों के सहारे मेरे दिन अच्छी प्रकार कट गए। क्या आप मुझे कुछ और पुस्तकें भेजने का कष्ट उठायेंगे। मेरा वजन यहां आकर ५ पौंड बढ़ गया है। मुझे यह भी ज्ञात है कि बहुत से भारतीय मेरे खिलाफ हैं पर मुझे इस बात की कतई परवाह नहीं है। मैं इस बात से जरा भी शर्मिंदा नहीं हूं कि फांसी का फन्दा मेरा इंतजार कर रहा है। मुझे इस बात का जरा भी

गम नहीं है कि मैं जल्दी ही मर जाऊगा। मैं ता फासी के फद से अपना ब्याह रचाऊगा। मैं तो अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए लडन वाला एक अदना-सा सैनिक हू।

अपने मित्र शहीद भगतसिंह का हवाला देते हुए सरदार ऊधमसिंह ने आगे कहा करीब १० साल पूव मरे मित्र मुझसे बिछड गय थे। और मुझे पूरा विश्वास है कि मौत के बाद मेरी उनसे मुलाकात होगी। वे वहा इतजार कर रहे होंगे। वह २३ माच का दिन था मुझे विश्वास है मुझे भी इसी तारीख पर फासी पर लटकाया जाएगा।

इस पत्र म भी उन्होंने अपनी सजा माफ करने वाले मित्रा को इस काम से रोका व आगे लिखा यदि आपका पता चल जाय, तो मेरी मदद करने वाले इन व्यक्तिया का वसा करने से मना कर दे। मुझे बडी ही प्रसन्नता होगी कि इस धनराशि का उपयाग मुझे बचान की बजाय भारत मे शिक्षा प्रचार के लिए किया जाएगा।

अपने अन्तिम पत्र मे ऊधमसिंह ने शिकायत की थी कि उनके मित्रा द्वारा जो पुस्तकें उन्हे भेजी गयी वे पुस्तकें जेल के अधीक्षक द्वारा उन्हे नही दी गयी। ऊधमसिंह के शब्दा मे जेल का अधीक्षक बहुत सख्त आदमी है। हर पाचवे मिनट मे उनका दिमाग बदल जाता है। उसने तमाम कदियो का अपनी धार्मिक पुस्तकें पढने की अनुमति दी हुई है। वे बच भी जाते ह। लेकिन अग्रेजो की इस जेल मे मै पहला आदमी हू। जिसके साथ बुरा सलूक किया जाता है। मुझे मालूम है कि वह मुझस सख्त नफरत करता है। लेकिन उनकी परवाह कौन करता है। मैंने इन जसे शरीफ आदमी बहुत देखे ह। मैं यह जानता हू कि धार्मिक पुस्तकें बिना स्नान किय नही पढनी चाहिए। यहा तो मुझे १० दिन बाद स्नान करने की सुविधा दी जाती है। मुझे अत्यन्त खेद है कि मैंने व्यथ आपका पुस्तकें भेजने के लिए लिखा और डाक म इतना पसा व्यथ गया। मैं अदालत से यह पूछगा कि क्या ऐसी धार्मिक पुस्तकें जेल मे पढना अपराध है।

ब्रिक्स्टन जेल से सरदार ऊधमसिंह को पेन्टोनविले जेल भेजा गया। जहा उन्हें ३१ जुलाई १९४० को फासी देने का निणय दिया गया।

३१ जुलाई १६४० को ऊधमसिह को फासी के फदे तक लाया गया। सरदार ऊधमसिह नहा धोकर वेद मन्त्रा का उच्चारण करते हुए फासी के फदे तक आये। वेद मन्त्रो का उच्चारण करते हुए सरदार ऊधमसिह ने अपने गले मे फासी का फदा डाला और अपने प्राण त्यागत समय उनके मुह से ओम शान्ति, ओम शाति का जाप निकल रहा था।

सरदार ऊधमसिह का शव भी इग्लैंड म ही गुप्त रूप से वही दफना दिया गया। पजाब सरकार और केन्द्रीय सरकार के सयुक्त प्रयासो से शहीद ऊधमसिह के अवशेष १६७४ म १६ जुलाई को लाए गय। जो दिल्ली से चडीगढ होते हुए सुनाम जा पहुचे। वहा ३१ जुलाई १६७४ को सुनाम से हरिद्वार ले जाए गये। जहा उन्हें गगा को समर्पित कर दिया गया। २४ साल बाद शहीद सरदार ऊधमसिह को अपने देश की मिट्टी का और पवित्र जन्मभूमि का स्पश प्राप्त हुआ।

OOO

जयशकर प्रसाद का साहित्य

प्रसाद ग्रथावली ४ भाग

खड १ (काव्य)
खड २ (नाटक)
खड ३ (उपन्यास)
खड ४ (कहानी निबन्ध)

काव्य

कामायनी
आसू तथा अन्य कविताए

उपन्यास

कंकाल
तितली
इरावती

नाटक

चन्द्रगुप्त
स्कन्दगुप्त
अजातशत्रु
कामना
ध्रुवस्वामिनी तथा अन्य नाटक
जनमजय का नागयज्ञ

कहानी सग्रह

छाया/प्रतिध्वनि
इंद्रजाल
आकाशदीप
आंधी

निबन्ध

काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध

बकिमचद्र चट्टोपाध्याय का साहित्य

आनन्दमठ
देवी चौधरानी
सीताराम
रजनी
कपालकुडला
दुर्गेशनंदिनी
कृष्णकात का वसीयतनामा

शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय का साहित्य

कमला
काशीनाथ
गृहदाह
चन्द्रनाथ
चरित्रहीन
दत्ता
देना-पावना
देवदास
देहाती समाज
पंडित जी
पथ के दावेदार
परिणीता
बिराज बहू
बैकुंठ का वसीयतनामा
ब्राह्मण की बेटी
मझली दीदी
विप्रदास
शेष परिचय
शेष प्रश्न
श्रीकांत

देवकीनंदन खत्री के जासूसी उपन्यास

चन्द्रकान्ता संतति (सम्पूर्ण २४ भाग) छः जिल्द में
चन्द्रकान्ता (चारों भाग एक जिल्द में)

महाभारत के अमर पात्र

प्रस्तुति विनय

कर्ण
गांधारी
युधिष्ठिर
कुंती
विदुर
शकुनि
द्रुपद
अर्जुन
श्रीकृष्ण
द्रौपदी
भीष्म पितामह
दुर्योधन
भीम
धृतराष्ट्र